WWW.VIDEHA.CO.IN

Videha 375

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑓓𑓗𑓕 𑒧 𑒁𑓀𑒏 𑓐𑓑 𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑓒𑓐𑓒𑓓 (𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓑𑓖 𑒧𑒰𑒮 𑓑𑓘𑓘 𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓗𑓕)
𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓗𑓕 (𑓗𑓕 *𑓕)-𑓐𑓑 𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑓒𑓐𑓒𑓓

विदेह ३७५ म अंक ०१ अगस्त २०२३ (वर्ष १६ मास १८८ अंक ३७५)
विदेह अंक ३७५ (७५ *५)-०१ अगस्त २०२३

WWW.VIDEHA.CO.IN

VIDEHA 375

VIDEHA 375



VIDEHA 375



VIDEHA 375

WWW.VIDEHA.CO.IN

WWW.VIDEHA.CO.IN

ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह ३१७ म अंक ०१ अगस्त २०२३ (वर्ष १६ मास १८८ अंक ३१७)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

(c) २०००- २०२३. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत* wayback machine of *https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c)२०००- २०२३. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com कैं मेल अटैचमेण्टक रूपमँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ई सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ ओकर वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ई सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ई सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/
These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Videha e-Journal: Issue No. 375 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ ***(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)***

माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

----

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

२.३.परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

२.४.सुभाष कुमार राय 'वटोही'-मंगरौना (ऐतिहासिक उपन्यास)-(चौदहम खण्ड)

२.५.कुमार मनोज कश्यप-अपूर्व स्वाद

२.६.आचार्य रामानन्द मण्डल-वाल्मीकि रामायण आ रामचरितमानस क तुलनात्मक अध्ययन

२.७.लालदेव कामत-लालदेव कामत- आंचलिक उपन्यास "हाट" माद/ सर्वश्री राजकिशोर मिश्र जीक - स्मृती/ एक अध्याय पथक पथिक - स्वर्णिमा सनानी/ जल अछि जा' धनि, जिनगी ता' धनि! / प्रक्रियाधीन सामाजिक परिवर्तन'क स्वर

२.८.लालदेव कामत- राति विसा! (बीहनि कथा)/ जरुर भायब, गरुर कायब! (लघुकथा)

२.९.डॉ कैलाश कुमार मिश्र- सराक कुसुम कामिनी/ ककरा क दुसत

३.४.आचार्य नामानंद मंडल- चीनदुनश/ सावन म नानी



ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয়: শান্তি রনস্পতয়: শান্তির্রিশ্বে দেরা: শান্তির্ব্রঁহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:- जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্রঁহ্মণসঁ প্ৰাৰ্থনা জে দ্যুলোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জলমে, ঔষধমে, রনস্পতিমে, রিশ্বমে, সভ দেরতাগণমে আ ব্রঁহ্মমে শাঁতি

দ্যাখয়।

ওঁ-ব্রহ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যুলোকক বীচ, আপ:-জল, বিশ্বেদেবা- সভ দেবতা, ব্রহ্ম- সর্জক।

ꣳ

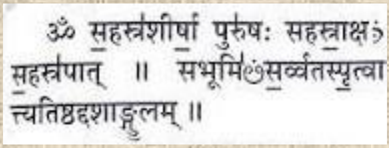
ॐ, स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्।

ওঁ, স↓হস্রা↑শীর্ষা↓ পুরু↑ষঃ। স↓হ↓স্রা↓ক্ষঃ স↓হস্রা↑পাৎ।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

স ভূমিং↑ W বি↓শ্বতো↑ বৃ↓ত্বা। অত্যা↑তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।


ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः सहस्रा॒क्षः
स॒हस्र॑पात् ॥ सभूमि॑ꣳस॒र्व्वतस्पृ॒त्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गु॒लम् ॥

प॒द्भ्याग्ँ॑ शू॒द्रो अ॑जायत॥

প↓দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓দ্রো অ↑জায়ত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिशः॒ श्रोत्राँत्।

প↓দ্ভ্যাঁ ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑৲।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

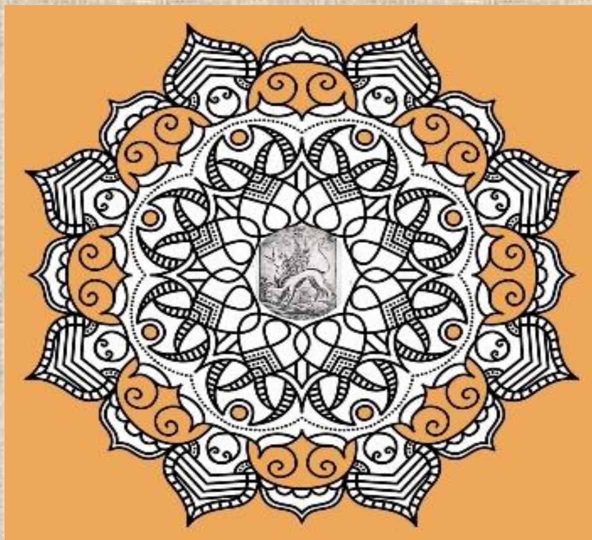
卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিৰস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३७४ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

मैथिलीक पहिल पद्य उपन्यास- बतरान

रामेश्वर प्रसाद मण्डल लऽ कऽ आयल छथि मैथिलीक पहिल पद्य उपन्यास 'बतरान'। ओना तँ खण्डकाव्य आदिम सेहो औपन्यासिकता नहि छै, मुदा ई अखन धरि मैथिलीमे ऐतिहासिक वा महाकाव्य आधारित मात्र रहल अछि।

रंगपुरक जगु आ राशनी कर खिस्सा अछि ई पद्य-उपन्यास। दुनू पढ़ल नहि छला, माय-बाबूक सेवा करै छला। माटिक भीत, माटिक खाम्ह, माटियेक दुआर। बाँसक छड़, बाँसक खिड़की, तिलै काठक आ बाँसक ठाठ। सुन्दर घर।

आ माता-पिताक मृत्यु, मुदा सम्हरल जागु। खेती तर-तरकारीक, माछक बपार।

पहिल बच्चा बौआ 'चन्द प्रकाश'। दोसर बच्चा भेल लड़की 'बच्चा', स्त्रीगणक मुँ बिधुआ गेल मुदा जगु कहलनि- बेटाकेँ स्कूल भेजै छी आ बेटीसँ बकरी चरबै छी, से मांगु मारी। आ ओकर छोड़ियानीयन जगु बासमती चाउर गमगमा दलहि।

हुन माछक बानि हेलहि, पंच सरल बानसँ मीलि गेल। जगु बमान हेला, गरीबीसँ उबार गेला। बाहर निकलला, किस्मत अजमला। गुलाठी गेला, चुठी पैक्रीमे नाकरी रहा गेलनि, मित्र पासक मांग

छल उागऽ, स नीक नम्बनम यास छलाह।

हुन नाशनीक जौंआँ वच्चा 'हन' आ 'निलेश'।

नंगयून गामक हूसनी मउन जगु कँ जमीन वढवैल कहलखिन्ह, यढाऽऽम अनन याऽऽ दुनि नै कनवाक सलाह दलखिन्ह। मूदा गाँधी वावाक कहल कना जगु। अऊन वटीक गहना थिक। वच्चा आ नद स्नातक कलकाह्वि। वच्चाक विवाह हला। नूसल जमायकँ साऽऽकिला दलह्वि, दुटा घन आ शौचालया वनवा दलह्वि।

नद प्रकाश सूझकी कम्यनी आ दन कूमान टाटा कम्यनीम नाकनी यकउलकह्वि। दुनूक ओक्का मउवायन विवाह सम्यन्न हला।

हुन निलेश कूमान वी.टी.उा. वनि शला।

आ उाइन हूसनी मउनक वटा नशवाज वनि शल, दिल्ली यउा शल आ नथासँ विवाह कऽ ललका। हूसनी जगु लग कनै ओला।

नाशनीक मान खनाय हऽ शला। मूदा वटा-यूताहु सह याँच लाखक मदति कलह्वि। याँच लाखक कर्जा चढि शलह्वि, घन वहकीयन नाखऽ यउलह्वि। आ हुन नाकनीसँ जगुक अवकाश हऽ शलह्वि। न नाकनी, आ न घन। स वटा यूताहु कथील नहलाह्वि।

मदा हुनसँ दुनु यनानी अयन काज आगाँ वढलह्वि। जगु खनी शुनु कलह्वि, आ नाशनी का0क जपा वललह्वि। नदक यत्नी नीथा कूमानी मूदा शीलवती-शुणवती। ओइन जगुक हुन निधाना नाम हलह्वि, लाटन

अपन मालिक जगुकेँ खून देलन्हि, लाटन कहलक जे हुनक सभक कृपासँ ओ गिरआक महन्थ बनलक आ दरोगा। पनीओ पास कलक। एम्हर हुनक कम्पनी छुटि गेलै, घूस लेल निलंब सस्पेन्ड भऽ गेल। सभ बेटक अंगना घूसि गेल। जगु पुन बमान भऽ गेल।

एम्हर पंचनक चिट्ठी एलै, जगुकेँ सालहु लाख टाका भेटलै। पुन सभ बच्चा लल जगु पैरवी कलक, टाका देलक, निलंब पुन बी.डी.ओ. बनि गेल, हुनकेँ पुन नाकरी लागि गेल।

जगुकेँ संगी नघू मण्डल मान पठलन्हि, मुदा नघूक बेटा कहलखिन्ह जे ओ हुनका वृद्धाश्रम पठा देलन्हि। जगु नघूक वृद्धाश्रमसँ घूना कऽ लऽ अनलन्हि।

आ पुन नघू बनलन्हि नाभनी सदाव्रत अस्पताल, नंगपुर। गरीब-लाचारक मुफ्त इलाज।

नंगलाल मटनक अत्याचारक खिलाप पंचैती। पुन बहुमानी। मुदा जगु एक लाख रूपैया दऽ धूर्त नंगलालसँ सभनाकेँ बचेलन्हि।

पुन जगु मिथिल स्कूल बनवलन्हि 'जगु जनता मिथिल स्कूल, नंगपुर'। आ ओकरम छल मनोरंजन निराग। आ जना ब्यासजी लेखक रहिगा अपन नचना महाराजानाम प्रवेश करै छथि गदिना नामशून प्रसाद मण्डल जे पद्य-उपन्यासम अबै छथि, ओ छथि तायनछान जे मनोरंजन निरागक। पुन सदाव्रत आश्रम खुजल।

आब जगुक धियान बेटी बद्यापन जाइ छन्हि। बेटी जमाय निःसन्तान

𑒩𑒯𑒢𑒱, 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒖𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒦𑒩𑓂𑒞𑒲 𑒦𑒹𑒪 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰, 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒣𑒢𑒱𑒒𑒰𑒧। 𑒍 𑒑𑒩𑓂𑒦𑒫𑒞𑒲 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒳𑒢 𑒥𑒲𑒔𑒧𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒣𑒰𑒥𑒢𑒱𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰, 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒣𑒹𑓀𑒙𑒱𑓀𑒑𑒏 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮।

𑒍 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒒𑒰𑒙𑒣𑒢 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒕𑒾𑒛𑓃𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒰𑒿𑒞𑒲 𑒪𑒑𑒪𑒻। 𑒩𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪, 𑒩𑓀𑒑𑒣𑒴𑒩𑒧𑒹 𑒍 𑒦𑒩𑓂𑒞𑒲 𑒦𑒹𑒪, 𑒋𑒢𑒲𑒧𑒱𑒨𑒰 𑒕𑒪𑒻। 𑒢𑒱𑒪𑒹𑒬𑒏 𑒥𑓂𑒪𑒛𑒑𑓂𑒩𑒳𑒣 𑒧𑒱𑒪𑒪𑒻। 𑒍 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒑𑒳- 𑒢𑒱𑒪𑒹𑒬 𑒥𑒾𑒂/ 𑒂𑒑𑒰𑒿𑒏 𑒡𑒩𑓂𑒧 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒯। 𑒍 𑒢𑒱𑒪𑒹𑒬 𑒥𑒲.𑒛𑒲.𑒍. 𑒏 𑒩𑒼𑒂𑒥 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒱 𑒐𑒴𑒢 𑒠𑒹𑒪𑒏, 𑒖𑒰𑒢 𑒥𑒔𑒪𑒏।

𑒄 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒣𑒘𑓂𑒔𑒧 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒄 𑒁𑒕𑒱 𑒣𑒘𑓂𑒔 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮। 𑒄 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒮𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒖𑒢𑒰𑒧 𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒮𑓀𑒠𑒹𑒬 𑒠𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰𑒮𑒿 𑒣𑒵𑒟𑒏 𑒦𑓄 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒩𑒯𑒱𑒨 𑒢𑒹 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

१.२.अंक ३१४ पर टिप्पणी

कल्पना झा, पटना

विदेहक नवका अंक पढ़लहुँ।

"रामेश्वरम लिंग स्थापना" शीर्षक आलेख मे सामाजिक चिंतक आचार्य रामानंद मंडल जी द्वारा

वाल्मीकि रामायण मे शिव लिंग स्थापना आ रामचरितमानस मे लिंग स्थापना वर्णन मे मतभिन्नताक चर्चा नीक लागल।

डॉ दीपेश कुमार ठाकुरक "मिथिलाक इतिहासक वैज्ञानिक अध्ययन एवं तकर समीक्षात्मक विश्लेषण" शीर्षक सँ शोध पत्र पढ़लहुँ, नीक

लागल। ज्ञानवर्धक शोधपत्र छनि,निस्संदेह। मुदा शीर्षक देखि,ओहि सँ नीक शोध पत्रक आस मे पढ़ब शुरू कएने छलहुँ।

प्रोफेसर नाइजल गैरान कएल गेल शोध पत्र मे, मुगल शासन आ महेश ठाकुर,जॉर्ज ग्रियर्सन आ मैथिली भाषा,मिथिलासँ बौद्धिक पलायन,स्वतंत्रता आंदोलनमे मिथिलाक योगदान,दहेज प्रथा,मिथिलाक विशिष्ट व्यंजन माछ,मैथिली भाषा आ मिथिलाक सन महत्वपूर्ण विषय पर लिखलनि अछि लेखक।

किछु नव जनतब सेहो भेटल। जेना साओन मासक कृष्ण पक्ष प्रतिपदा सँ मिथिला पंचांगक प्रारम्भ किएक होइत अछि,ओहि बात सँ हम अनभिज्ञ छलहुँ,जे ओहि शोध पत्र सँ बुझलहुँ। देखल जाए,"भारतमे शक संवत्,विक्रम संवत् आ हिजरी सनक चलनसारि तँ अछिए मुदा विशाल भारत देशमे नववर्षक लेल भिन्न-भिन्न तिथि अछि। मिथिलाक पंचांगक अनुसार सालक प्रथम दिन अछि साओन मासक कृष्ण पक्षक प्रतिपदा। एकर कारण अछि मुगल सल्तनत शासन बादशाह अकबर द्वारा महेश ठाकुर के मिथिलाक कर-प्रशासन साओन मासमे देल गेल रहैक। एकर ऐतिहासिकता केँ दर्शबैत लेखक कहैत छथि जे भनहि अनजानहिमे, मिथिला-पंचांगक संबंध पैगंबर मोहम्मदक मक्कासँ मदीना जएबाक साल आ अकबर के राज्यारोहणक साल सँ जुड़ल अछि।"

छोट मुह,पैघ बात क' रहल छी,मुदा जे हमरा बुझाएल से कहब

आवश्यक नै! किछु किछु छूटल सन लागल हमरा। मिथिलाक इतिहास म,मिथिलाक लोककला,लोकगीत, लोकनृत्य,पावनि-तिहार,बहुत किछु संलग्न कएल जेबाक चाही छल।

कोनहु कोनहु विषय सँ हटकाय सेहो देखाएल। जेना- दहेज प्रथा वला प्रकरण म सत्यनारायण भगवानक पूजा आ छठि पूजाक चर्चा। दहेज प्रथाक प्रचलन कोना आ कहिया शुरू भेल,एकर दुष्प्रभाव समाज पर,तकर संदर्भ चर्चा नहि।

विवाह संबंधी आन समस्या,जेना बाल विवाह, बहु विवाह,विधवा विवाह किंवा मुगल काल म बालिका/स्त्रीक असुरक्षा वला स्थिति जे छलए, तकर संदर्भ चर्चा छूटल छनि।

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (लेखक गजेन्द्र ठाकुर) जेना मे बाढ़ि सम्बन्धित पोथी पर आधारित अछि,तथापि रोचक सेहो अछि। ज्ञानवर्धक मे सहजहि।

"कृषि एखन उद्यम अछि जकर राजगारक अधिकतम संभावना अछि। मुदा जँ कोना तकरा खेती-बाड़ी ठीक भ' जाय मुदा कतेको लोक जमीनसँ हटि जायत आ हुनकर छतयन रोटी कनक कम भ' जायत।" यदि लागुक ह' गेलहुँ। भगवान करथि,एखन दिन आबए।

नित नवल सुशील (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)पढ़ब शुरू कएलहुँ, मुदा खाएब

पीअब छाति पुना पढ़िए क' उठलहुँ।

अगिला अंकक प्रतीक्षा रहत।

ध्यान पंकज झा पराशर क step by step देखाब करब सेहो नाचक

सहस्रबाढ़नि फिनिश कलहुँ दू दिन पहिनहि।

नीक लागल।

लक्ष्मण झा 'सागर'

विदेहक ३७५ अंक। र गुण ना हरिश्चित! माधव कत गान करब बताऊ?

मित्रनाथ झा

प्रियवर ठाकुरजी,सविनय नमस्कार। हम मित्रनाथ, दरिभङ्गासँ। अपने मिथिला,मैथिल आ मैथिलीक समग्र विकास,विशेषतः भाषा-साहित्यक लेल जाहि रूप सँ दत्तचित्त भऽ कऽ विगत कताक दशाब्द सँ समर्पण-भाव सँ बहुमूल्य कार्य करैत रहलहुँ अछि,ओ हमरा दृष्टिएँ श्लाघनीय तँ अछिए, चिरस्मरणीय टा नहि,अविस्मरणीय अछि। हमरा बहुत पहिने एक बेर बहुत काल धरि अपनेक सान्निध्यक सौभाग्य प्राप्त भेल छल। अपनेक मातृभाषाक प्रति एहि प्रकारक उत्कटनीय समर्पण देखिकँ कान गरहुँ अभिभूत छी,तकर समुचित अभिव्यक्तिक लेल गरुण अपनाकँ शब्दहीन पाबि रहल छी। माँ शारदा सँ प्रार्थना करैत छिऐन्हि जे अपनेक लेखनीकँ उत्पादन आर अधिक गतिशीलता प्रदान

𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒁𑒩𑓂𑒖𑒳𑒢-𑒖𑒑𑒞𑒏 '𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮-𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 '𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒧 𑒮𑒳𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒁𑒮𑒲𑒧 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒯 𑒂 𑒁𑒬𑒹𑒭 𑒬𑒳𑒦𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰𑒏 𑒮𑒓𑓂𑒑,𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒢𑒰𑒟, 𑒠𑒩𑒦𑒓𑓂𑒑𑒰।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

२.गद्य खण्ड

२.१.साक्षात्कार: रामानन्द झा सँ उमेश मण्डल द्वारा

२.२.साक्षात्कार: कमला चौधरी सँ उमेश मण्डल द्वारा

२.३.रामानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

२.४.संतोष कुमार राय 'बटोही'-मंगरौना (धारावाहिक उपन्यास)-(चौदहम खण्ड)

२.५.कुमार मनोज कश्यप-अपूर्व स्वाद

२.६.आचार्य रामानन्द मण्डल-वाल्मीकि रामायण आ रामचरितमानस क तुलनात्मक अध्ययन

२.७.लालदेव कामत-लालदेव कामत- आंचलिक उपन्यास "हाट" माद/ सर्वश्री राजकिशोर मिश्र जीक - टमी/ एक अध्याय पथक पथिक - स्वर्णप्रभा सनानी/ जल अछि जा' धरि, जिनगी ता' धरि!/ प्रक्रियाधीन सामाजिक परिवर्तन'क स्वर

२.८.लालदेव कामत- नारक विम्ब! (वीहनि कथा)/ जरून रायव, गरून कारव! (लघुकथा)

२.९.डॉ कैलाश कुमार मिश्र- सनाक कुसुम कामिनी/ ककना क दुसरा

२.१०.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-२४)

२.११.नन्द विलास राय-जाबी

२.१२.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

२.१३.जगदीश प्रसाद मण्डल-धूनरुन्ना लोक(लघुकथा)

२.१४.रवीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि रहल अछि सबकिछु (उपन्यास)-

धारावाहिक

२.१७.डॉ किशन कारीगर- मैथिली लेखनक शुद्ध वर्तनी स्थिति? अवस्था कारण आ समाधान

२.१.साक्षात्कार: योगानन्द झा सँ उमेश मण्डल द्वारा

साक्षात्कार: योगानन्द झा सँ उमेश मण्डल द्वारा



योगानन्द झा

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) http://www.videha.co.in/ लेल श्री योगानन्द झासँ उमेश मण्डल जीक साक्षात्कार।

(1) वर्तमान मैथिली साहित्य कोन दिशामे अछि?

योगानन्द झा : वर्तमान मैथिली साहित्य निरन्तर प्रगति पथपर अछि।

(2) ओना पुनरुत्थान गँ प्रयासक लेल कहल जाइत छै मुदा मैथिलीमे पुनरुत्थान रहितो साहित्यकारक गति प्रायः रुकि जाइत छै। एना किएक?

योगानन्द झा : सर्वथा काल्पनिक अवधारणा। उदाहरणक हेतु पुरना पीढ़ीक आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन', पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', वयसक चतुर्थ प्रहरमे लेखकीय आशासँ दीक्षित श्री केदार नाथ चौधरी आ बचपनहिसँ पत्रकारिता-साहित्यकारिताक प्रतिभा सम्पन्न युगपुरुष विभूति आनन्दकेँ प्रस्तुत कयल जा सकैत छनि।

(3) वर्तमान समयमे मैथिली पत्र-पत्रिकाक की हाल अछि?

योगानन्द झा : नीक नहि, अपन अस्मिता बचएबाक हेतु बेकल।

(4) चेतना समिति एवम् अन्यान्य मैथिली संगठनमे एखनो दलित वर्गक प्रवेश नगण्य छै। एकरा अहाँ कोन रूपमे देखै छिऐ?

योगानन्द झा : दलित के? अर्थसम्पदासँ विपन्न साहित्यकार वा जातीय जनगणनामे तथाकथित दलित? जँ पहिल, तँ प्रकाशन-प्रचारक एहि प्रतियोगी युगमे अर्थसम्पदासँ विपन्न ब्रूपन्ना साहित्यकार सभा-समितिमे उपेक्षित रहबे करताह। जँ अपर, तँ समिति/संगठन बहुधा बाहुबली राजनीतिज्ञ लोकनिक वर्चस्वक संरक्षक होइछ जतऽ साहित्यकारिता महत्त्वपूर्ण नहि। ई मैथिलीटाक दुर्भाग्य।

(5) दरभंगा पी0 जकाँ आब सहरसा पी0 बनि रहल छै। ई मैथिलीक लेल नीक की खराप?

योगानन्द झा : नीक, किएक तँ सभ दिनसँ समानान्तर जाग्रत सहरसा पी0 एखन स्तब्ध भऽ गेल छल, आब मुखरता ग्रहण कऽ रहल अछि।

(6) अहाँक साहित्यिक यात्रामे कोन तत्त्व प्रेरक आ कोन तत्त्व बाधक रहल?

योगानन्द झा : गुरुजनक प्रोत्साहन ओ विनयक निर्देशन आ साहित्यिक

राजनीतिक दुर्गन्धमय वातावरणमे।

(7) वर्तमान साहित्यकारक मूल्यांकन अहाँ केना करए चाहब?

योगानन्द झा : हुनक रससिद्धता, वैचारिकता आ जीवन मीमांसाक सामर्थ्यसँ।

(8) अहाँक प्रिय साहित्यकारकेँ छथि?

योगानन्द झा : एकाधिक, ककर गनावी?

(9) साहित्यकारक लेखकीय विचार आ वास्तविक जीवनक विचार एक हेबाक चाही आकि अलग-अलग? जँ एक हेबाक चाही तँ 'वैद्यनाथ मिश्र यात्री'जीक वैचारिक विचलनकेँ अहाँ कोन रूपमे देखै छिऐ। आ जँ अलग-अलग हेबाक चाही तँ ओहन साहित्य आ साहित्यकारक मूल्य की?

योगानन्द झा : सर्वथा एक। यएह अर्थक्रान्तियनक सारस्वत साधना। यत्रायदशे याचितव्यं।

(10) मैथिल साहित्यकार बहु विधावादी होइत छथि। मुदा जँ अहाँ एक्के विधामे रहितौं तँ ओ कोन विधा होइत?

योगानन्द झा : कविता।

(11) युवासँ की आशा। ओहिम सँ क आगू जा सकै छथि।

: अनन्त विकासक। स समय निर्धारित करत।

(12) अहाँ अपन साहित्यिक यात्राक पड़ाव कतऽ आ कोन रूपेँ देखै छिऐ?

योगानन्द झा : शास्त्रीय कालजयी कृतिक निर्मिति, चाला बदलनासँ यूवी।

(13) पारिवारिक परिचय जनबाक इच्छा अछि।

योगानन्द झा : सामान्य निम्न मध्यवर्गीय कृषि आधारित परिवारमे जन्म भेल आ ओही वर्गीय वृत्तिकेँ निमाहबाक हेतु बाध्य रहलहुँ।

(14) कोन-कोन पत्रिकाक अपने सम्पादक मण्डलमे छलौं ओहिमे की सभ योगदान देने छलौं? ओहि पत्रिका सभक विषयमे जनबाक इच्छा अछि।

योगानन्द झा : 'संकल्प' वार्षिक पत्रिका। आब हमरा लग एकटा अंक उपलब्ध अछि जकर छाया-प्रति अपने सामर्थ्यसँ अवगत करा देत।

(15) अपन रचना कर्मक सम्बन्धमे विस्तारसँ बताबी। कोन कोन रचना अहाँक नजरिमे अहाँक प्रिय रचना अछि, तकरा सेहो विस्तारसँ बताबी।

योगानन्द झा : स्मृतिशेष डॉ. रामदेव झाजीक प्रोत्साहन पाबि मैथिलीमे स्नातकोत्तर, पी.एच.डी. धरिक शिक्षा ग्रहण कयल। तहिसँ पूर्व उच्चतर माध्यमिक कक्षा धरि आधुनिक भारतीय भाषाक रूपमे मैथिली पढ़ने छलहुँ आ तहि क्रममे अनुकरणात्मक रचना दिस प्रवृत्त भेल छलहुँ। परवर्ती कालमे शोधकार्य कयल, जाहीक हेतु, मूलक अतिरिक्त उपादेय रूपमे साहित्यसँ परिचय करौलक आ प्रवृत्त। अनुवाद पुनश्चर्या भेलाक बाद अनुवाद दिस प्रवृत्त भेलहुँ। तत:पर सम्पादक लोकनिक आग्रहपर सामग्री जुटबैत रहलहुँ आ लोकजगत हमरा साहित्यकारक परिचितिकेँ स्थापित करैत चल गेल। 'निज कवित्त केहि लाग न नीका'क आधार पर सभटा रचना विशेष प्रिय। ताहुमे सभसँ उत्तम रचना अछि 'किछु नूतन करी हम।'

शोध-प्रबन्धक प्रणयनक हमर सूत्रधार छलाह स्मृतिशेष बुद्धन नजकजी

ई नागरिकाक एक (एगोट) छलाह। ओ विभिन्न गामक विभिन्न जातिक लोकक ओहिठाम लs जाथि आ हुनक अन्तर्गत माध्यमे शब्द-संचयन कयल करथि।

(16) डॉ. कमला चौधरी-मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८; डॉ योगानन्द झा- मैथिलीक यान्त्रिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९ आ डॉ. ललिता झा- मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११ मैथिलीक समानान्तर धाराक नवीनतम मैथिलीक सूक्ष्म शब्दकोष अछि जे खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक अछि। एहि दिशामे एक अहूँ छी। मात्र एतेक पोथी मैथिलीक समानान्तर धारामे अहाँक नाओं अमर करबा लेल पर्याप्त अछि। अहि पोथीक क्रममे कोन गामक कोन लोकक सबहक योगदान छन्हि, ओकर रचना विधानक सम्पूर्ण इतिहास विस्तृत रूपमे बताबी।

: शिक्षाक माध्यमक रूपमे मैथिलीक स्वीकार्यता कतेक जायज कतेक नाजायज?

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२.साक्षात्कार: कमला चौधरी सँ उमेश मण्डल द्वारा

साक्षात्कार: कमला चौधरी सँ उमेश मण्डल द्वारा



कमला चौधरी

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) http://www.videha.co.in/ लेल डॉ. कमला चौधरीसँ उमेश मण्डलक साक्षात्कार।

(1) वर्तमान मैथिली साहित्य कोन दिशामे अछि?

कमला चौधरी : निश्चित रूपसँ मैथिली साहित्य अबाध गतिएँ प्रगतिक बाटपर बढ़ि रहल अछि।

(2) ओना पुरस्कार तँ प्रोत्साहन लेल होइत छै मुदा मैथिलीमे पुरस्कार पाबि साहित्यकारक गति प्राय: रुकि जाइत छै। एना किएक?

कमला चौधरी : एहन कोनो बात नहि। बहुतो पुरस्कार प्राप्त साहित्यकार अपन जीवनक उत्तरार्द्धमे मैथिली साहित्य भण्डारकेँ श्री सम्पन्न करैत छथि। जेना, पं. चन्द्रनाथ मिश्र अमर, डॉ. भीमनाथ झा, विभूति आनन्द, प्रदीप बिहारी, पं. गोविन्द झा, जगदीश प्रसाद मण्डल इत्यादि।

(3) वर्तमान समयमे मैथिली पत्र-पत्रिकाक की हाल अछि?
कमला चौधरी : संतोषजनक नहि, मुदा निरन्तर नव-नव पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन भऽ रहल अछि ओ जीवन्तताक प्रतीक थिक। नियत-अनियतकालीन पत्र-पत्रिका सँ मैथिली पत्रकारिताक इतिहासकेँ बेस समृद्ध बनौने जा रहल अछि।

(4) चेतना समिति एवम् अन्यान्य मैथिली संगठनमे एखनो दलित वर्गक प्रवेश नगण्य छै। एकरा अहाँ कोन रूपमे देखै छिऐ?
कमला चौधरी : वर्तमान समयमे दलितक अर्थ जाति नहि, आर्थिक विपन्नता अछि। एखनुक संस्था आ संगठन प्रभुत्व-सम्पन्न आ राजनीतिज्ञ लोकनिक संरक्षणमे चलैत अछि, जतय एकटा सुच्चा साहित्यकार दुर्बल प्राणी सदृश होइत छथि। अत: हुनक उपेक्षा स्वाभाविक। समरथ को नहि दोष गोसाईं। ई राग आन लोकक संस्था आ संगठन सभमे पूर्वहिसँ व्याप्त अछि। मैथिली एहिसँ कियेक वंचित रहतीह!

(5) दरभंगा पीठ जकाँ आब सहरसा पीठ बनि रहल छै। ई मैथिलीक लेल नीक की खराप?
कमला चौधरी : बहुत नीक। हमरा विश्वास अछि जे पहिलुक पीठ सभसँ उत्तम परिणाम सोझाँ आयत।

(6) अहाँक साहित्यिक यात्रामे कोन तत्त्व प्रेरक आ कोन तत्त्व

बाधक रहल?

कमला चौधरी : गुरुजनक प्रोत्साहन आ निर्देशनसँ प्रेरित होइत रहलहुँ। विशेषतया स्कूली शिक्षाक समय पण्डित बद्रीनाथ मिश्र अमर आ विश्वविद्यालयी शिक्षक समय डॉ. शैलेन्द्र मोहन झाजीसँ बेसी प्रभावित भेल रही। आगाँ चलि साहित्यिक गुरुवाणी आ गोष्ठीसँ बहुत प्रोत्साहित रहलहुँ।

(7) वर्तमान साहित्यकारक मूल्यांकन अहाँ केना करए चाहब?

कमला चौधरी : वस्तुतः रचनाक मूल्यांकन ओहिमे निहित वैचारिकता, संवेदनशीलता, उपयोगिता आ रस-माधुर्यसँ होयबाक चाही।

(8) अहाँक प्रिय साहित्यकारकँ छथि?

कमला चौधरी : बहुत गोटा। ककरक नाम कहू?

(9) साहित्यकारक लेखकीय विचार आ वास्तविक जीवनक विचार एक हेबाक चाही आकि अलग-अलग? जँ एक हेबाक चाही तँ वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' जीक वैचारिक विचलनकेँ अहाँ कोन रूपमे देखै छिऐन। आ जँ अलग-अलग हेबाक चाही तँ ओहेन साहित्य आ साहित्यकारक मूल्य की?

कमला चौधरी : निश्चित रूपसँ एक होयबाक चाही मुदा से विरल होइत अछि। हम जखन महाविद्यालय सभासँ जुड़लहुँ तँ ओतय दु सहकर्मी साहित्यकारसँ परिचित रहलहुँ। एकटा रहथि जनवादी कवियित्री। दुःख आ माटी हुनक कविताक मुख्य विषय रहैत छल

मुदा एकदिन हुनका आठ आना लेल बक-झक करैत, निकाललाक देहयन यात्री रूकैत देखल नहियनि तँ बहुत विचलित भऽ गेल रही। ओहिना शासन सहकर्मी आ स्त्रीक मान-सम्मानक समर्थनमे खूब कलम चलबैत रहथि, मुदा एकटा सविकाक संग हुनक कटूवार्त्तालाप सुनि क्षुब्ध भऽ गेल रही। कथनी आ करनीक विरोधकेँ प्रत्यक्ष दर्शन ठाढ़ि भेल रहय, आगाँ किछु आओर अनुभव भेटैत गेल। तखन बूझलहुँ जे उपदेश शासना लेल होइत अछि मुदा से उचित नहि थिक।

(10) मैथिल साहित्यकार बहु विधावादी होइत छथि। मुदा जँ अहाँ एक्के विधामे रहितौं तँ ओ कोन विधा होइत?

कमला चौधरी : कथा ओ कविता।

(11) युवासँ की आशा। ओऽहम सँ क आगू जा सकै छथि।

कमला चौधरी : आशावान छी मुदा से समय निर्णय करत।

(12) अहाँ अपन साहित्यिक यात्राक पठान कऽ आ कोन नूतन देखै छिऐ?

कमला चौधरी : हमर साहित्यिक अवदान कोनो विशेष नहि रहल अछि, तँ एहियन किछु कहब उचित नहि।

(13) पारिवारिक परिचय जनबाक इच्छा अछि।

कमला चौधरी : अधिकता पिताक (स्व. कृष्णकान्त झा, ग्राम-

विरसायर, पण्डौल) ज्येष्ठ सन्तानक रूपमे जन्म भेल। पिता गांधीवादी विचारधाराक रहथि। स्वतंत्रता संग्राममे अंग्रेजक विरुद्ध कार्य कयलनि, ओ स्वतंत्रता सेनानी सेहो रहथि। पिताक सान्निध्यमे कर्पूरी ठाकुर, राममनोहर लोहिया, सूरज नारायण सिंह, जय प्रकाश नारायण आदि नामचीन व्यक्तित्व सभक दर्शनक सुअवसर प्राप्त भेल।

हमर माता (स्व. श्यामला झा) पूर्ण शिक्षित आ सशक्त महिला रहथि। कोनो परिवारकेँ सुचारु रूपेँ चलयबामे ओहि परिवारक स्त्रीक मुख्य भूमिका रहैत अछि। हमर माता शिमला शहर स्थित कॉन्वेंट स्कूलसँ सातवीं कक्षा तक पढ़ल रहथि, से अंग्रेजीक ज्ञान बढ़ियाँ रहनि। हमर नाना स्व. अच्युतानन्द झा (ग्राम- भवानीपुर, पण्डौल) दरभंगा महाराजक शिमला स्थित कारोबारक मैनेजर रहथि। ओ सपरिवार ओतहि रहैत छलाह। हमर मातासँ चारि वर्ष पैघ मामा (स्व. रामचन्द्र झा) रहथि जे आगाँ चलि अंग्रेजीक प्राध्यापक भेलाह। शिमलामे अंग्रेज सभहक सम्पर्कमे अयलासँ हुनकर सभहक रहन-सहन पर बहुत प्रभाव पड़ल रहनि। कहल जाइत अछि जे ओहि गाममे चाहक चलनि हमर नानक घरसँ आरम्भ भेल छल।

हमर माताक द्विरागमनमे हमर नाना एक बाकस विभिन्न विधाक पुस्तक सभ देने रहथि। एहिसँ हुनक साहित्यिक अभिरुचिक प्रमाण भेटैछ। ओहिमे प्रेमचन्द्र ओ शरदचन्द्रक किछु उपन्यास सभ बाँचल छल जे हमरा स्कूली शिक्षाक समय पढ़बा लेल भेटल आ सम्भवतः ओहिसँ साहित्यक स्वाद भेटल जे आगाँ चलि रुचिमे रसि-बसि गेल। नानाक देल ग्रामोफोन सेहो बहुत दिन तक सुनैत रहल।

उहि समय ग्रांजिस्डनक चलन नहि नहैक। हम चानु राञ्ज्ञी-वहिन नकाउ लग। कृष्ण-लीला सुनी आ नुनजहाँ, सहगलक हिल्मी गीत सहा।
ओहि गनहुँ हमन व्यक्तित्व निर्माणम हमन माता-पिता उा नाना-नानी (स्व. दुर्गा मा)क वहुत सहयोग नहलनि। कठिनसँ कठिन समयम उा लाकनि हमन सम्बल वनल नहलाह। हुनकहि लाकनिक दल संस्कान उा शिक्षसँ हम साहसी, कर्मठ आ स्वावलम्बी वनि सकलहुँ।
संयोगवश सासुनाक यनिवान ववकालत यशासँ ज्ञानल छलाह। हमन ददिया ससुन स्व. सानलाल चौधनी (ग्राम- वसहा, माखनयून) अयन ज्ञ्लाकाक यहिल ग्रेजुएट नहथि। उा कलकत्तासँ कानूनक यढाञ्ज्ञी कs स्व. गिनीन्द्र मारुन मिश्रक संग दनरंगाम ववकालत कनैत छलाह। ञ्ज्ञी दुनु गोटा दनरंगा महानाजाक कस-माकादमाकँ विशेष नुयँ दखल कनथि। मुदा दुर्भाग्य ज 1934 ञ्ज्ञी.क हुकम्पक विभिषिकासँ आहत हs अल्प वयसम दिवंगत हs गेलाह। एकन चर्चा स्व. गिनीन्द्र मारुन मिश्र अयन अकादमी युनस्कृत याथी 'किछु दखल किछु सुनल' म कयन छथि।
दुर्भाग्यवश वैवाहिक जीवन वहुत अल्प नहल। यति स्व. कन्हैया चौधनी नल विरागम नहथि। युत्र अनुनाग कमल (मुकुल चौधनी) सहा ववकालत यशासँ ज्ञानल छथि आ युत्री जमाता अमनिका प्रवासी थिकाह। युत्रवधु मीनु कुमानी +2 विद्यालयम शिक्षिका छथि। यौत्र सुमुख ञ्ज्ञीनियनींगक यढाञ्ज्ञी कs नहल छथि।



पाछाँमे (बामसँ दहिन)- श्री. दुर्गानन्द झा (जमाय), अनुराग कमल (पुत्र)

आगाँमे (बामसँ दहिन)- मीनू कुमारी (पुतहु), अभिलाषा कमल (पुत्री), कमला चौधरी (स्वयं)

(14) कोन-कोन पत्रिकाक अपन सम्पादक मण्डलमे छलौं ओहिमे के सब योगदान देने छला? ओहि पत्रिका सभक विषयमे जनबाक इच्छा अछि।

कमला चौधरी : 1984 ई.मे 'स्वाती' नामक त्रैमासिक साहित्यिक

पत्रिकाक सम्पादन आ प्रकाशन मुजफ्फरपुरसँ आरम्भ कैल गेल, जे मात्र चारि अंक प्रकाशित भऽ सकल। ई पत्रिका अपना समयक महत्वपूर्ण आ उत्कृष्ट पत्रिका छल, जकर चर्च भऽ जयनाक क्षेत्र एखनहुँ होइत अछि। ओकर बाद बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुज.क मैथिली विभागसँ 2012 मे पहिल शोध पत्रिका 'तिरहुत'क प्रकाशन आ सम्पादन कयल गेल, जे कतेको दृष्टिएँ महत्वपूर्ण सिद्ध भेल।

(15) अपन नवका कर्मक सम्बन्धमे विस्तारसँ बताबी। कोन कोन नवका अहाँक नजरिमे अहाँक प्रिय नवका अछि, तकरा सेहो विस्तारसँ बताबी।

कमला चौधरी : डॉ. शैलेन्द्र मोहन झाजीक प्रोत्साहन पाबि मैथिलीमे स्नातकोत्तरक पश्चात् डॉ. नामदेव झाजीक निर्देशनमे पी.एच-डी. हेतु पंजीकृत भेलहुँ। विषय छल 'मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली'। वस्तुतः शोध-कार्य हेतु विषयक चयन उत्कृष्ट छल, मुदा कठिन सेहो। एहि लेल गहन अध्ययन आ लोक सम्पर्कक आवश्यकता छल। एहि सभ प्रक्रियाकेँ पूर्ण करैत बहुत समय लागि गेल आ अन्ततः 2008 ई.मे ई पुस्तकाकार प्रकाशित भऽ सकल, जे मैथिलीक एकटा मानक ग्रन्थक रूपमे जानल जाइछ।

ओना, हृदयसँ हम कथाकार छी। अपन आगू-पाछू घटैत घटना सभ प्रभावित करैत अछि। 'समय संकेत' नामक मात्र एकटा कथा संग्रह प्रकाशित अछि, जाहिमे काल-चक्र, गुलाब काकी, आकांक्षा, अपराजिता, धुनी हमर प्रिय कथा अछि। एहि कथा सभक नायिका

जीवनक विविध संघातातकेँ सहैत अपन जीवनकेँ सार्थक स्वरूप देबामे सफल भेल छथि।

'मानक योगी' सद्य: प्रकाशित बंगला उपन्यासक अनुवाद थिक। एहि उपन्यासक नायिकाक चरित्रसँ बहुत बेसी प्रभावित भेलहुँ। बंगला उपन्यास रहितहुँ मैथिलीक सांस्कृतिक परिवेशक अविकल चित्रण बुझना जाइत अछि। ई हमर प्रिय रचना थिक।

(16) डॉ. कमला चौधरी-मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८; डॉ योगानन्द झा- मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९ आ डॉ. ललिता झा- मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११ मैथिलीक समानान्तर धाराक रत्नमे मैथिलीक सूक्ष्म शब्दकोष अछि जे खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक अछि। एहि तीनमे एक अहूँ छी। मात्र यएह पोथी मैथिलीक समानान्तर धारामे अहाँक नाओं अमर करबा लेल पर्याप्त अछि। अहि पोथीक क्रममे कोन गामक कोन लोक सभक योगदान छन्हि, एकर रचना विधानक सम्पूर्ण इतिहास विस्तृत रूपमे बताबी।

कमला चौधरी : वेश-भूषा-प्रसाधनक उपादान, पद्धति आ परम्परा कोना समाजक सभ्यता ओ संस्कृतिक परिचायक मानल जाइत अछि। अत: विषय बहुत उत्तम छल। शोध-कार्यक क्रममे कतेको गाम-घरक भ्रमण कयलहुँ ओ विभिन्न वर्ग ओ जातिक लोक सभसँ सम्पर्क स्थापित कए शब्द-सम्पदाक संचय कयल आ विभिन्न क्षेत्रमे ओहि शब्दक पर्याय एवं उच्चारणक वैशिष्ट्यकेँ परखबाक अवसर भेटल। रचना विधानक मूलमे विभिन्न प्रकृतिक लोक सभसँ परिधान ओ

आभूषणक नामावलीक वैशिष्ट्यक सम्बन्धमे अन्तरंग वार्ता स्थापित कयलहुँ।
परिधान ओ आभूषणक संस्थान ओ चित्रावली हेतु कतोक बूढ़-पुरान पण्डित परिवारसँ लऽ निरक्षर कृषि एवं अन्य कर्मसँ जुड़ल लोक सभसँ सम्पर्क साधि विशेष जानकारी लेबाक प्रयासमे लागल रहैत रही। एहि सम्बन्धमे जितवारपुर निवासी सज्जनजीक सहयोगकेँ नहि बिसरि सकैत छी। एहि सभ क्रिया-कलापक संगहि अनेक शास्त्रीय ग्रन्थावलीक अध्ययन द्वारा अनेक शब्दक प्राचीन ओ अर्वाचीन एवं वैकल्पिक स्वरूपक परिचय प्राप्त कयलहुँ। जाहि प्रमुख ग्रन्थक अध्ययन कयल ओहिमे सँ किछु नाओं स्मरण अछि, जेना- गृहस्थ रत्नाकर- चण्डेश्वर ठाकुर, अमरकोष- स. पं. चन्द्रधारी सिंह, फोकलोर मैजिक एण्ड लीजेण्ड ऑफ मिथिला- माखन झा। बिहार पीजेन्ट लाइफ- ग्रियर्सन, कृषक जीवन सम्बन्धी ब्रजभाषा शब्दावली- हिन्दुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद। पतंजलि कालीन भारत- डॉ. प्रभुदयाल अग्निहोत्री, वैदिक साहित्य और धर्म- आचार्य बलदेव उपाध्याय, मैथिली संस्कृति ओ सभ्यता- डॉ. उमेश मिश्र, मैथिली व्याकरण मीमांसा- डॉ. सुरेन्द्र झा, वृहत मैथिली शब्दकोष- डॉ. जयकान्त मिश्र इत्यादि। अपन शोध कार्यमे कयल गेल भ्रमण ओ विविध लोकसँ परिचय-पात ओ वार्तालापक सुखद संस्मरण एखनो मानस-पटलपर अंकित अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.३.यनमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

गीता माहात्म्य - ८, ९
Wednesday, 7 June 2023 6:38 AM



(नाम - परमानन्द लाल कर्ण (१९३०) पिता - स्व० परशुराम लाल कर्ण गाँव - घोघरा, पो - बिरौल, दरभंगा, शिक्षा - स्नातकोत्तर CAIIB सेवानिवृत्त प्रबन्धक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया)

गीता माहात्म्य
(पद्म पुराण उत्तर खण्ड)
अष्टम अध्याय

भगवान शिव कहलथिन - हे देवी, आब अष्टम अध्यायक माहात्म्य सुनू। जेकरा सुनला सँ अहाँ कें बड़ प्रसन्नता होयत। दक्षिण दिशा आमर्दकपुर नाम सँ एकटा प्रसिद्ध नगर अछि ओहि ठाम भावशर्मा नाम सँ एकटा ब्राह्मण रहैत छलाह। जे वेश्या कें पत्नी बनाकऽ रखने छलथि। ओ माउस खाइत, मदिरा पीबैत, साधु लोकनिकक धन चोरबैत, दोसर स्त्री सँ व्यभिचार करैत आ शिकार खेलऽ मे दिनचर्या बितबैत छलाह। ओ बड़ भयानक स्वभाव कें छलथि आ मन मे पैघ-पैघ हौसला राखैत छलथि। एक दिन मदिरा पार्टी जुटल छल जाहि मे भावशर्मा भरि पेट मदिरापान कैलथि आ अजीर्ण सँ पीड़ित भऽ ओ पापात्मा कालवश मरि गेलाह आ पैघ ताड़क गाछ भेलथि। ओहि गाछक घोर आ शीतल छायाक आश्रय लऽ के ब्रह्मराक्षस भाव कें प्राप्त भेल कोनो पति-पत्नी ओहि ठाम रहैत छलथि।

हुनकर पूर्व जन्मक घटना एहि प्रकार अछि। कुशीबल नाम सँ एकटा ब्राह्मण छलाह जे वेद-वेदांगक तत्त्वक ज्ञाता, सब शास्त्रक अर्थक विशेषज्ञ आ सदाचारी छलथि। हुनकर स्त्रीक नाम कुमति छल। ओ बड़ खोटा विचार के छलीह

ও ব্রাহ্মণ বিদ্বান ছেলাহ বারম্বার লোভবশ অপন স্ত্রীক সঙ্গ
সব দিন ভৈঁস, কানখরুষ আ ঘোড়া আদিক দোষ দানক গ্রহণ
করৈত ছলাহ আ দোসর ব্রাহ্মণ কেঁ দান মে মিলল কোনো
বস্তু নহি দৈত ছলথিন। ও দুনু পতি-পত্নী কালবশ মৃত্যুক গ্রাস
ভঃ ব্রহ্ম রাক্ষস ভেলথি। ও ভুখ আ প্যাসঁ পীড়িত ভঃ পৃথ্বীপর
ঘুমৈত তাড়ক গাছ লগ আবি গেলাহ আ জড়ি মে বিশ্রাম করঃ
লগলাহ। তকর বাদ পতি সঁ পত্নী পুছলথিন - 'হে নাথ হমরা
লোকনি কেঁ এ মহান দুখ কোনা দুর হোয়ত আ এহি ব্রহ্মরাক্ষ
স যোনী সঁ কোনা হমরা দুনু কেঁ মুক্তি মিলত? তব ও ব্রাহ্মণ
কহলথিন - 'ব্রহ্মবিদ্যাক উপদেশ, অধ্যাত্ম তত্ত্বক বিচার আ কর্ম
বিধিক জ্ঞানকরিঁ কোন প্রকার সংকট সঁ ছুটকারা মিল সকৈত অছি?
এ সুনি পত্নী পুছলথিন - 'পুরুষোত্তম! ও ব্রহ্ম কী অছি? অধ্যাত্ম
কী অছি আ কর্ম কোন অছি।' পত্নীক এতবে কহৈত আশ্চর্যক ঘটনা
ঘটিত ভেল সে সুনু। উক্ত বাক্য গীতাক আঠম অধ্যায়ক আধা
শ্লোক ছল। জেকরা সুনলা সঁ ও গাছ তখন তাড়ক রূপ ত্যাগি
ভারশর্মা নাম সঁ ব্রাহ্মণ ভঃ গেলাহ। তকোন জ্ঞান ভেলা সঁ
বিশুদ্ধচিত্ ভঃ ও পাপ সঁ মুক্ত ভঃ গেলথি আ ওহি আধা শ্লোক-
ক মাহাত্ম্যে সঁ ও পতি - পত্নী সেহো মুক্ত ভঃ গেলথি। জনকা মুখ
সঁ দৈব বশ আঠম অধ্যায়ক আধা শ্লোক নিকলি পড়ল ছল।
তদনুব আকাশ সঁ একটা দিব্য বিমান আয়ল আ দুনু পতি
পত্নী ওহি বিমান পর সবার ভঃ স্বর্গলোক চলি গেলথি।
ওহি ঠামক সব বৃত্তান্ত আশ্চর্যজনক ছল।

তকর বাদ ও বুদ্ধিমান ব্রাহ্মণ ভারশর্মা আদর-
পূর্বক আধা শ্লোক লিখ দেবদেব জনার্দনক আরাধনা কঃ
ভাছা সঁ মুক্তিদায়িনী কাশীপুরী চলি গেলাহ। ওহি ঠাম
ও উদার বুদ্ধিমান ব্রাহ্মণ তপস্যা আরম্ভ কেলনি। তখনহি
ক্ষীরসাগরক কন্যা ভগবতী লক্ষ্মী কর জোরি দেবতাক দেবতা
জগৎপতি জনার্দন সঁ পুছলথিন - হে নাথ অহাঁ অচানক
নীন ত্যাগি কিয় ঠাঢ় ভঃ গেলহুঁ?

শ্রী ভগবান কহলথিন - হে দেবী, কাশীপুরী মে
ভাগীরথীক তট পর বুদ্ধিমান ব্রাহ্মণ ভারশর্মা হমর
ভক্তিবস সঁ পরিপূর্ণ ভঃ কঠোর তপস্যা কঃ রহল ছথি।

ओ अपन तन्द्रीक रक्षा मे कऽ गीताक आठम अध्यायक आधा श्लोकक जप करैत छथि। हम उनकर तपस्या सँ सन्तुष्ट छी। उनक तपस्याक अनुरूप मन विचार रँसि काल सँ कऽ रहल छी। हे प्रिये आखन ओ मन देबाक हम उत्कण्ठित छी।

पार्वती जी पूछलथिन - हे भगवन, श्री हरि सदिखन प्रसन्न भेला पर जिनका लेल चिन्तित रहैत छलाह ओ भगवद्भक्त भावशर्मा कें कोन फल मिलल छलनि।

श्री महादेव कहलनि - हे देवी, द्विजश्रेष्ठ भावशर्मा प्रसन्न भेल भगवान विष्णुक प्रसाद सँ मोक्षक प्राप्ति केलनि आ उनक वंशज सेहो जे नरक यातना मे पड़ल छलथि उनकर पुण्य कर्म सँ भगवद्धाम कें प्राप्त केलनि। पार्वती ई आठम अध्यायक माहात्म्य थोड़ मे बतेलहुँ अछि। एहि पर सदिखन विचार करबाक चाही।

———— o ————

परमानन्द लाल कर्ण



गीता माहात्म्य
(पद्म पुराण उत्तर खण्ड)
नवम अध्याय

श्री महादेव कहलनि - पार्वती, आब हम आदर पूर्वक नवम अध्यायक माहात्म्यक वर्णन करैत छी अहाँ स्थिर भऽ सुनू। नर्मदा नदीक तट पर माहिष्मती नाम सँ एकटा नगर अछि। ओहि ठाम माधव नाम सँ एकटा ब्राह्मण रहैत छलाह जे वेद वेदांगक तत्त्वज्ञ आ समय समय पर आबऽ वाला अतिथी लोकनिक प्रेमी छलाह। ओ विद्या सँ धन अर्जित कऽ एकटा महान यज्ञक अनुष्ठान आरंभ केलनि। ओहि यज्ञ मे बलि देबाक लेल एकटा बकरा मंगाओल गेल जखन ओकर शरीरक पूजा भऽ गेल तहन सब कें आश्चर्य मे डालैत

ओ बकरा हँसि कें उच्च स्वर मे कहलक- त्रिफल, एहि वैसी यज्ञ सँ की लाभ होयत एकर फल तँ नष्ट भऽ जायत आ जन्म-जन्म आ मृत्युक सेहो कारण थीक। अहाँ सभ केना पर हमर जे दशा अछि सेहो अहाँ सभ देख लिअ। बकराक ओ कौतूहलजनक बात सुनि यज्ञ मण्डप मे बइसल सभ लोकनि विस्मित भऽ गेलाह। तखन ओ यजमान त्रिफल कर जोड़ि अपलक नेत्र सँ देखैत बकरा कें प्रणाम कऽ श्रद्धा आ आदर सँ पूछऽ लगलथिन।

त्रिफल कहलनि- अहाँ कोन जाति के छलहुँ? अहाँक आचरण आ स्वभाव केहन छल। कोन कर्म सँ अहाँके बकराक योनि प्राप्त भेल। ओ सभ हमरा बताउ।

बकरा कहलक- त्रिफल, हम पूर्व जन्म मे ब्राह्मणक निर्मल कुल मे भेल छल। समस्त यज्ञक अनुष्ठान करऽ मे आ वेद विद्या मे प्रवीण छलहुँ। एक दिन हमर पत्नी भगवती दुर्गाक भक्तिआ विनम्र भाव सँ अपन बालक कें रोगक शान्ति-क लेल बलि देबाक निमित्त हमरा सँ एकटा बकरा माँगलथि। तत्पश्चात जखन चण्डिकाक मन्दिर मे ओ बकरा कें वधक लेल लऽ जायत छल तखन ओकर माता हमरा शाप देल-थिन- 'यौ ब्राह्मण लोकनि मे नीच, पापी! अहाँ हमरा बच्चा कें वध करऽ चाहैत छी तें अहाँ सेहो बकरा योनि मे जन्म लेब। हे द्विज श्रेष्ठ! तखन कालवश मृत्युक उपरान्त हम बकरा योनि मे जन्म लेलहुँ। यद्यपि हम पशु योनि मे छी मुदा हमर पूर्व जन्मक स्मरण बनल अछि। हे त्रिफल जौं अपनेक सुनबाक उत्कण्ठा होय तखन हम एकटा आओर आश्चर्यक बात सेहो बतबैत छी। कुरुक्षेत्र नाम सँ एकटा नगर अछि जे मोक्ष प्रदाता अछि। ओहि ठाम चन्द्रशर्मा नाम सँ एकटा सूर्यवंशी राजा राज्य करैत छलाह। एक समय जखन सूर्यग्रहण लागल छल राजा बड़ श्रद्धा सँ कालपुरुषक दान करबाक तैयारी केलनि। ओ वेद-वेदांग पारगामी एकटा विद्वान ब्राह्मण के बजौलनथि आ पुरोहित संग ओ तीर्थक पावन जल सँ स्नानक लेल चललाह। तीर्थ स्थल पर पहुँचि राजा स्नान कऽ दू टा वस्त्र धारण केलनि। जेबि पवित्र आ

प्रसन्नचित्त भऽ श्वेत चन्दन गंगाके कात मे ठाढ़ भेल पुरोहित केँ हाथ पकड़ि तत्कालोचित लोकनि सँ घिरल अपना स्थान पर चलि एलाह। ओहि समय एला पर राजा यथोचित विधि सँ भक्तिपूर्वक ब्राह्मण केँ कालपुरुषक दान केलनि।

तहन कालपुरुषक हृदय फाड़ि के एकटा पापात्मा चाण्डाल प्रकट भेल। फेर थोड़े देरक बाद निन्दा सेहो चाण्डालक रूप धारण कऽ कालपुरुषक शरीर सँ निकललथ ब्राह्मण लग आबि गेलीह। एहि प्रकार चाण्डालक ओ जोड़ि आँखि लाल केने निकलि ब्राह्मणक शरीर मे जबरदस्ती प्रवेश करऽ लगलीह। ब्राह्मण मने मन गीताक नवम अध्यायक जप करैत छलाह आ राजा चुपचाप ई सब कौतुक सँ देखऽ लगलथिन। ब्राह्मणक अन्तःकरण मे भगवान गोविन्द शयन करैत छलाह। ओ क्षण के ध्यान करऽ लगलाह। ब्राह्मण अपन आश्रयभूत भगवानक जखन ध्यान केलथिन तहन गीताक अक्षर सँ प्रकट भेल विष्णुदूत सँ पीड़ित भेल ओ दुनू चाण्डाल भागि गेल। क्षणकेँ उद्देश्य असफल भऽ गेल। एहि प्रकारक घटना के प्रत्यक्ष देखि राजा आश्चर्यचकित भऽ गेलाह। ओ ब्राह्मण सँ पुछलथिन - हे विप्रवर ई महाभयंकर आपत्ति केँ अहाँ कोना कटलहुँ? अहाँ कोन मन्त्रक जप आ कोन देवताक स्मरण करैत छलहुँ? ओ पुरुष आ स्त्री के छलथि? ओ दुनू कोना उपस्थित भेलाह? फेर ओ कोना शान्त भऽ गेलाह? ई सब हमरा बताउ।

ब्राह्मण कहलनि - राजन, चाण्डालक रूप धारण कऽ भयंकर पाप प्रकट भेल छल आ ओ स्त्री निन्दाक साक्षात्-मूर्ति छलीह। हम दुनू के ओहुँ समझैत छी। तखन हम गीताक नवम अध्यायक मन्त्रक मालाक जाप करैत छलहुँ। तेकरे माहात्म्य सँ ई सब संकट दूर भऽ गेल। हे महिपते! हम सब दिन गीताक नवम अध्यायक जाप करैत छी तेकरे प्रभाव सँ प्रतिग्रहजनित आपत्ती केँ पार कऽ सकलहुँ अछि।

ई सुनि राजा ओहि ब्राह्मण सँ गीताक नवम अध्यायक अभ्यास केलनि आ दुनू केँ मोक्षक प्राप्ति भऽ गेलनि।

ई कथा सुनि ब्राह्मण बकरा केँ बन्धन सँ मुक्त कऽ देलथिन आ गीताक अभ्यास सँ परम गति केँ प्राप्त केलनि।

—— ० ——

२.४.संतोष कुमार राय 'बटरोही'-मंगनौना (धारावाहिक उपन्यास)-(चौदहम खण्ड)



संतोष कुमार राय 'बटरोही'

मंगनौना (धारावाहिक उपन्यास)- (खण्ड १४)

मोन दुखी छल ओहुना । ककर कारणे की भऽ सकैत अछि ? हमर मोन मे घुरघुरा जकाँ किछु घुरघुरा करैत अछि। घर मे राखल बड़का रजिस्टर निकाललहुँ। ओहि रजिस्टर मे धान कर हिसाब लिखल छै। किनका कतेक हिसाब रहलैह आओर किनका पर कतेक मोन धान छैह ओ लिखल छल ओही रजिस्टर मे। ओहि रजिस्टर मे बटैया कर लिखल एकटा दरखास्त सेहो पड़ल छै। ओ अपन बनाजगामी कँ ओही मे हिसाब-किताब कर छथि। माय-बापक पहिल आओर ज्येष्ठ संतान छलाथि रामकृष्ण। बाबूजीक कनियाओयनी कर कारणे हुनका कम उमिर मे लोकक खान-पथान मे बाहर कऽक परिवारक भरण-पोषण करऽ पड़लैह अछि। किनका टाटानगर बैह रहल छथि गँ किनका राजकीय टाल छैन रहल छथि। ओहि प्रकारे अपन जिनगी कर आगाँ बढ़ौलैह। ओही बीच रामकृष्ण कर शादी

कर गप्प होमऽ लागल। पिता पछबे टाल नागेश्वर जीक कऽ बहिन कर नातिन मंझा ज खवासटोली, मधुबनी म पलल-बढ़ल छलीह सँ करल गेलैह। 'ब्यासजी' घटकैती करबा म माहिर छलाह। मंझा कँ एक बर म देखि कऽ उतरऽ सँ दिन ठेकनह एलाथि।

जाहि घर म अपन नहा छै ओहि घर म सान खाय हऽ जायत छै। ऐहेन हल ब्यासजी कर घर म। कुक्कुर-बिलाडि जकाँ घर म रामकृष्ण आओर ब्रह्मदेव मगत करऽ लागल। ब्रह्मदेव कर कारण घर बिखैर गेलैह ब्यासजीक।

रामकृष्ण बहिखाता म अपन आओर सात पुस्ती- बहिनक जनम तिथि लिखन छथि। वंशावली बाला बहिखाता घर सँ किया नगा कऽ देलकै। किछु-किछु हमरा याद छल आओर किछु बबाजी काका आओर प्रदीप काका कर सहयोग सँ लिखलहुँ अछि। विद्यानंद भैया आओर ब्रह्मदेव भैया सँ सेहो पूछलियैह। हम दिल्ली खवास कर वंशज छी। दरिभंगा जिलाक देवौत गाम सँ आबि कऽ पाँच भैयारी मंगरौना गामक नींव रखलैह। ओ रहऽ सात पुस्ती छलाह, परञ्च दरिभंगा राजाक सेना म दु पुस्ती अपन जिनगी कर आहूति दऽ देलथि। अइ पर दरभंगा राजा खुश भऽकऽ ई मंगरौना गामक रकबा पाँचो पुस्ती कँ दान म देलथिह। मंगरौना गाम दरिभंगा राजा सँ मांगल गेल छल ताहि दुआरे एकर नाम 'मंगरौना' राखल गेल।

टिङ्कुक खवास कर बेटा नहि छलैन्हि। एकटा बेटी छलैन्हि ओकर बियाह नानायधपूर गाम कएलैन्हि। बूढ़ापा मे मानसिक रूप कमजोर भऽ गेलाह। गामक बुधिया लोकनि सेहो फुसला कऽ हुनकर जमीन माँगि लेलथि।

लोक कहैत छलैन्हि, " बाबा, हुनकाँ कें ब्याह छलै। अहाँ कनियाँ कें देखि लियौन्हि। बाबा मुँह देखना मे कनियाँ कें अपन जमीन दऽ देने छलथिन्ह। ओ कहैत छलथिन्ह , " तौ हुनकाँ , कनियाँ कें मुँह देखना मे हुनकाँ जगह जमीन जानि ला। एहि प्रकारेँ टिङ्कुक खवास अपन जमीन लुटौलन्हि। एकर गुणगान हम सभ रहल छी जे सभक पेट निकलनाक लेल अपन जमीन नहि अछि। शासन लोक नाम्हा बन्न कऽ रहल अछि।

आइ बढ़िया दादी नहि रहलन्हि तँ जेहो घनानी पर अखन धनि छी ओहो किनका टिङ्कुक खवास दान कऽ देलन्हि। अपन तँ ओ टिङ्कुक बनि गेलाह संगेह अपन आबै वाला जनरेशन कें टिङ्कुक वा भिखारी बना गेलाह अछि। अखन हम सभ दुःखक कानि रहल छी। अपन पूर्वज कें कननी कोनक पीढ़ी धनि रवाह करैत छै से ओ की नहि बूझैत हएतन्हि। बउजन नाउत अहाँ कननी कें नाकि सकैत छलाह, पन्ड्डु हुनका क मति मारि लेने रहैन्हि से की जानि। ओ किनका प्रयास नहि कलथिन्ह। अथाह जमीन नहि रहैन्हि जे दान देल जाइ। ओ नीक काज नहि कलाह । अबै वाला पीढ़ी कें उन्नति कर नाश बन्न कलैथ।

बाबा नागेश्वर राय कर बाहर नहि करबैक कारणे उन्नति नहि भेलै । संग म बाबूजी सेहो निकम्मा निकललाह । ऐय्यासी सरहक मति सेहो मारल गेलैह। आइ चिनंजीत राय 'व्यासजीक' नाम मिट गेलै।

संतोष कुमार राय 'बटोही'

-संतोष कुमार राय 'बटोही', ग्राम - मंगरौना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.७.कुमार मनोज कश्यप-अपूर्व स्वाद



कुमार मनोज कश्यप

<u>लघुकथा</u>

अपूर्व स्वाद

महिना लगै म एखन एक हफ्ता आन छै। सए खुदना-खुदनी मिला कs गिनलक..... चानि सय नब्बे रुपया! चाऊर, दालि, आँटा, गल गs घन म छैहा। वस घटल-वढल सामान आ ननकानी, दुध - येह सए लल न याऽ्ली चाही! ऊ अंदाज लगेलक..... एगवा याऽ्ली सs कहूना महिना खिचा जेतै .... वर्णा काना अप्रत्याशित खर्चा नहिं वजऊ। आश्वस्त एs साऽ्लीकिल लs ऊ ननकानी लावय विदा एला। कॉलानी क गेट यन नरेीक एटलै- 'की हो नरेीक साऽ्ली! कहाँ स' अवैग छह? ऽ्ली एनल साँझ कs घाघना किये लटकन छह?'

- 'नहिं साऽ्ली! काना वाग नहिं। सए ठीक छै।' नरेीक सामान्य हवाक प्रयास कलक।

- 'गां कहवs गs हम यगिया लवs? किछ वाग गs जनुन छै ज गाना असहज कs नहल छह। हो हमहूँ गाहन सैयानिय छियह। हनिछा कs कहs काना वाग छै गs।' साऽ्लीकिल सs उगनि नरेीक क आन लsग गेल ऊ।

- की कहियs साऽ्ली.... वाग काना न आ अखन वऊ टा! अऽ्ली महिना म निश्चदानी म कैक टा निकाह सए नहै गाहि म हाथ खाली एs गेल। आ गही यन काऽ्ढ म नावनी जकाँ वऊका छौंग

क नजीरह क पनीआ क फॉर्म भरै क काल्हि लास्ट डेट छै। ओना बम्सगर छै; फॉर्म नहिंया भरबइ तऽ ओहो नीक नहिं।'

- 'कत पाइ लगतै?'

- 'साढ़े पाँच सय-साढ़े चारि सय क फ्लैट आ सय रुपया क प्रॉस्पेक्टस।'

- 'हमरा लऽग म एगो बाँचल छह- आइ राखि लेह ... ओना कनी जोगाड़ कऽ कऽ काज चलाबह।'

- 'आ तों?!'

- 'धूर्त मर्द! तों हमर चिंता छोड़ि करह। एक हफ्ता रहलैये आब! सबहक जोगाड़ भगवान लग छनि। एखन तों जाह जल्दी बाकी क जोगाड़ कऽ कऽ ओकर फॉर्म भराबह।'

दुद्दू क ठोर पर मुस्कान छलै। दुद्दू अपन घर क नक्सा देखलक। जहि घर जा कऽ बाबू क छै नहिं तऽ कनियाँ तरकारी लै बैसल रहतै।

आइ ओकरा नून-तेल संग रोटी खेबा म अपूर्व स्वाद बूझा रहल छलै।

-**कुमार मनोज कश्यप, सम्प्रति:** भारत सरकार क उप-सचिव, **संपर्क:** सी-11, टावर-4, टाइप-5, किदवई नगर पूर्व

(दिल्ली हाट क सामने), नई दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ई-मेल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.६.आचार्य रामानन्द मण्डल-वाल्मीकि रामायण आ रामचरितमानस क तुलनात्मक अध्ययन



आचार्य रामानंद मंडल

वाल्मीकि रामायण आ रामचरितमानस क तुलनात्मक अध्ययन

श्री राम कथा क तीनटा प्रमुख घटना १. रानी सभ म पुत्र प्राप्त लेल खीर वितरण २. सीता स्वयंवर वा धनुष यज्ञ आ ३ रावण वध क रूप क तुलनात्मक अध्ययन कैला पर भिन्नता पायल जाइ छय।

राजा दशरथ क रानी सभ क गर्भ धारण क लेल खीर वितरण क संबंध म रामायण आ रामचरित मानस म भिन्नता छैय।

वाल्मीकि रामायण क अनुसार।

कौशल्यायै नरपति:पायसार्धं ददौ तदा।

अर्धादर्धं ददौ चापि सुमित्रायै नराधिपः।।२७।।

कैकेय्यै चावशिष्टार्धं ददौ पुत्रार्थकारणात्।

प्रददौ चावशिष्टार्धं पायसस्यामृतोपमम्।।२८।।

अनुचिन्त्य सुमित्रायै पुनरेव महामतिः।

एवं तासां ददौ राजा भार्याणां पायसं पृथक्।।२९।।

समस्या क हल

खीर=१६आना(१रु)

कौशल्या- ८ आना

सुमित्रा -४ आना+२ आना=६आना

कैकेयी-२ आना

कुल-१६आना

एवहिं रायं प्रिय रानी वालाऽऽ। कौशल्यादि सभां चलि आऽऽ।

अर्द्ध भाग कौशल्यहि दीन्हा। उभय भाग आधे कर कीन्हा।

कैकेयी कहँ नृप सो दयऊ। रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ

कौशल्या कैकेयी हाथ धरि। दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि।

समस्या क हल

खीर -१६आना(१रु)

कौशल्या -८आना

कैकेयी -४आना

सुमित्रा -२ आना+२आना=४ आना।

कुल-१६आना।

सभ रानी अपन अपन खीर क खेलन आ गर्भधारण केलन। बाद म कौशल्या राम क, कैकेयी भरत क आ सुमित्रा लक्ष्मण आ शत्रुघ्न क जनम देलक।

अहू प्रकार खीर बाँट क प्रक्रिया मे रामायण आ रामचरित मानस मे मतभिन्नता छैक

स्वयंवर वा धनुष यज्ञ क वृत्तांत मे महर्षि वाल्मीकि आ संत तुलसीदास मे मत भिन्नता छय।

महर्षि वाल्मीकि क अनुसार -

वीर्यशुल्केति मे कन्या स्थापितेयमयोनिजा।

भूतलादुत्थितां तां वर्धमानां ममात्मजाम्।।१५।।

वरयामासुरागम्य राजानो मुनिपुंगव ।

तेषां वरयतां कन्यां सर्वेषां पृथिवीक्षिताम्।।१६।

वीर्यशुल्केति भगवन् न ददामि सुतामहम्।

तेषां जिज्ञासमानानां शैवं धनुरुपाहृतम्।।१८।।

न शेकुर्ग्रहणे तस्य धनुषस्तोलनेऽपि वा।

यद्यस्य धनुषो रामः कुर्यादारोपणं मुने।

सुतामयोनिजां सीतां दद्यां दाशरथेरहम्।।२६।।

तामादाय सुमंजूषामायसीं यत्र तद्धनुः।

सुरोपमं ते जनकमूचुर्नृपतिमन्त्रिणः।।५।।

इदं धनुर्वरं राजन् पूजितं सर्वराजभिः।

मिथिलाधिप राजेन्द्र दर्शनीयं यदीच्छसि।।६।

इदं धनुर्वरं ब्रह्मञ्जनकैरभिपूजितम्।

राजभिश्च महावीर्यैरशक्यं पूरितुं तदा।।८।।

महर्षेर्वचनाद् रामो यत्र तिष्ठति तद्धनुः।

मञ्जूषां तामपावृत्य दृष्ट्वा धनुरथाब्रवीत्।।१३।।

इदं धनुर्वरं दिव्यं संस्पृशामीह पाणिना।

यत्नवांश्च भविष्यामि तोलने पूरणेऽपि वा।।१४।।

बाढमित्यब्रवीद् राजा मुनिश्च समभाषत।

लीलया स धनुर्मध्ये जग्राह वचनान्मुनेः।।१५।।

पश्यतां नृसहस्राणां बहूनां रघुनंदनः।

आरोपयत् स धर्मात्मा सलीलमिव तद्धनुः।।१६।।

आरोपयित्वा मौर्वीं च पूरयामास वीर्यवान्।

तद् बभञ्ज धनुर्मध्ये नरश्रेष्ठो महायशाः।।१७।।

जनकानां खुल कीर्तिमाहरिष्यति म सुता।

सीता र्त्तारमासाद्य रामं दशरथात्मजम् ।।२२।।

मम सत्या प्रतिज्ञा सा वीर्यशुल्केति कौशिक।

सीता प्राणैर्बहुमता देया रामाय म सुता।।२३।।

रामचरित मानस क अनुसार -

सीय स्वयंवर् देखिअ जाई। ईस् काहि धौंस देइ बड़ाई।

लखन कहा जस राजन् साई। नाथ कृपा तव जायन खाई।।१।।

रंगभूमि आबु दाउ राई। असि सुधि सब पुरवासिन्ह पाई।।

चल सकल गृहिकाज बिसारी। बाल जुवान जरठ नर नारी।।

लग चढ़ावत खैंचत गाढ़। काहीं न लखा देख सब ठाढ़।।

लेहि छन नाम मध्य धनु भाना,पुन सुनत धुनि घोर कठोरा।।

गावहिं छवि अवलोकि सहेली। सिय जयमाल राम उर मेली।।

रावण वध क हेतु बाण वाला म रामायण आ रामचरित मानस म मतभिन्नता छैक।

वाल्मीकि रामायण क अनुसार इन्द्र क सारथि मातलि छैक।

अथ संस्मारयामास मातलि राघवं तदा।

अजानन्निव किं वीर त्वमेनमनुवर्तसे।।१।

विसृजास्मै वधाय त्वमस्त्रं पैतामहं प्रभो।

विनाशकाल:कथितो य: सुरै:सोऽद्य वर्तते।।२।।

स विसृष्टो महावेग: शरीरान्तकर:परः।

बिभेद हृदयं तस्य रावणस्य दुरात्मनः।।१८।।

रुधिराक्तः स वेगेन जीवितान्तकरः शरः।

रावणस्य हरन् प्राणान् विवेश धरणीतलम्।।१९।।

स शरो रावणं हत्वा रुधिरार्द्रीकृतच्छविः।

कृतकर्मा निभृतवत् स तूणीं पुनराविशत्।।२०।।

रामचरित मानस क अनुसार रावण क [illegible] विभीषण भेद बताओल गेल छैक।

नाभिकुंड पियूष बस याकें। नाथ जिअत रावनु बल ताकें।।

सुनत बिभीषन बचन कृपाला। हरषि गहे कर बान कराला।।

सायक एक नाभि सर सोषा। अपर लगे भुज सिर करि रोषा।

लै सिर बाहु चले नाराचा। सिर भुज हीन रुंड महि नाचा।।

एहि प्रकार स रावण वध क भेद बताओल गेल म रामायण आ रामचरित मानस म भिन्नता छैक।

-आचार्य नामानंद मंतल सामाजिक चिंतक सह साहित्यकान सीतामढी।

-आचार्य नामानंद मंतल सामाजिक चिंतक सीतामढी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०नाजकिशुन मंतल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-01 जनवनी १९५0 योग्यता- एम-एससी (नसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। नुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता - कहानी लखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह हासा क न वांटिया। २0२२ प्रकाशित नचना - समिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। २0२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घन -बाहन आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबान -दैनिक मैथिल पुनर्जागनण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमना, सीतामढी। स्थायी पता- ग्राम-पिपना विशनपुन थाना-पनिहान जिला-सीतामढी। वर्तमान पता- पिपना सदन,मुनलियाचक वार्ड-04 सीतामढी पोस्ट-चकमहिला जिला- सीतामढी नाज्य-बिहान पिन-843302 मो नं-9973641075 ईमेल- ramanandmandal001@gmail.com*

ऐ नचनापन अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पन पठाउ।**

२.१.लालदेव कामत-लालदेव कामत- आंचलिक उपन्यास "हाट" मादे/ सर्वश्री राजकिशोर मिश्र जीक - टमी/ एक अध्याय पथक पथिक - स्वर्णप्रभा सरानी/ जल अछि त' धनि, जिनगी त' धनि! / प्रक्रियाधीन सामाजिक परिवर्तन'क स्वर



लालदेव कामत- आंचलिक उपन्यास "हाट" मादे/ सर्वश्री राजकिशोर मिश्र जीक - टमी/ एक अध्याय पथक पथिक - स्वर्णप्रभा सरानी/ जल अछि त' धनि , जिनगी त' धनि! / प्रक्रियाधीन सामाजिक परिवर्तन'क स्वर

१

आंचलिक उपन्यास "भोट" मादे



वरिष्ठ साहित्यकार डॉ०(प्रो०) सुभाष चंद्र यादव जीक सद्यप्रकाशित सामाजिक उपन्यास 'भोट' पढ़बाक अवसर भेटल। किसुन संकल्प लोक - सुपौल, बिहार सँ ६८ पृष्ठ 'क मैथिली भाषा मेँ पोथी २०२२ मेँ बहराएल अछि। एहि पोथीक कभर आकर्षक छैक,जाहिक मूल्य सय टाका निर्धारित कयल गेल अछि। उपन्यास विधा एकादिस कानू व्यक्तिक चरित्र - चित्रण थीक तँ दोसर दिस समाज आओर समयक इतिहास रूपम साक्षी थिकैक। मातृभाषा मैथिलीक विकास लेल बीहनिकथा, लघुकथा, दीर्घ कथा आओर उपन्यास लेखन कार्य सँ आन विधाक बनिस्पत बेशी काज भेल अछि। तकर कारण छै ,लोक वा पाठक अपना - अपना बूढ़ मैयाँ - बाबा, नाना - नानी आ श्रेष्ठजन सँ खीस्सा बालपन सँ सुनबाक अभ्यासी छथि। आ जिनक पूर्वज पंडित,अध्यापक वा लोकगाथाक मूलगैन रहनि,से श्रोता - पाठक आनक अपेक्षा बेशी अध्ययनशील बालपन सँ भऽ जाइत छथि। तँ उपन्यास पढ़यमे अधिक समय देनिहार कम पाठक होय छथि। पढ़ैक अभिरुचि आ नै पढ़ैक वा कम पढ़ैक अवलोकन दृष्टिय

' भरट' सामाजिक उपन्यास कँ पाठक अपना दृष्टिकोण सँ आंकलन आ मनलगु बूझत। भरट उपन्यास'क सौन्दर्य ज हएतैक,एहिक कथ्य ज बूझाए मुदा एहिक नायी-वालीक ज मान नायक यदुवंश , नायिका सर्वीना , सहनायक उपन्यासकार स्वयं आ सहनायिका लक्ष्मी 'क मुहँ ज शब्द वहराएल अछि स मिथिला 'क सियौल- सहरसा आ मधेपुरा जिला 'क बालबचन छी। मिथिलाक प्रायः हर गाममे दु गनहक मैथिली बाजल जाइत नहल अछि। वर्ग आ जातीय समीकरण कर आधारपर एहिक मानक गय करी गँ बूझाएत सवर्णक भाषामे गहन, गखन, अखन ,कखन ,जहन कर प्रयोग हनसो हएतैछ। आ स वैश्य - सातूकर (नाम नाहियान) कर मातृभाषा क' गखैन, गव ,गरी,अखैनि, जखैन शब्दक नुय दैग उच्चारण मिथिलांचलक ?0% लोकवाणी क' प्रतिनिधित्व प्रदर्शित करैछ। दखल जाए गँ जाहि गामम अति पिछड़ा जातिक नानिया समाज अछि,हूनकर बाजब एक पृथक वाली सुनाइत। ई गंगाकातक आन- आन समाजक वाली नायी सँ मिलैत छैक। ओना इहो दखल जाए गँ मिथिलाक मुस्लिम समुदायमे ज मैथिली बाजल जाइत छै, ताहिमे उर्दू - हिंदीक' शब्द आ वाक्य अधिक प्रयुक्त हएतैछ। गँ उपन्यासकार श्री सुभाष चन्द्र यादव जीक ज मैथिली लखन छैन स निश्चित ना श्री गानानंद नियोगी, जगदीश प्रसाद मंडल आ ओ पंक्तिक लखकक अपन धनाहन मैथिली थीक। ओना संस्कृत हंटल पांडित्यपूर्ण ठेठल- ठेठल- भाषा ग्राह्य जना दलित ,पिछड़ल, अधिक पछुआयल गवका कँ अनसोहान्ह लगैछ, गहिना कम साउन ,निरउन शुद्धक भाषा (बाजब- लूकब) पैघ जातिक (सम्भ्रान्त लोकक)

यसीन नहिँ यऊैग छह्नि। ऽ्यद कानध थीक ज ताक्तन नियागी जीक मादै काहूं यं. (गानिह्व मा जी करून छथि रिनका ब्याकनध - राषा'क दृष्टिय यासमार्क रट जाऽ्ीन; सयद वरू्ग। अस्फिन्नक लल सामान्य लाकक संघर्ष प्रा० सूराष चन्द्र वावुक अरीष्ट नरूलनि अछि ,ज रिनक कथा 'का0क वनल लाक' मँ अरिव्यक्ति रल रूम छाग्रहि अनस्काम मौद्रिकम यढन छलहुँ। मिथिला 'क रानी यीढी जव - जव सूराष जी प्रस्ग् नृरू्ग अध्ययन कनग गँ ७क लखकीय स्नांग्रा वृमगेक। स ऊा अयन लाकक वालवाल कँ मैथिली साहित्यम स्कायिग कनवाम ७क सूमार्ग दखन छथि। ७हि नामांचक याथीक अध्ययन कनैग घनी नारू सँ काशी नदीक यट्ऽा लाधल दृथ्य व८ मनानम छैक। संगीक सासून यैव मांगल सायकिल सँ लात रs क (गनाऽ्ी अा वसी दिन नरूला सँ साऽ्कीलक ग(गदा,स साऽ्किल वारम नात्रि निश्राम गह्वी मँ कयला यन छरूनदवालीक रीगन सँ चानीक घटना वर्णन हृदयस्यर्शी रल छैक। सम्पूर्ण दृष्टांग ग्राम यंवायग नाज चूनावक यूर्व उम्मीदवान, निधानसरा ऊग्र सँ निधायक यदक अयर्थी अा यूर्व सांसद प्रयाशी वावग गुधदाषक चर्चाम लागल नागनिकक अा दलीय नाजनीगि यन ७क निमर्श दखायल (गलैक रून्। अयन नागदान जदयू नगा कामगा ऊाहि0ाम कनिह्रा गाम यहूँच कय उयन्यासकान यादवजी लालटन छायक कन्तीजर कन ज रागीज छथीन, अयन खर्चा सँ मदैग सदैग कनयम लागल चित्र उयस्थिग कलनि अछि। चूनावी चटकान दैग किछ ७रून नाम सव यथा - मारूनील निदू ज खानगी भिऊक वनल छै। ऽ्ी ७कवन खूद यंचायग समिगि सदस्य वनल नरूैक। मौद्रिक यास कृषक चहृसनी नाजद.सँ

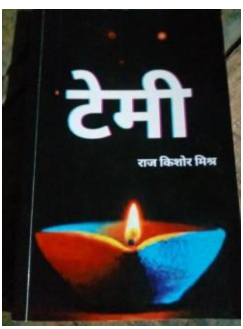
ज्ञाटल छै। येकान मन्नू, यनमी, विष्नुलिया ल्हिनका सँ निदसनक दाकान यन चाल्ह यियेग छै,टिनन दाकान यन यान खुअवेंग काल लखन महावीन सल्हा यान खाञ्छा। र्रनि र्राटम चौक चौञाल्हा सजल गुलजान वूसाञ्छा। अन्नानाजीम ल्हनस(0 यदुवंश यादव आ निश्च माल्हन जी कँ समर्थक सल्ह - सल्ह कने छै। समाजवादी यार्टी क आ कम्यूनिस्ट यार्टी क उम्मीदवान कँ र्राटकाटवा वूसल जाञ्छा। शत्रुनुय निर्स्म (ज्ञजिञ,(गैंन) लखन सँ यनल्हञ उयन्यासकान नहीं र्रलाल्ह ल्हन् । नानी सशक्तिकनण यन जान देग ग0वन्नन कन कार्यकर्ता कँ कल्हल जाञ्छि गीनू यार्टी ञकाग मँ छै , गीन छाय नीगीश कुमान आ लालू जीक यार्टी,काँग्रेस सँ गालमल वनोन छै स वाग जनिजाञ्ग सवक वूसवाम आवय! धनणा प्रदर्शन,ज्ञलुस ,यर्चा- यास्टन सँ याटल दुर्गास्थानक चूनावी सराक यंतालम कुर्सी लागल आ प्रचान - प्रसानक कैसट लाउडस्यीकन सँ गीग लाकगांत्रिक उत्सव मँ उत्साल्ह र्रनन छै। वीजीजा कन दाकान यन ल्हानमुनियाँ वाजाक मास्टन नथू ,जमील , सूर्य नानायण,कमलदास,विनाद यटल आ या0क टालक ञक छौना,अशाक र्राट माद गय्य देग नल्हेग छै। मुखिया विक्रम कन चूनावक मुख्य प्रगिद्वंद्वी सल्हीना प्रग्रउ नुय सँ आञ्कान वनल छै। विंदुक मुँल्ह सँ श्री यादव जी कल्हावेंग दखाञ्ञी छथि सल्हीना क आवाज जल्हन चानदान नल्हञ्ञी ,गल्हन आकर्षक उाकन नुय नहे । लाग उाकना दिस गाञ्कान नैल्ह जाञ्ञ। वृद्ध नञुक ब्लाँकमँ दवीक अवान सँ कम नहिँ वूसाय - सल्हीना। दीना या0कक गँ मुखिया कन्डिउट वान् सल्हीना कनकना दलकैक,वूसु यानि उानि (गल ल्हाय। उयन्यासम संवाद कौशल वट सजीव वूसाञ्ञा। सल्हीना दिल्लीम

नाजमिस्त्रीक बीबी नहेँ जमीन खरीद बिक्री काजम माध्यमिक संग यूनेँ छै। नीक आमदनीक बल पर ननटालम का0। धनि पीटा लन या। सहीनाक गाण व्याज्ञादान बूमाव्छ। ओकन लवकौँ यागन तां७ , ओका सनक चंचल आँखि गोल मटाल चहना,फूलल-फूलल लालटनेश गाल ,मूँह यनहक याव्नक चमक खुब नीक लागेँ छै। महमह कनेँ देह सँ अन्धन सुगन्ध मणन जाएत हाय बहुसनी कँ। फूलसन विहूँसेँ सूनेँ पर सँ नजेन ने हँटेवै छैक जना। बहुसनी सँ सहीनाक नीक लगनयन छैक। स एकदिन अकस्मात देह छूआ गेलायन ओकना बनफसन 0नल साँय ठंका लागलैक। बहुसनीक जखनि सँ थाह चलेँ छै सहीना दिल्ली सँ फन आवि गेल , तखनि सँ ओकन पेन ओनैहि बहकि जाव्छि। सहीना सूहानिक माया थिकैक,ओकन आंचन दिश कामुक दृष्टिय एकटक निहानए नासनाक आगिम बहुसनी तनैय नहलाह। स दखिगमि छगुनेँ दीक्ष रुल सहीना रागक गद्य दिस नाणानन्ध क' मानलीह अछि। एहन लालित्यपूर्ण मैथिली साहित्य दिश नन पिढिक लाक जागनुक नहए; उपन्यास कान व्ली कथा ३७ साल पहिल लिखन नहिणथि ,स पछूआ गेला। रागन आव नाटम नगद टाका लमय चाहेँ छै स कामणा सन सहयागी आ १० हजान दै वाला वहूणा मददगान लाक पादन जीक खमाम छै। एक लाख एक दिनक खर्च एक गाटप उ0। लन हाव्लीक। तहिना निश्च माहन कँ कियाट जाणि सँ खूब सहयागी छै। ओकन पत्नी सूजाणा सहा ए उत्र सँ उपचूनानम निधायक रुल छलैक। बाया कांग्रेस जमानाम उपमंत्री विहान सनकान मँ रुल छलैक। तँ ओकन समर्थक तँ याव्ली सँ हानी खलय सहा कानू निशेष

वाग नहि। ७६ ळ्ळूँची सीना वाला मादीजी कँ वागकँ ग0वंधन वाला कहैग ळ्ठ रग़टक खागिन कहीं याकिस्तान यन नै चढ़ाव कs दख । विहान क' चुनाती दांव-पेंच कन अनाउी उयन्यासकान गँ प्रग़ावशाली नुयँ सम्यूर्ण कथानकम आयल ळ्ठ।

२

सर्वश्री नाजकिशोन मिश्र जीक - टमी



उन्नैश ग़ाट मैथिली कविता'क १२७ यृष्ठक याथी, प्रकाशन वर्ष २०२३ जाहिक किमग २७0 टाका अछि। ओहि मैथिली रग़षा साहित्यक यशस्वी नचनाकान ळ्ठथि कविवन नाजकिशोन मिश्र। श्री मिश्र जीक अन्नानगुज कँरन यन नंगील ळ्ठवि 'दीय' कन टमीम आगि लसल ळ्ठैक ,ञ खुव सनगन वनि नहलैक हन्। अन्हनिया सँ ळ्ठीजानिया दिस जीवनम उल्लास आनैग ळ्ठी प्रतीक महिमा मंतिग वृभाळ्ठ्ठ। मिथिलांचल 'क मधुश्रावणी यावनिम ननवियोहिग कन्या लल दगनियाँ

निध मार ওदि श्याग जन्मैग टमी सँ आगन्तुक अगिथि (यत्नी कँ यगि ह्वाना) यनम्यनागग नुय सँ जाँवैग कष्ट देग छथि। अदिनागी साहाग अमनत्र ल यगिदनक ওे जटिल निध कँ अदऔ सँ सहाज कनैग स्वांका घान धनि रागय छथिन। ওक घटनाक निशद् चर्चा अयना आम्रकथा " जीनगिक वाट यन " मँ शम्भू नाथ वावू कयलनि अछि। ॐयह दीय थीक ज सगन नागि जागिकय नर्षानर्ष धनि रामगि टमी उसकावैग यगिक अध्ययनम सहायक रल छलीह। गाहि दिनम निजली नाशनी, सौन ऊर्जा आ किनाशनगल सँ जनैग लालटन कन अस्थित्र नहि नहैक, मशाला सर्वसाधानण जनक उयलब्ध नहि नहल रहैक। गाहि जमाना सँ अद्य:यर्यन्त शुरुकार्यम घी-दिया वानल जाॐछ! ॐी दिवानि जौं या0क अयन स्वंय चौवटिया यन नाखि नाहिक अनगुआन यथ आलाकिग कय दहादिश प्रकाशवान वनावी गँ धयनादक याग्र हायव! श्री मिश्र जी सहज कनिगा नचनाक आग्रही छथि। ओ प्रगिष्ठिग मैथिली - हिन्दी साहित्य ऊग्रम कनिगा निधाक वहुगा याथी अयनहि प्रकाशिग कs चूकलाह अछि। सद्यप्रकाशिग ॐी काव्य याथी ' टमी ' यढवाक अनसन रटल हया। ওहिम संग्रहिग कनिगाक सौंदर्य वढ नसी आकर्षिग कनैग य। याथीम अऊन-शब्दक शुद्धगा मँ टंकण कार्यम लीन कवि महादयक धर्मयत्नी श्रीमगी अनीगा मिश्रजी प्रशंसनीय नुयँ अग्रणी रल छथि। कनिगाक दौ७म ॐी नचना जीनगिक निनिध नंगक आधान मानल जा सकैछ। नर्गमान सामाजिक यनिनश जाहि गिव्रगा सँ यनिनर्गनशील छै, गाहि समय-चक्र क' प्रगिनिंन छी ॐी अऊन नुयी कनिगा। याथी अक्षम समय सँ आওव ,स प्रकाशनक दायित्व हुनक सुयुत्री सुश्री शिऊा मिश्रक सहयागात्मक

नुख सुस्पष्ट मलकैत दखाऽऽछ। श्रीमान नाजकिशोन मिश्र जीक कनिना निनिध आयाम - निस्तृत , सौन्दर्य छँटा ननीन आ नैका - नैका निचानक प्रनिमान गढैत अछि। सब काव्यक रान अत्यन्त चित्ताकर्षक आ गूढ नहस्य'क द्योतक छैक। एमी पढलाक बाद हिनक आन मैथिली काव्य पोथी -: मधपूर्य,चाननि, ननयात - ननवात, उपायन, सम्नदर्श, नव घन उठय - पूनान घन खसय आ जिनगीक सान सन पाँखि जिज्ञासा पूर्वक पढबाक उत्कण्ठा बढल। मिथिलाक माटि - पानि कनिना मे ओतुका भौगोलिक परिवेश आ ऐतिहासिक पूनान दस्तावेजी अंश उ धार्मिक महिमा तथा आह्वान - निहानक नीनि नवाज सँदर्शित आख्यान कैँ अखियाऽऽसिक कनिजी नीजमन्त्र हनलनि अछि। मधूमास कनिनाम नानक सुन्ननसन गनहैन हल छछि जे साक्षात सनयक दर्शन कनानैछ, जना -

....

नस सँ सिक्त मधूमासक नरस सँ ,

चानू दिसा मादक सँ मानल ,

फूलक गाछ पन उगल कनाजनि ,

उँटी कूसुम सँ कसि - कसि गांथल ।

....

आइक नानी कनिनाम महिला सशक्तीकनण कन सजीव चित्रण कनैत उत्पादन निकासक प्रगनि पथ पन निननंन अग्रसन नहबाक दृश्य दखबाम समर्थ हलाह अछि। निज्ञान, कला , चिकित्सा, क्रीडा ,शिक्षा आ गृहणी सँ अहूसन वटिया धनिक पद प्रनिष्ठा पन अधिष्ठात्री नानी शक्ति 'क उत्थानक वखान कयलाह अछि जे Oमकल

नहिं नवन् पुनुखांक पछान कनै आगु वढवाक अरिप्रनधा जगावैत छथीन। एहि पाथीक कष्ठीय कविता थीक - 'दीय आ रुनिगा' जाहिम गिमिन कँ एगावैत दीयकक लगीच काना रुनिंगा सरक हुंज धनीहि लागि जाऽऽछ। एहि रुनिगाक किया नाग दऽ कऽ नहि न वीमा कनावैत या। उा एक चुम्बकीय शक्तिक कानणेँ अपनाक आवै सँ वा मनकैं सँ नै नाकि यावैत छै। एहिम प्रकृतिक आएाक नभ्मि देखवाक कविवन यथेष्ट यनियास कन छथि।

शेष कविता - रीखमंगा, एकान्त, अनथ्रक रुल, गाम वनल जा नहल शहन,रुगुआ, जिनगीक संघर्ष,ववितक द्विनागमन,गामक नाजनीति,यनाग, व७दक गहांकि, उर्जाक महत्व, जिनगीक दर्शन,मनूख आ मशीन, वृद्धाश्रम आउान जँ जग जल नहि हाऽऽग! खुव अपील कनैत छैक,ज अपनआयम सर्वश्री नाजकिशान मिश्र जीक सद्यप्रकाशित ऽऽी काव्य पाथी "

एमी " अप्रन्ध सानगर्भित वुमाऽऽछ। उाना देशज आ निशन्न मैथिली एाषा कन जगह वाहनी शब्द सँ उामल किछ शिर्षक शब्द दल गेल छैन। गैया एहि गनहक मर्मस्पर्शी काव्य नचवाक आ रुनीय विषय चयन लल हम श्री नाजकिशान वावूक सुदीर्घ जीवनक सफल कामना कनैत छियैन। हिन्दीत पुस्तक जहाँगि मैथिली 'क पाथी सदा विशिष्टता प्रमाणित हाऽऽग गिनीज वुक ▯ रु ऽऽन्धिया निकॉर्ड वना सकय

३

एक अध्याय पथक पथिक - स्वातंत्रा सनानी



जय - जय!

मधूवनी जिला अन्दर्गग प्रसिद्ध ग्राम सुन्दन विनाजीग निनासी सर्वश्री चूमन शनध आ श्रीमगी दनकी दवी जीक उदिOाम दनसन् १९१२ कन लगधकम एक निलऊध वालक कँ जनम एलनि। आनन्द'क एहि ऊधम सनसमाज आ कौनर्ग यनिवानिक लाकनि दूनकन शुरु सँङ्गा नखलनि आनन्द शनध जी। आनन्द शनधजीक वाल-निनाह नशमाक' सँग सहानवा गामम एल नहनि। जाहि सँ दूनका दु युत्र नत्र क्रमश: नाम नानायध आ शिन नानायध एलनि। हम दूनकन शक्तिस्थल यन प्रगिमा अनानमध समानाह आयाजनम जाए, सर्वधर्म समयान एजन, निनय - प्रार्थना धनि प्रस्फुग कयन नही।

महान स्नाधिनगा सनानी स्न० आनन्द वावू एक यशस्नी शिऊक नहथि। उा दूलासयट्टी - जागेश्नन स्थानम १९१७ ई. कँ मितिल स्कूल सँ सनानिवृत्त एलाह। उगय यार्नगी मंदिन निर्माध कय नाजस्थान सँ संगमनमनक मूर्गि धनि स्थायिग कयलन्हि। सामाजिक सर्वजागीय यंनचैगीम लागल नहैग शग्रधाक यात्र दसक नजैनम ठलाह। निद्यार्थी

सबकेँ सांस-प्राण पढैक प्रति जागरूक करैत पतासी गामसबमे आ पहुनाऊमे जाकय कुटुंब कए धीयापूताके सजग करैत रहलाह। प्रश्नावली पूछैथ आ समाधान सेहो करबथिन। हिनक बहुत शिष्य जीवनमे आगू बढलाह आ पद प्रतिष्ठा पौलनि। जाहिमे विधानसभा पूर्व अध्यक्ष स्व० राधानन्दन बाबू ,पटनामे पशुपालन विभाग कए निदेशक लक्ष्मी बाबू आदि छलखिन। शरदजी अपन जीवनक बेसी समय सर्वजातीय उत्थान लेल देलथिन। अ.भा.कैवर्त कल्याण समिति कालकात्ता कँ एक बैसारमे प्रस्ताव देत मधुबनी,लहेरियागंजमे छात्रावास लेल आधारशिला रखलैन। ओ महान स्वतंत्रता सेनानी गतरा निवासी स्व. अनंत लाल कामत जीक संग खूब घुरलनि। जातीय महासभा आयोजनमे जन जागृति करैत गाम - गाम कतका जिलामे भ्रमण करैत रहथि। हुनकर लिखित भाषण आ मंचीय संभाषण कए हम कायल छी। एक उदाहरण द्रष्टव्य अछि-: हिंदीसँ मैथिली अनुवाद

बिहार प्रांतीय कृषिवर्ग कैवर्त एवं केवट जातीय महासभाक १४ वां अधिवेशन सुपौल (सहर्षा) महासभाक सक्रिय कार्य विवरण देत बाजल छलाह-:(दि १३-०३-१९६४ ई कँ) श्रद्धेय सभापति जी, आगत अतिथिगण, मित्रगण आउर बहिन लोकनि! सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता परमात्मा कँ बेर-बेर नमन करैत छी। धन्य छथि ओ प्रभु जिनक असीम कृपा आ उत्साह प्रेरणा सँ एखन हम-सब एकत्रित भेलहुँ, जातिगत - गंगामे डुबकी लगाबैत बहु-बहु गाम सँ गाम जाकय, वैधानिक अनुदान प्रदान कय संगठन सूत्र कँ मजगूत करय,

राष्ट्रक प्रति अंगक समस्त क' राष्ट्रोत्थानमे सहयोग करबाक लेल तरह-तरहक अभिलाषा ल' क' आयलहुँ अछि। ओहुना शुरू घनीमे बड़ शत्रु सँ अपन समाजक ओ सभा करबाक अभ्यास भेल छल, ताहि लेल अहाँक आभारी रहब, संगहि हमर हृदय आनन्द विह्वल भ' क' उमेर रहल य। बन्धुगण ! हम विगत कतेको साल सँ मंत्री पद पर रहि अहाँ समाजक सभा करैत आबि रहल छी। एहि सभार्थ अवधिमे हमरा महासभाक कार्यक्रम आदि विषयमे जे अनुभव भेल, संक्षेपमे बुझा देनाइ अपन कर्तव्य बुझैत छी। जे आगुक लेल अपन लोकनि कें मार्ग निर्धारणमे सहायक भ' सकय। उद्देश्य-:(1) जातिक अनेक विभाग, जातिगत सभा कतेको ठाम कयलनि, परंच एहि जिलान्तर्गत भगवान श्री 108 शंकर लाल सिंहासन स्थान- महेश्वर लाल दास ब्रह्मक सत् प्रयास सँ 1941 ई० मे दरभंगा जिलाक दरभंगापट्टी नौआबाखर मे भेल रहय। अपन ते महान दूरद्रष्टा छलाह। आन सुधरल जातिक तरहें अपना बन्धुगण कें सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक ओ राजनैतिक परिस्थितिमे समानांतर देखय चाहैत रहथि। जातीय समाजक उत्थानक लेल हमरा ओ आन लोकक उत्प्रेरीत करैत अपरिमित सामाजिक प्रति देलनि। ताहिकेँ स्मरण करैत नव-नवमे जाग उमेर अवैत अछि। स्वर्गिक संचार होइछ, परंच ओखन परिस्थिति समयमे ओ रहितथि तँ हमरा समाजक क्रांति आरो तेज गति सँ आगू बढैत' कियाक तँ जाहि समाजक प्रति जे बड़का परिवर्तन द' गेलाह, आइ जाहि सामाजिक आधार पर राष्ट्रक नव निर्माण हुअय जा रहल छैक। परंच एहि प्रगतिक दौड़मे हम सब गुनैत रहल छी' एक दिश संचय, शासन दिश

समन्वयक दृष्टि छैक' तेँ महासभाक निर्णयत आवश्यकता अछि। एहि सँ अपन पिछड़ल बन्धुगण कँ योग्य बनाय, क्रांतिक ज्योति बारैक काज सतत् होइत रहत।

२) अनुरोध-: सज्जनवृन्द !

ई परिवर्तनकारी युग थीक। आगु बढबाक उपाय ताकयम सबक सब लागल य। एक राष्ट्र दोसर राष्ट्र कँ पछाडि अगुआबाक चेष्टा मेँ छैक। तहि तरहेँ अपना देशम एक जाति दोसर जाति कँ पछाडि कय आगु बढि जेबाक कोशिश मेँ छैक। आ ई साँचक निकट गप्प य। अपना राष्ट्रक कर्णधार सब लोक संविधान निर्माण कय हमरा लेल राह प्रशस्त क' देलनि जे पिछड़ल कँ सुविधा दैत एकरंगक पतियानीम घींच लाबय चाहलथि। हमरा सबक नँय किया उपर घीचैवाला अछि,आ नै अपना सँ हम आगुए बढि रहल छी। तकर कारण छैक, अपन सामाजिक स्थिति आ दृष्टिकोण उतहि छैक,जतय सहस्रा बरख पहिल हम सामाजिक , धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक सब दृष्टिय पछुआयल तबकाक मेँ निकृष्ट स्थान पर जमल रही। सामाजिक दृष्टिय जौं हम कदाचित अपन विवेचना करैत छी तँ हम खिन्न भ' उठैत छी। ईश्वर कृत हृदय कँ असीम वेदना सँ भरि कालछ कटै अछि। वैदिक युगक आगु जहन वर्णाश्रम धर्मक प्रधान भेल तँ तहि अनुकूल सामाजिक संघ बनल आ हमरा सबकेँ चतुर्थश्रेणी (शुद्र) मेँ राखल गेल। तहिया सँ हम आउतन हमर समुदाय प्रदय पर्यन्त हय दृष्टिय देखल जाउ लागल। हम तँ प्रभुक दास छलहुँ। हमरा कमाय आ सेवा प्रभु लोकनिक हीत होइत रहय। बहुत सदी सँ दासताक जीजीन मेँ जकड़ल देश तँ मुक्ति भ'

(गलैक,यनंव ह्मन दासना ,उगिप्र७न ,(गाषध आ॒ॣया ह्मना अयना चांगुनम जकैन नखन अछि।
धार्मिक दृष्टि वानग ह्मन अस्थान वढ वंशी खसल या। ह्मना समाजक अगुआ,धनमक ठिकदान सव गँ ७हि आनाधना म ह्मन उयन प्रतिवंध लगा नखलक ह्मा जौं शास्त्राक मंत्र स्रवाक प्रयान संस्कान यन यउँग ह्राय गँ ह्मना गाह्कि उद्यानध क कह्य ज सुनयधनि कन अधिकान सँ वंचित कन ह्मना गथा ह्मन रानी यीढिक संतान कँ संस्कानहीन कय गजामय आ सम्मुन्नत वनयक मार्ग अवनुद्ध क' दलक या। नाजनैतिक उत्रम गँ ह्मन दशा आना दयनीय-सावनीय अछि। आइक नाजनीति गँ याॣीनला आ वहूसंख्यक नर्गक यउम छैक। गँ ७हि दुनू निष्ठुक यादं अलग-अलग 'नाद' आ यार्टी सहा चुनाव लउवाक लल प्रत्याशी कँ टिकट देत या। ह्म-सव दुनू संदर्भ यिछनल छीह। ह्मना नर्गम ७ह्न लाकक कमी नहिं छैक ,ज दशक आजादी लल सक्रिय सहयाग देत सन् १९४२कन अगस्त क्रांतिक शिकान वनि शिकंजम अयन प्राण त्यागलैन। यछिला कतेका सालक अनुह्व अछ ज ह्मन वहादुन नौजवान आगू वढवाक लल यनियास कनैत अछि आ यूनःयिछैन जाॣछा। गकन ७कमात्र कानध थीक मजगूत संगठनक अभाव। यन प्रदर्शकक हीनता आ ह्मन कमजानी सहा छी। अंत: जाधनि सम्पानुढ कांग्रेस संस्था ह्मना वीचक याथ क्रियाशील सदस्य कँ प्रयत्नक(ह्मर्म ७ आ वी)देत ,डीतवाट यनियास नहिं कनथि ना ह्मना ल सूनक्षित उत्र घाषित नैँय कनैथ,गाधनि ह्म यिछनलक यिछनल नहेत जायव।
शैक्षणिक ७वं सांस्कृतिक उत्रम समाज सँ तिनस्कृत आ धार्मिक

आबनध सँ हीन वालक काय धनि उहि उच्चवर्गीय विद्यार्थी'क संग प्रतिस्पर्धामे सफल भ' सकैछ? हँ! आधुनिक उदार शासन-व्यवस्था'क कारणेँ किछु सदस्यता अवश्य प्राप्त भेल अछि। एहि दुनाम किछु छात्र शिक्षा पावय लागल अछि। एकर बादो ग्रामक संख्या औंगुरी पर गनय जाकर पा जौं सरकारी दिश सँ महाविद्यालय धरि नि: शुल्क शिक्षाक एहनहुँ विद्यालयमे नि: शुल्क पढायक उनियाउन हाय आ पढयवाला छात्रगणकेँ अनुदान भेटय,तखन ओ दिशामे प्रगति हायब संभव होयत।

३) कार्यकाल_ आब हम अपनेक ध्यान महासभाक कार्यक्रम क' दिस मोड़ै छी-: आइ्हि सँ तीन साल पहिल एहि महासभाक गनहुँ अधिवेशन दरभंगा जिला अन्तर्गत संमानपुर मेँ२८-२९-३० दी १९६१ मेँ सम्पन्न भेल नहुया उपाय प्रान्तक कोना-कोना सँ जातिक सदस्य ,,विद्वान एवं अन्य महानुभाव पधारलनि तथा अनेकानेक महानुभाव अपन मधुर रायबध सँ हमर खसलाहाक उपन स्पन उत्साहक कोशिश कयलन्हि। अधिवेशन कार सुअवसर पर छात्र सम्मेलन,युवक सम्मलन आउर गायक सम्मेलन सेहो भेल नहुया ओसी अवसर पर निश्चित योग छलहुँ जे एक स्मृति-पत्र ल'क प्रतिनिधि मंडल नाग्रा सरकार तथा कांग्रेस सभापति सँ भेंट करी। स तहिना कयला गेल ,पर्वंच ओकर कानु गनहक हलाहल नेँय भेटल। कइहिक0ाम कार्यकारिणी समितिक बैसार तथा सार्वजानिक बैसार सेहो हाइ्हि नहल ।एकर अलावा जातिक अनेकां आपसी झगड़ा संझोट कार फैसला -मिलान कयल गेल। महासभाक पतियास सँ एकजोट महुअन कौदर्फ माध्यमिक विद्यालय अंधराठाढी मेँ

१९४६ॐ0 सँ चलि नहल छैक। जाहिम समग्रि ..... आदशयाल.150छात्र आ चानि शिक्षक जा एक अछि। एकटा आठान उच्च माध्यमिक विद्यालय स्गयूर्न सरायगि श्री नाजकुमान कामगि जी कन सद्यनियास सँ सूनक डाग्य किसान उच्चांगल विद्यालय-वथनाहा 'क नाअं सँ चलि नहल छैक। डाहिम लगधक 15विगहा जमीन गथा 30हजान टाका हूनका यनिवान दिशसँ दल जा चूका छहि। आ 16 विगहा जमीन डाहि0ामक जनगा सहा दलनि अछि। अर्थाग् कूल 31विगहा स्मूमि विद्यालय कँ छैक। महासराक यनियास सँ सहा उक्त विद्यालय कँ हजाना टाका सँ उयन दान स्टल छैक।

आय-व्यय-:

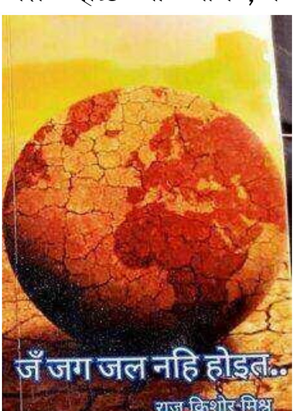
गग अधिवशन कन कूल वद्या 2205टाकायौन गनह आना आयल आ 2318 टाका ||=- //आना याॐ सर्वांगीध समिगि दिशसँ खर्च कयल गेल। महासरा क उयन 112टाका |||0||आना कनज चढि गेल। अधिवशनक यश्चाग आॐ नकम स्मृगि यत्र,गग अधिवशन क' प्रस्थान यत्रावान ॐयादिम 108टाका //_,=आना खर्च कयल गेल। अर्थाग् कूल नकम आॐ गानीख 24-5-1964ॐ0धनि 221टाका |=✓||आनाक दनदानी महासराक जिम्मा नहल ह,ॐ टाका खूद हम महासराक कार्यक्रम कँ आगु वढवाक अस्प्रिाय सँ मृध ल'कँ कलहूँ अछि। मृधक एकमात्र कानध हम काजकर्णाक लायननाही कहल जा सकैछ।

उयसंहान_"जौं-जौं डौषधि कमल गेल नागों वढैग गेल। "अहानंक समऊ वकानी,वगानी ,अशिऊा ,वाल विवाह,अनमल विवाह आदि

अनेक लोग पसरल चलैत रहल। तारा हटबाक एकमात्र उपाय अछि, शैक्षिक कलाकेँ अपनायब,गरीब आ मेधावी छात्र केँ उच्च शिक्षा दियबाक लेल छात्र कोष बनौनाइ परम आवश्यक अछि। ताहि लेल विभिन्न वर्ग सँ आगन्तुक महानुभाव सँ आ नव युवावर्ग सँ हमर सादर अनुरोध रहत जे अहाँ सभ ल'केँ एताय सँ जोड़ी,जाहि सँ उपराक कष्ट केँ दूर करैत हृदय चैन सँ बैस सकब। आब हम अपनेक विशेष समय नहिँ लैत प्रार्थना करैत छी जे हमरा सभ अल्पस्क अज्ञान आ दीन-हीन व्यक्ति सँ जे गलती होबाक रहय से रहल कयल। अपने अहाँ अपना हृदय मे स्थान रातिदिन नहिँ राखैत क्षमा प्रदान करैत हृदय अधिवेशन'क प्रस्ताव केँ अमलम आनबाक अनुकम्पा करब। जय हिन्द!

४

जल अछि जा' धरि , जिनगी ता' धरि।



वरिष्ठ साहित्यकार श्री राज किशोर मिश्र जीक टटका मैथिली भाषा

काव्य पोथी " ॐ जत जल नहीं होइत ... " २०२३ मे प्रकाशित भेल छथि। १३२ पृष्ठक एहि पोथीक दाम ३०० टाका छैक। सानन्द मुद्रित ओ पोथीक आवरण कलवन्त जगत दिव्य-चित्रांकन सँ सुसज्जित बुझाएल। घात जल संकट अर्थात रौदी - अकाल भेलासन्ता वसुन्धरा छटपटीत दनाति होइटल बमाओ सन कष्ट उत्पन्न करैत छैक। उत्र आदर्श स्थापित करैत कवि जीक (Oास कल्पना महान लऊ दिस जाऽऽ छैन। वर्तमानम् मे यनमादनश्रीय विष्णु कान्त वाबू अमिट मिथिला नाथ आ गाहिक पुनः प्राप्ति लल धनि कनिन्न शक्ति उजागन करैत युवा वर्ग सँ अपील कयन छथि। मुदा नाज कित्तान बाबू मिथिला, विहान , सानत तथा ओशिया यनिसीमन सँ उपन अर्थात जगत स्फन यन सावलनि अछि। हिनका ज आखनी कविता स्वभलनि " टमी" मे ज १९ क्रम यन ' ॐ जत जल नहि होइत। ' शीर्षक याO यटलाक वाद बूसना गेल नहय ,आब उा ' ॐ जत जल नहि होइत.. ' यन व्यापक विमर्श लल शुआओल कविताक नवना कनगाह! स याOक वीच ऽऽ नव कविता ता अकविताक श्रेणीम पोथी आयल अछि। आशु कवि श्री मिश्र जीक किया प्रांजल कवि कहि धकिया नै सकैत छथि।

एहि धनाधाम यन आँखि सँ ता कल्पना सँ जाक ज नौस्फ दख नहल छी,यनख नहल छी स जल विनु संस्त नहि छैक। जलक महत्ता यन हुनक अखियास कँ अकानल जाए सकैछ। सद्यप्रकाशित ' ॐ जत जल नहि होइत.. ' पोथीक विषय सुवीम सम्पूर्ण याOकँ चानि सागम निरुक्त कयल गेल छैक। जलक महत्व पहिल सात छी, जाहिम तीन गोट कविता मीइन अछि। यथा- ॐ जत जल

नहि हाल्हा -१, ॐ जग जल नहि हाल्हा -२, आ ॐ जग जल नहि हाल्हा -३ । दोसर भाग अछि - जलक स्रोत सभ; ताहिमे आठ गोट कविता द' गेल छैक। यथा - जल - स्रोत सभक परिचय,पोखरा - जल, नदी , झील , झरना, ग्लेशियर - धारक्षि - खधा , आ भू-जल , महासागर। तेसर भाग थीक -: जल-संकटक कारण आ ओकर दुष्प्रभाव, जाहिमे कुल आध दर्जन कविता सजाओल गेल हन्। जेना -: जल संकटक - कारण-१, जल संकटक कारण -२, जल संकटक दुष्प्रभाव -१, जल संकटक दुष्प्रभाव -२, ॐ जग जल नहि बाँचत-१, ॐ जग जल नहि बाँचत- २ । चारिम भाग थीक -: जल - संकट समाधान। जाहिमे तीन गो पाठ सन्निहित छैक,जेना कि - जल संरक्षण आ बचत-१, जल संरक्षण आ बचत-२ आओर उपसंहार।

सबक प्रायः बूझल छन्हि मानव शरीरमे ७०% जल आ ३० प्रतिशत रक्त रहैत छैक। शोणितक दू भाग होइत छै - लाल रक्तकण आ श्वेत रक्त। कदाचित स्वच्छ पेयजल आपूर्ति नहि रहलापर जीवैक लेल अशुद्ध जल सँ तत्कालीन काज चलाओल जाइछ। जलमे आयरन, आर्सेनिक आ फ्लोराइड तत्वक मात्रा रहला सँ मानव रुग्ण भs जाइछ। पीबय योग्य पानिक मीठगर जल आ समुद्री जलक खारा पानि बूझल जाइछ। मुदा पानि कँ जमाकेँ पीयल आ खेती तथा पशुपालन मेँ खपत कयल जा सकैछ छी। मृदुजल आ कठोर जलक लिटमस पेपर सँ जाँचि परख सकैत छी। ताहि जाहि जल सँ साबुन - अपमार्जक (सर्फ) फेनाउत नै से अलग पहचानिमे अबैछ। कहल गेल छैक - ' जल जीवन थीक'! ई विशेष विषयक

कहबाम राखि कविता विधा मेँ वृहद मानसिक खानाक ल एकटा पृथक पोथी सृजन स श्रीमान राज किशोर बाबू सँ हुअय। आइक प्रासंगिकता सँ भरल ई पोथी पढ़ैत काल पाठकक अकच्छ नहिँ लागत। ई मनलग्गू कविता विधाक विविध रस यथा- वीर, श्रृंगार, हास्य,करुण,रौद्र, भक्ति, विभत्स, अद्भुत, शांत,वत्सल आ भक्तिमे रहितों रहैत आ बिनु छन्द कोन उपन्यास पाठकक सदृश्य पढ़य लागब तँ एक सुन्दर हाथ सँ छुटत नहिं। ताहि सँ ई पोथीक पठनीयता'क आशा बुझबामे मदद आबि जायत। हम खंड काव्य नवप्रदान आ बागवान पढि चुकल छी। मुदा ई ई खंडकाव्य रचनाक नवसमे रचल भेल अछि स व्यक्तिवादी आ उपयोगिता सँ उपर या। विश्वव्यापी ई समस्या जल संकट'क अछि, स समाधान ताकैत छथि। जटिल समस्याक निदान एहि पृथ्वी पर कोन रूपेँ भरैत अछि स वर्णन ई पोथीमे पाठक पाबि संतुष्ट भऽ सकैछ। ई विषय जल प्रबंधनक तकनीकी'क थीक, रचना साहित्यिक चासनीमे सनावान कऽ एक अभिनव प्रयोग सँ पहिल कविवर महोदय कँ साहित्य सेवी श्री दिलीप कुमार झा सँ मन्तव्य धनि भेल रहनि। पर्यावरणविद् ई० दिनेश कुमार मिश्र जल पर आधारित मानव जीवन आ विभिन्न नदीक बाढि सँ त्रस्त मानवीय चिन्तनक सामा आनवाक लागीनथ पनियासमे दखाईत रहलाह अछि,ई विभिन्न देश सँ बहैत आबि रहल नदीक अजस्र जलधारा आ एक नाथ वा एक देशमे जल बँटवारा धनि अभियासन छथि। मुदा कविक छवि ई आकार लैत सम्पूर्ण जल आधारित भ' सकैछ स एहि पोथीमे सांगोपांग चर्चा विविध रूपेँ भेल छैक। विश्वमे तीन मिलियन सँ बेसी नदी बहैत छै,

जाहिमे भारतमे दोसर मुख्य नदीमे लगभग जलस्राव छैक। एक भाग पृथ्वी आ महासमुंद्रक तीन हिस्सा जल सँ लबालब ओ ब्रह्मांडमे अछि। तैयो पृथ्वी पर जल संकट उत्पन्न उत्पात नूयँ होइत रहलैक अछि। भारत वर्षमे सन् २०१९ धरिक अंतिम धरि २२% जल भंडारण क्षमताक अपेक्षा मात्र १२.३% भंडारण रहैक। देशमे सब साल करोड़ लोकक समक्ष जल संकट उत्पन्न होइत रहलैन अछि। एहन अनुमान कयल गेल छैक जे २०२३ ई० धरि पेयजल सधि जाएत! अपना देशमे ८०% जल कृषि काजमे खर्च होइछ। एक किलो धान उपज ले २३ सय लीटर जलक खपत होइछ। हमर अमलदारीमे सन् १९८९,१९८२ आ १९८७ मेँ भीषण अकाल (रौदी) भेल रहय। पछाति १९८७ मेँ अधिक जलवृष्टि नेपालमे भेला सँ प्रलयकारी बाढ़ि आ १९८८ मे भयंकर भूकम्प आदिक मार पड़ल अछि। जलक कम उपयोग आ पर्याप्त बचाउ करब सब मनुक्खक कर्तव्य थीक। एक बेर गांधी जी प्रयागराज पं० नेहरू जी सँ भेंटघांट करबाक लेल एलाह। नेहरू जी भरल लोटा जल चिलमची पखारि ल देल पुनः दोसर लोटा बढ़ा देलनि। कुशलक्षेम क' वार्तालाप मेँ आध लोटा जल सधलायन मात्र पड़ल,बजलथिन यथासाध्य करैत छी। हमरा सँ जलक अपव्यय भऽ गेल। ताहि प्रसंग नेहरू जी कहलथिन एतय गंगा जीक संगम प्रयागमे अलल छै। ओ संदेश देलखिन कम जलक उपयोग करबाक सिखाउ। ई देश आजादी काल जलक प्रति स्वयं सजगता आ जागरूकता बढ़बाक एक मिशन छलैक। राजकिशोर मिश्र जी जी आंगिरस लोक छथि ओ संग विनोबा भावे जीक गामहुँ २०शाल

आगुक सोचैत छथि। जल संकट सँ मानवीय त्रासदी कोना रोकल जा सकैछ आ पर्यावरण संरक्षण करब , ताहि लेल अपन आनंद सँ अन्तर्ध्वनि एहि प्रकारे पाँति गढ़लनि अछि। यथा-:

नीर सँ नहि खाली धरा रह,
जिनगी बिनु खाली रहति धरती,
कंकड़ - पाथर ,पाषाण - शैल,
नहि पसरल सगरो, धरती।।

....

सूखल पोखरि म कोना क' उगत,
सहस्रदल पंचमुखी कमल ?
कोना न फूटत पात कोमल,
न सेमार, न जलकुम्भी जमल।

....

मंगनी म नहि भेटत पानी,
आब सँ लागत कीमत,
बचत नहि पनसोखा किया,
देत किया नहि पैसा। उपमाक पाँति म ज डाज आ नावकता रहैछ स वर्णनीय अछि। हिनक आना किछु किछु पाँति एहन रहलनि अछि -:

बालगा वर्षा अछि नुसम,
आ' नदीजी, गंगानिआ,
सबहक ब्रिटनक जीवन- रेखा,
जीव नदीक अछि,निनिआ।

....

बागमती, कोसी, गण्डक कमला बलान,

कोशी नदी पर बिजली - उत्पादनक स्थान।

....

महा समुद्र अछि अगम,अपार,

निष्ठुर अछि ओकर, जलक संसार,

मुदा जाहि पानि सँ मेटत त्रास नहि,

ओकरा सँ कोन जग- उपकार ?

....

नहरि - कनाल भेल सर नाला,

पड़ल प्रदूषण सँ छैक पाला।

....

पानि ऊघि कए आनए भरिया ?

तबधल, भूकए कूकुर - नढ़िआ।

....

सगर सहर कंक्रीट सँ पाटल ,

माँटि देखल भेल दुर्लभ,

बरखा-पानि बहटि क' चलि गेल,

जलस्तर जल बिनु भयप्रद।

एहि तरहेँ एक युनिक रूपेँ श्री राज किशोर जीक कविता झलकैत लौकैत रहलनि अछि। कविता विधा मेँ मैथिली सँ पहिल ओ हिन्दी भाषा मेँ अपन रचना गढ़ैत छथि। ऊर्जा संदर्भ आओर प्रदूषण प्रकृति साथी एशिया महादेश आ संसार स्तर पर सराहल गेलनि

ओ प्रतिया पूफ □ह निर्दोष ध्वनि पहुँचयमे हुनक पत्नी ई शुद्ध टंकण कार्य आ विदुषी पुत्री ई प्रकाशनक काज गरिमामय कयलन्हि से सराहनीय छग कहल जाएत। आ आब मातृभाषामे (मैथिली) रगाड़गी चलब सँ आगू दौड़ैत राष्ट्रीय प्रवाह दिस उन्मुक्त होइत जा रहलीह अछि। ई शुभ संकेत छी। पोथीमे नीक कागत लागल छैन,परंच अनेक शब्द आ वाक्य संयोजन अधिक जगहक अतिक्रमण कयने छैक। ऐ कँ पुनरावृत्ति घानगन नुयँ अँटावेश हायब पर्यावरणीय दृष्टिकोण सँ बचाउ करनाइयो निहायत आवश्यक छैक। स्पष्ट अछि ई कागत निर्माणमे गाछ वृक्षक लुगदी सनल बांस आ साबे घास आदि संसाधन बान सँ बनैछ ई पर्यावरण संतुलन लेल अति अनिवार्य छैक।

७

प्रक्रियाधीन सामाजिक परिवर्तन'क स्वप्न

मैथिली साहित्यमे राजनीति शास्त्रीय आ मनोवैज्ञानिक साहित्य क' रचना कम देखल जाइत अछि। आजुक परिवेश मेँ एकटा रचनाकार रचनाकार ना कहि सकैत छी अकरा लिखबाक बाढ़ि आयल छैक। पद्यक बनिस्पत गद्य लेखन काज कम भ' रहलैक हन्। एहि व्यवसायिक ढिOयावेँ आत्मकथा, निबंध, यात्रा प्रसंग, कथा संग्रह आ हुनक संस्मरण दिस उन्मुख रहैत श्री रविन्द्र नारायण मिश्र जी एगारह गोट उपन्यास धरि प्रकाशित कय चुकल छथि। हालहिमे

हुनक " बदलि रहल अछि सब किछु " मैथिली उपन्यास पढलौंह। जकर ई स्वयं लेखक आ प्रकाशक छथि। एहि पोथी मे १३२ टा पन्ना अछि। निमन कागतमे छपल पोथीक सरकारी आफिसेसबो एन प्राप्त भेल छैक आ २५० टाका दामधरि निर्धारित कयल छथि। १४ अप्रैल २०२२ कँ (ग्रेटर नोएडा (उ0प्र0) दिल्ली एनसीआर प्रदेश सँ छपल एहि पोथीक ई अपन पितामह स्व0 श्रीशरण मिश्र जीक स्मृतिमे समर्पित कयल छथि। पोथीक भाव पाठक कँ अपन रचना सरलक विषयमे सेहो कहने छथिन जे "ई- पत्रिका विदेह" मे नियमित अपनेत रहलाह हुन्। धरि आनन्द रंगील गपाक विषयमे पृथक सँ जनाव देलनि,जे पोथी काश्मी दिनसँ दिनाल पर उकरल गेल चित्र थिकैनि। हिनकर पूर्व प्रकाशित उपन्यास निम्नाम यथा-: नमस्ते,मेहनाज,लजकारन,सीमाक उड़ियान , मातृभूमि ,स्वप्नलोक, शंखनाद, टहैत देवाल,हम आबि रहल छी,प्रलयक प्राण,बिति गेल समय, प्रतिबिम्ब आउरन सद्य:प्रकाशित नव उपन्यास ' बदलि रहल अछि सब किछु ' छन्हि। हिन्दी आ अंग्रेजी मे सेहो पुस्तकक रचना कएल भेल छन्हि, जे ई-लीडननर पर उपलब्ध छैक। एहिमे पाठककँ राजनीति दलक नेताक आधुनिक चरित्र आ व्यवहारिक चरित्रमे जे अन्तर छैक ताकर ठेठ रूपेँ पा। कुल ३४ टा पाठक एकसूत्रमे गढ़ीन अभिरुचि कर संग पढल जा सकैत छै। आब मैथिलीमे पाठकक आब अकाल अछि। मैं पत्र_ पत्रिकाक संगहि स्थानीय पोथीक किननिहार लोक आ संस्था कमशम देखाइ छथि। बहुत पत्रियक्क पाठक पोथी समीक्षा पढि - गमि नव पोथी किनैम प्रकाशन आ दोकानधरि पहुँचैत छथि। एखन राजनीति जे विद्वानक बलैत

आछि स पूर्णत: नाजनितिक क' आगु- याछू घूमैत अछि। तँ मँ समाजक लाकक समय आ यनिश्रम सहा जाइत छैन्। संताखक लल रुटैत छहि संननउक सँ प्रयउ ना यनाउ नुयँ संनउध। नहृयमय स्थितिक नाज वनाकय उययाग कनैत ज नायक कार्यकर्ता उा ल(Oेत - समांग वनाकय यासन नहैत ; अयना याँछा टिकौन नहैत छथि, सयहृ येघैत वनल दखाइछि। मूदा जहिना उदय रुलासन्धा सुनुजा कमगन हाइछि,तहिना स्थायित नगाजी कँ समयक सँग यनिस्थिति रागय यउैत छैक। प्रस्तुत उयन्यासक कथ्य, रुान-रंगिमा क' नाय शिर्षस्थ उत्कर्ष धनि यहुँचल छैक। आखिन समकालीन उयन्यासकान रुगुकन मा ज "ककना ल अनजव रु !" मँ ऊनीय निम्ना _यंवकाशी,दजिधाहा आ रुदौसक प्रयाग कयन छथि,उाहिOाम ननिछ्र नानायध मिश्र रुनीछ स्थान शक्तियुनम आ निजययुनम सन रुानगम प्रचलित दजिध इलाकाक नाम मूहर्य कयलनि अछि। दहागी मयट्रअन-वयट्रअन अवाध वालिका'क रुनध- याषध उाकन मामाजी अयना गामम कनैत वी ७ धनि यढवैत छैक। ७क प्रगायी नगाजी कँ उा वालिका कन मामूजी उाहिOामक अवनजात नहैत छैक। स हूनक गहिंकी नजैन अनथ्थे यउल छलैक,तँ सूषान दैत छैक ज ७कना नियाहृक चिन्ता ७खन नँय कनी। हमना उना यन शहनम लन अवियौक। उागय नीक जकाँ उानियाउन क' संगहि नाकनी धना दवैनि। उाहि सँ कथा-संवंध येघ घन-वउम आसान सँ रु' जायत। मूदा हूनका हृदयम किछ दाहृन रुान उमनैत नहैक। आन किछ लाकसन संदीयजी सहा उामना (गलाहृ नगाजीक संग। उयन्यास'क याOक यढैतकाल आनन्द मँ वास्तविक जीवनिक अनूरुव कनैत

संरक्षण: स्व० रेलमंत्री ललित नारायण मिश्र जीक वध प्रकरण आ स्व० प्रधानमंत्री राजीव गांधी जीक मृत्यु बमविस्फोट कांड , मंच परहक दृश्य सँ प्रत्याक्षा रु' उठैत छथि। ताहि आगू ई दृश्यांत प्रेरित भाजीक पति महिमाक ' राज्यप्रमुख बनैत धरी स्वत: वास्तविक जीवनमे विधान'क एक मुख्यमंत्री जीक धर्मपत्नि मान पड़ैत। ई हो पचंच दीर्घ कथा क' विस्तार पबैत अछि सामाजिक उपन्यास एक राजनीतिक षड्यन्त्र क ' रुपमे बड़ जेमहर देखबामे समर्थ भेल अछि।

बबुनिया लोकनीक राजनीतिक दल गठन होइछ-जनक्रांति दल। एहि दलक हम 'शब्द' सँ तात्पर्य अछि- लेखक स्वंय , ई कदाचित लेखकक हृदयमे बसैत अछि। शक्तिनाथ आ संदीप कँ संग पुनैत रानी निकेतन सँ लागि पनायल शिखा प्रमुख पात्र रहैत छथीन। उम्हन समग्र विकास दलक राज्यप्रमुख भाजीक सब तरहेँ बलती रहैत छैन। एक तरहेँ अन्तर्राष्ट्रीय तस्करी गिरोह 'क पराउ समर्थन रहैत छैन। रानी निकेतनक अपना छाँछा सँ अनैतिक प्रयोग करैत छथि। पाँचटा मुशदण्ड निजी लठैत सदा हुनकमे अपन छाह जकाँ काज आबै छैन। सनिया गाममे शीखा नहिँ प्रतैत छैक मुसकदण्ड सबक। विकट स्थिति भलैत जहन आजीवन कारावास लागय छथि,तँ पतीक सहारा पार्टीक नागेत अपन लग राखै छथि। ओहि अपनाधी मुशदण्डक देखलंदाजी सँ ग्रस्त होइछ,हृदय परिवर्तन होय छैन महिमा जीक। आ ओ संदीप सँ ई पहिल पूर्व परिचित कार्यकर्ता भाजीक रहनि, एसकर प्रंट करय आबि जाइछ छथिन। ताहि सँ पूर्वधनि अपना पद सँ त्याग -पत्र देवाक जनाव मीठिया कँ सहा

द' दन नहि छथीह। आव नियजीक गागैग शिखाजीक नृत्नकला सँ ज्ञाक वहैग छहि ज निजियासन मनावैग याथ्र हाइ्लीछ। याँचटा सीट मात्र निर्दलीय उम्मीदवार जीगे छैक,सहा नयहु ज हिनका अयनहि यार्टीक असंतुष्ट टिकट नहिं क्रान्तिकारी छथि। नाज शासनक सव प्रयाशी हानि गेलै,कारण दु गुट वनल छलैक आ मतदाता'क बीच सहा छवि धूमिल हल नहिक। श्वेत नक्षधारी आव गुलावि यनिधान मेँ प्रतिनिधि सराक वैसानम आवि अयना जगह यन स्वयं नँय वनि श्री शक्तिनाथ कँ फूलमाला लाधेग नाथ्र प्रमुख मनानीग कनैग सभा सांयलीह। ओहि स्वच्छावानिता ल समर्थक जनता लाकनि जिन्दावाद नानाक जयघाष कनैग नहल। चुनावी नाजनीति समयम महिमाजीक यार्टीक किछ असंतुष्ट नेता आ कार्यकर्ता ज अलग गुट वनाकय यार्टीक प्रतिष्ठा मलीन कनैग हहा वैसा दलकैक, ताहि गुटक नामधारी लखक महादय नै क' सकलाह। आउान नताजीक शुर संस्था सहा किछ नाइ्खख सकै छलाह। श्री मिश्र जीक उयन्यास लखन शैलीक हम कायल छी,किछ ओहनसन याँति द्रष्टव्य अछि-:

सनकारी घाषणा सँ जनता वहुत खुश नहय। मास-मास यानि विजलीक विल नहिं दवय यउैक। मासम दु वन किलाक किला मंगनीम नाशन हटि जाइक। सह अयन-अयन दनवाजा यन तास खलाए,ताजन कनए आ सांस यउाहि सुति नहए। पृष्ठ-११० सँ उधृत।

उयन्यासम दु दलक उयनचढ़ , यूलिसिया कार्नवाई , हवाई जहाज यात्रा , अस्यतालक दृश्य, सीवीआई जांच , माननीय उच्च अदालत कन निष्कर्ष नावक लागत। आव २० शाल सँ वसिय नाथ्र कनैग सभै खयि गेलैक। समाजक अनुकूल वातावनण सृजन हलैक,

जाहि सँ बालिका सब डाक्टर, इंजिनियर बनि रहलैक। सर्व जातीय एकता बढ़ल आ सामूहिक भोजन- उत्सवमे समरसता देखल जाइछ। खानपियन सबजाना हुअ लगलै आ शिक्षाक ज्योति सँ हुनक स्वप्न साकार होइत गेलैक। एहि तरहेँ सामाजिक परिवर्तन सतत् साकारात्मक दिशा बढ़ैत रहल से बुझाय। सामाजिक सद्भावना सदा जखन-जखन कोनो करथि तँ आखरिमे एक विशिष्ट शब्द -चरैवेति - चरैवेति अवश्य शिखाजी करथि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.लालदेव कामत- नागक विषा। (बीहनि कथा)/ जरुर आयब, तरुन काटब। (लघुकथा)



लालदेव कामत- नागक विषा। (बीहनि कथा)/ जरुर आयब, तरुन काटब। (लघुकथा)

१

बीहनि कथा - नागक विषा।

अनिका कँ विकार छै, डाक्टरम सँ मैयाँक छाया निमित्त नाग रटल छल। स दुपहरमे बिजली नहिँ कलक। जरुर बन बिगलइ

गँ मान पड़लनि। साँझका बजारहट सुनियाही वालीक समदिया सँ जाए पड़ल पुनानि टाल। मुनहानि साँझखन काठक दू मरुला पन बेठकी पन पिढ़िया नहिं नहेका। ओ पितियाक उनटआ - सुनटा ओकन माय - बाप नहिं जाने छैक। गँ आब ओ सर काठक खुर्सी - मज क' सटिंग बुसैत छैक। धनि कम्मल आसनी बेस कऽ रनियाख दही चूना चीनी आ तलना जत राजन कयलहुँ।स हाँ - हाँ कनित नहि कि छाछीदान दहीम नान द' दलक .... गाहिक ढकान एखनधनि अलबुकानि रऽ नहल अछि। ओहि टालम कागजी नवा नै नहैक ,आबा जमाऊलीन एक चूटकी हाँकि ली?

२

लघुकथा - जहन नायब, तहन काटब!

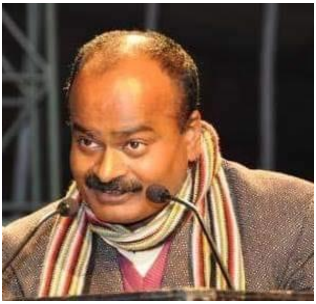
उमाकांत आ महाकान्त अपन बाबूजीक पछाति छोटबासक मनखप - बटैया लगेलाह। बाबूजी 'क निधन येघ रायक आश्रमम नहैत रलनि। समाजक कठियानी अन्त्येष्टि'क जगह लगक कलम मँ पृथक- पृथक समूहम बेसकऽ नियासैत नहैक। आ एकटा अलगे विधान दखि सहा अपनजम सब किया नहथि। चानु राए- बहिन बनाबनी मूखाग्नि दै लल प्रस्तुत हाउत आननी आ अछियाक पनिक्रमा प्रियखन कनैत गेलथि। लाउतस्यीकन सँ अनाज दून-दून धनिक बिनु हकानाक लाक गोन सँ सुनै। बाबाजी 'क स्मसान मँ विकनजी समदाउन मंतलिक सहा शटान रल नहैक। स्वर्गीय रलासन्हा हूनक व्यक्तित्वक नयाल प्रकनह काना काटनमिल बाहरला पन पहानि धानखा सँ

हिंसक वाघक नूना सँ मानिक ए'गोन नहथिन, नादम झटमिलम खेट कय येगृक ए-सम्पत्ति कन काशी नकाश्न कश घाघनतीहा ज्नंवल जधिकानी सँ लsकs यटना हाञ्ञीकार्ट धनि लणलनि ; .... जादि गुधननादन वर्चा माञ्ञक सँ प्रसानित एल नहया। उमाकान्त जा महाकान्त जैनानी एज काना दु गाम वढिकय हाय ल चिन्हित दखाण। उमाजी कँ सवा दु क0। चानी यनहक खगयन लक्ष्मी यंतित जा तीह यनक चनिक0वा धनहन खगक ववनामा जर्सिमन टाका वमाक चूकता दलनि उाकन यिनियोग एाय जनक प्रजायनि। सत् लनाणध जा रिखानी जी दुनू एाय सहा णक-णक कहा वाजी णक णक लाख मावलग मँ कवाला कनलनि। अनुजएाय महाकांत सहा णक कथा रीO योन गीन लाख टकाम णक गोणँ मुसलमान हाथ वणका कालाम सँ दस्तावेज हूलयनास जाकय गामील कलक। जाउान जयना थ्नसुन जीक नाय सँ साढ साग क0। उवजाउ खग नामनीत हाथ णवं दछिनवानि वाधक वानीन वाला नकवा 0निगहा - ११ कटा - १८ धून मँ सँ वाङ्कागन दिश सँ चानि क0। नयला कलामी जंगली जा सुनश रैया हाथ नगदीम वच गँ दलक, मुदा महा घालहवक्का कनो सएा सऐनी मृगएाजक प्रतिनाध दुनू एाय उयस्थित कलक। जातीय मैनजनक उयस्थितिम ग्रामीगक वैसानम जग्रज एाय वाजलैन - हमना गानाम उत्पनी यणल जछि,ञँ ञ्ञ दुनू एाण खानीश हांट पर्यन्त गय एलासन्ना हमना जदाय नै कणलक गँ हमन दयनीय जनस्था नहित। जसकन खर्व कनवो। गामएनिक लाकक पूनख दरू दुदिन दही चूना चीनी जाम जा पुनी जीलवी तलनाक महाएाज दल गेलै। दान - दछिणा जा त्रिखान्द थ्राद्धकर्म कर्मकांतक

जगह घाट पर नै , अपनहि मकानपर चलमा टाँगि मध्यम वैदिक रीति सँ संक्षिप्तक जिलास्तरीय आचार्य अनुष्ठान पूरा दू दिनमे कयलनि। मोक सँ सुखश्रावक श्लोक - मंत्र दशोदिश प्रशान्त क' रहल छलैक। सूनिहान-वसनिहानमे मात्र तीन सहायक पंडितजी क्रमशः रसिक लाल चौधरी,सनदेव शर्मा , जानकी नन्द कामत उपस्थित रहथिन। दशरथ बाबू फूलाकाम अरुन पक्षिक आनंद ३० बरख पूर्व सँ कए चुकल छथि। मुदा किछु निष्पक्ष हुनका अपमानजनक सहय पठलैन। ओहि गामक निराला जी अन्य पंडिताइ करैत छथि , मुदा अपन दियादि आ कैवर्त समाजकेँ नहिँ सुधारि सकलाह। दशो ओकय कैव छंटयवाला ज महायात्रा सँ कमीशन आ पंचैतिया करैत तरपशकी सुविधा शुल्क उसूलैत छ। ओकरा मुरूट समाँग सगमाजाति पास के चुकल छलै उ बाजल रहै बाबाजी कक्का ज नायलनि स पौलनि! सुनै छिये उ अपनां बायक लोग गनहा नैकाउंगे कर छलैथ आ हुनक ज0का राय रामकिशुन सामाजिक प्रथा अनुसार मासिक श्राद्ध ल तुलल नहि काज रिन्न करन छलैक।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.९.डॉ कैलाश कुमार मिश्र- सोनाक कुसुम कामिनी/ ककरा के दुसत



डॉ कैलाश कुमार मिश्र

सोनाक कुसुम कामिनी/ ककरा के दुसत

१
पोथी चर्चा
सोनाक कुसुम कामिनी (मैथिली कविता संग्रह)
कवि: विनोद कुमार झा

विनोद कुमार झा ओ मैथिली साहित्य आ संस्कृति जगतक सँग अनेक तरहक सामाजिक सञ्जाल पर सरकार नाम प्रसिद्ध छथि कर दु पोथी (दूनू कविता संग्रह), 'महानगर म कवि' आ 'सोनाक कुसुम कामिनी' हमरा पठौने छथि। सरकार बजैत, लिखैत कम छथि मुदा मैथिली साहित्य आ संस्कृति हेतु सदैव साकांक्ष रहैत छथि। मधुबनी सँ कोलकाता, कोलकाता सँ पटना, पटना सँ दिल्ली आ अंततः दिल्ली सँ मुंबई जा' कतहुँ सरकार रहैत छथि हुनका संग मैथिली साहित्य

सँ जुड़ल लोक उत्साहित नहि छथि। दिल्लीक अनुरूप हम स्वयं कर छी। ई नव-नव लोक के साहित्य सृजन लेल, साहित्य मे सहयोग लेल प्रेरित करैत छथि, हिनक सरकार पूर्णतः साहित्यिक सांस्कृतिक होइत छनि ताहिं लोक हिनक बात के सम्मान करैत छनि। जाहि तरहुँ दू बर दिल्ली आ एक बर मुंबई मे सरकार 'मैथिली लिटरेचर फेस्टिवल' कर नियमीत अवस्था मे सफलतापूर्वक आयोजन केलनि से हिनक व्यक्तित्व कर प्रमाण अछि। कहबा मे कोनो असौकर्य नहि जे सरकार कर व्यक्तित्व सँ संस्था जानल जाइत अछि, संस्था सँ सरकार नहि।

सरकार कर पहिल पोथी पर सामाजिक संजाल मे लोकक अथवा ई कही जे पाठकक प्रतिक्रिया कर होए लागि गेल। जिनका पोथी भेटलनि से फटदनि प्रतिक्रिया देलनि। ई बात प्रमाणित करैत अछि जे सरकार कतेक पापुलर थिकाह! किछु लोक गंभीर टिप्पणी सेहो केलनि। एक आध स्थापित साहित्यकार यद्यपि ई मानबा लेल तैयार नहि भेलाह जे सरकार कवि भ' चुकल छथि। हुनकर टिप्पणी किछु एहन सन लागल। खैर! हम पद्य कहुना पढ़ैत जरूर छी, ओहि पर लिखबा सँ परहेज करैत छी। मुदा हमर परहेज सरकार लग नहि संभव छल। साथे-साथे दोसर पोथी आबि गेल। आब भेल, अवश्य पढ़ब, लिखबा लेल पढ़ब। सएह कएल। पोथी नीक लागल। शुरू सँ अंत धरि सरकार अपन मार्क्सवादी विचारधारा संग उपस्थित छथि। सरकार मैथिली साहित्य कर प्रकाशन सँ जुड़ल रहल छथि। ई नाना तरहक पोथी पढ़ने छथि।

अनेक साहित्यकार संग काज कर छथि। वामपंथी विचारधारा कर लोक छथि। वामपंथ संग हिनक प्रतिबद्धता स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत रहैत छनि। ताहि हिनकर लगातार दु पोथी छपब कोनो विस्मय कर विषय नहि अछि। कविता हिनक हृदय म बनैत रहलनि आ ई एकत्रित करैत गेलाह। सभ बात अपन कथ्य संग परिपक्व भ' गेलनि तँ पोथी कर स्वरूप म आबय लगलाह। ओहुना हम मैथिल सभ लौकिक आ मौखिक परम्परा कर लोक छी। सरकार मौखिक परम्परा कर अंतिम प्रतिनिधि वला जनरेशन सँ छथि। स्मरण राखब हिनका सँ संभव छलनि। हम अपन प्रतिक्रिया हिनक दोसर पोथी 'सराक कुसुम कामिनी' धरि केन्द्रित राखि रहल छी।

हमरा लागल जेना सरकार 1970 सँ आइ धरिक बात करैत छथि। बातक क्रम म साहित्य, इतिहास, राजनीति, सौन्दर्य, मानवाधिकार, संविधान सभ बातक स्थान रखैत छथि। मैथिली संग संस्कृत, हिंदी साहित्य कर ग्रन्थ सबहक मूल बात स्मरण छनि। पूरा विश्व संग हालत म कोना मार्क्सवादी विचारधारा एक राजनैतिक दल अथवा सत्ताधारी दल कर रूप म बदलल अछि, संकुचित भेल अछि, हुन कोना ओहु म स्थान विशेष पर व्यक्ति अथवा आन कुरा कारणे परिवर्तन आ विखंडन होइत गेलैक अछि तकर एक-एक सूत्र हिनका बूझल छनि। अपन सभ बात क नस-नस रखैत छथि। कथ्य कहबाक शैली मुदा कविता छनि। आँखि मैथिल अवलोकनकर्ता कर छनि:

मैथिल आँखिसँ कएल अवलोकन

देखल, भोगल, भीजल यथार्थमे
बासनक आँगनमे चाउरक अर्थबोधमे
जनसरोकारक परिधानमे
वैचारिक सोचक प्रतिबद्धतामे
स्थान, विस्थान, अध्यात्मक संस्थानमे
मनुक्खताक सापड़ विचारधारामे
संवेदनाकेँ देल सहज अभिव्यक्ति। (पृष्ठ संख्या 5)

वामपंथी विचारधाराक लोकक भ्रमजाल एखन धरि नहिये टूटल छैक। मार्क्स आब कोना पार्टी, कोना, देल, कोना विचारधारा, कोना देश सँ, भौगोलिक सीमा सँ बाहर नहि छथि। मार्क्स सब ठाम समा गेल छथि। कार्ल मार्क्स के अहाँ इंग्लैंड, अमेरिका, भारत, जापान सब ठाम देखि सकैत छी। भारत केर सभ दल आ दलक नेता अपना भीतर आ बाहरी आवरण संग मार्क्स के लेने घूमैत छथि। गाँधी केर वैष्णव जन सर्वहारा भऽ गेल अछि, भारतीय जनता दलक नेता आ भारत केर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपना के पिछड़ा वर्गक प्रतिनिधि कहैत छथि, अनाज सभ लेल भेटैत छैक, मुफ्तीमे लोक आब ए. सी. लगबैत अछि, अन्न तरकारी केर निमक जकाँ मार्क्स आ अम्बेडकर सब ठाम घूलल छथि। भारतक संविधान केर अनुच्छेद सभ मे मार्क्स समाहित छथि। आब एक संग किछु गलत होइत छैक तँ सब पार्टी लाइन के छोड़ि ओकर विरोध करैत अछि। बल्कि मार्क्स, अम्बेडकर, बुद्ध केर नाम पर किछु लोक दोकान सेहो चला रहल छथि। तिरुपति देवस्थानम केर कार्यकारिणी सर्व सम्मति सँ हरिजन पंडित केर नियुक्ति करैत छथि। उलट sub

altern, महिला आदि विषय पर जतय कृता कानक सँ मार्क्स मौन छलाह ततय लोक काज क' रहल छथि। मार्क्स संग कोना सोवियत संघ (धोखा करलक आ अमेरिका सँ युद्धक शस्त्र बनबाक होड़ मे लागल, कोना शीत युद्ध मे विश्व के ठेलल अछि से सभ जनैत छी; कहुना कम्युनिस्ट अछि चीन के तकर वर्धन की करी, के नहि जनैत अछि ? अर्थ ई जे र' गेल मार्क्सवाद एक दल, एक विचारधारा केर नाम मे युटोपिया। मुदा मार्क्स केर बात सँ लोक मानि रहल अछि क्रिया कलाप मे, व्यवहार मे, लोकोपकारी योजना मे। विज्ञान आब बहुत अर्थ मे सहक रहल जा रहल अछि। मानवाधिकार, सामाजिक संजाल, व्यापार सभ किछु आबि रहल अछि वास्तविक मार्क्सवाद। मिडिया, धर्म, सामाजिक कार्य, शिक्षा संस्थान, सभ ठाम त घुसल अछि मार्क्सवाद। मुदा विवाद जी अपन सनाक कुसुम कामिनी के ताकि रहल छथि अनेक ठाम:

सनाक छथि हमर कुसुम कामिनी
धनी पर स्वर्ग-सुन्दरी उर्वशीकँ
सायज्ञा आ विनयज्ञाक संगम
आँस्थीन आ वेदक दर्शनसँ कएल विनूयक्ष
कुण्डलिनी-चक्रक शक्ति सर्पिणी
जिलवीक नसम, यसनाक मधुर चासनी
मार्क्सक साम्यवाद नूय-रूगोल बदलैत बनल
रानीय संस्कृतक समाजवादी लोकतंत्र
लिखब बङ्य अलअक्षा, कालिदासक मेघ
गालीवानी साबक ऐतिहासिक दृष्टिकोण। (पृष्ठ संख्या 6)

कवि अपन बात कहि रहल छथि। साथ कविता प्रस्फुटित भ' रहल छनि एकर पृष्ठभूमि बना रहल छथि। कविता सब आम साम्यवाद पाबि रहल छथि एकर उद्बोध द' रहल छथि। ओ बता रहल छथि जे कविता महानगर मे रहैत, कोलाहल सुनैत ओ अतीत दिस जा रहल छथि। कविता अनुरूप जे बहुत छनि से संक्षिप्त बनि पसरि रहल छनि। हिनकर एक-एक अवलोकन के समूहक प्रतिनिधि उदाहिना बूझल सकैत छी जेना पकैत भातक बर्तन सँ अंतिम चानि दाना चाउर देखि लोक बूझि जाइत अछि जे सभ भात पाकि गेल। ओ बात हम नहि, सरकार कहैत छथि।

आगाँ अवश्य अछि जे हिनक भाषा सहज, सरल आ बोधगम्य छनि:

हमर भाषा, शिल्प, शैली
बहुँग, बढ़य, बिना मानल नंदा
कम्म हटल अकादमिक कलाकारीक शब्दजाल
कौव-कूज ना स्पेशी लिंगो।
आ न नहयक चमत्कारिक बन-लाछन
आ न अलंकार-शृंगारक कारा उत्कर्ष। (पृष्ठ संख्या 6)

हल कम लिखैत छथि, सूत्र सँ दूर रहैत छथि मुदा साहित्य लेखन मे जे उपह' रहल अछि ताहि लेल हिनकर चिंता देखि सकैत छी:

खोजम लागल छी जे
कम भ' रहल अछि साहित्यिक गुणवत्ता

ना वढ़्त गजीसं वदलि नहल अछि
गुधनन्दाक प्रति मानक धानधा। - (पृष्ठ संख्या 7)

'सवाक कुसुम कामिनी' नामक एक कविता एहि संग्रह म छैक जकना नामयन एहि संग्रहक नामकनध कएल गेल छैक।
कविक मार्क्सवाद आ साम्यवाद सदैव जाग्रत नहैत छवि। ओ रगवान सँ पैघ मनुख क मानैत छथि कानध मनुख गँ निर्माध कनैत अछि स्थूल अथवा सूक्ष्म दवताक। हुन ओ कहैत छथि हुनू एकै अछि मनुख आ रगवान :
मनुक्खक वनाउल मनुक्ख आ रगवान दुनू
क पैघ आ क छाट
क नीक आ क वजाए
क सही आ क गलत
हम मानैत छी
एकहि अछि मनुक्ख आ रगवान- (पृष्ठ संख्या 24)

जीवन, प्रकृति आ पनिवेश सँ कवि विम्ब लैत छथि। विम्ब विस्तान , याग, तंत्र, खत, कनौ सँ मूखन रल अवैत अछि। वाउनि , तुलसी चौरा, वृट्टी, जिलवी, छत्ता, आदि हिनकन विम्ब वनैत छवि। जिलवी वाह गाछक हो अथवा नस सँ वानल गनम चूल्हा पनक हो, अयन रख्य उपस्थिति, राव आ विम्ब वनैत अछि। जिलवी कविता ओ कथ्य कहय म सहल नहल अछि ज मनुख क जिलवी सँ ओ सिखवक चाही ज जिलवी गाछक काँटक पीरा सहवाक गुध विकसित रलाक वाद कियाक जिलवी जकाँ मी0 र' सकैत अछि। चूल्हा वला गनम

जिलबी क बारे मे सरकार केर कहब छनि जे गरम चूल्हा क पाछू बैसल हलुआइक, हुनकर सँ नहि, अपन चूबैत घाम सँ जिलबी मे मिठास रहैत अछि !

जिलबी गाछक निकट काँटक बीच
सरकारक कौशल कए' पड़ैछ जाइत
गरम चूल्हाक पाछू बैसल हलुआइक
हुनकरसँ नहि
अपन चूबैत घामसँ
रहैत अछि चासनीक मिठास जिलबीमे
पंचकर्मक बाद अबैछ जीवनमे मिठास ! (पृष्ठ संख्या 42)

परिश्रमक मधुर सुआद केर कणक नीक प्रमाण छनि जिलबी कविता। कविता केर नामकरण गहिना बछय। शेष अर्थ पाठक स्वतः निकालि सकैत छथि।

अगर बिम्ब देखक हो तँ 'हाथ' कविता अवश्य पढ़ी। बेर-बेर पढ़ी। कविता स्वतः प्रमाणित अछि। अर्थ अपन आप स्पष्ट होइत जाइत छैक। किछु अंश देखल जाए:
छेनी-हथौड़ी वा बूलडोजर
नहि गाड़ैत अछि पहाड़-पाथर
गाड़ैत अछि ओकरा चलबयवला हाथ
दशरथ माँझीक हाथ गाड़ने छल पहाड़
आ बनौने रहय सरल-सुगम रस्ता

𑒯𑒰𑒟 𑒪𑒱𑒐𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒫𑒹𑒠-𑒏𑒳𑒩𑒰𑒢, 𑒮𑓀𑒫𑒱𑒡𑒰𑒢
𑒖𑒐𑒢 𑒂𑒠𑒱𑒧 𑒧𑒢𑒴𑒐𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒧 𑒁𑒋𑒪𑒻𑒏 𑒯𑒰𑒟
𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒮𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒥𑒔𑒰𑒥𑒏 𑒪𑒹𑒪
𑒧𑒱𑒪𑒥𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒯𑒰𑒟 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒂 𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒮𑓀𑒑
𑒏𑒩𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒂𑒫𑒱𑒭𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒂 𑒔𑒧𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩
𑒬𑓂𑒩𑒧𑒮𑒿 𑒥𑒢𑒪 𑒯𑒰𑒟 𑒏𑒨𑒪𑒏 𑒁𑒟𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒬𑓂𑒩𑒧
𑒥𑒢𑒾𑒪𑒏 𑒁𑒙𑓂𑒙𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰, 𑒩𑒹𑒪, 𑒣𑒳𑒪, 𑒖𑒯𑒰𑒖
𑒂 𑒨𑒳𑒠𑓂𑒡𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒬𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒯𑒟𑒱𑒨𑒰𑒩
𑒂 𑒯𑒰𑒟𑒼-𑒯𑒰𑒟 𑒅𑒚𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒏
𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 49)

𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒁𑒕𑒱, 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒧𑒹 𑒯𑒰𑒟 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒲𑒨 𑒮𑒦 𑒮𑓀𑒑 𑒥𑒜𑓃𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲, 𑒮𑒰𑒏𑒰𑒩𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒩𑒯𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲, 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢, 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒠𑒰, 𑒮𑒦 𑒮𑒿 𑒮𑒦𑒏 𑒏𑒪𑓂𑒨𑒰𑒝 𑒏𑒩𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲, 𑒞𑒏𑒩 𑒬𑓀𑒐𑒢𑒰𑒠 𑒏' 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒫𑒱 𑒏𑒯𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒁𑒑𑒩 𑒮𑒦 𑒢𑒲𑒏 𑒯𑒼 𑒞𑒿 𑒣𑒠𑓂𑒧𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒠𑒬𑒩𑒟 𑒧𑒰𑒿𑒗𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒯𑒰𑒟 𑒧𑒹 𑒯𑒟𑒾𑒛𑓃𑒰 𑒪𑓄 𑒣𑒯𑒰𑒛𑓃 𑒏 𑒏𑒰𑒙𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒁𑒧𑓂𑒥𑒹𑒠𑒏𑒩 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒲 𑒦' 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 - 𑒏𑒹𑒫𑒪 𑒧𑒢𑒴𑒐 𑒏𑒩 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒖𑒹 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒠𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒻𑒏।

𑒫𑒱𑒢𑒼𑒠 𑒖𑒲𑒏 𑒥𑒱𑒧𑓂𑒥 𑒂 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒠𑒵𑒬 𑒠𑒹𑒐𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒞𑒿 '𑒥𑒰𑒜𑓃𑒢𑒱' 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨 𑒣𑒜𑓃𑒲। 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒢𑒱 𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒅𑒣𑒨𑒼𑒑𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒟𑒰𑒣𑒱 𑒥𑒴𑒗𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒁𑒕𑒼𑒣, 𑒢𑒱𑒏𑒵𑒭𑓂𑒙, 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒥𑒰𑒯𑒩। 𑒏𑒫𑒱𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒢𑒲 𑒮𑒖𑒑 𑒦' 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱:

हम बाढ़नि
अछूत, अस्पृश्य
राखल गेल अन्हारमे, रौदमे, शीतमे, बरखामे
धूरामे, गर्दामे, कूड़ामे, कचड़ामे
भद्र लोकक परिदृश्यसँ बारल
कोनो उत्सव, शुभकाजसँ दूर
घरक कोनो कोनमे पड़ल रहबाक लेल विवश- (पृष्ठ संख्या 29)

बाढ़नि बिम्ब संग कवि अपन इच्छा कोना व्यक्त कएने छथि तकर उदाहरण उल्लेखनीय अछि। बाढ़नि टूटि गेल छैक, तार-तार भेल छैक, लोक फेकबा लेल तैयार अछि, मुदा ओहि सँ पहिने ओकर अभिलाषा द्रष्टव्य:

हमर सड़ल हूलक
एक-एकटा काठीक अछि इच्छा
फेकबासँ पूर्व
मनुक्खक संकुचित विचारकेँ
पसरल व्यभिचार, भ्रष्टाचारकेँ
अन्धविश्वासक जमीनकेँ
साफ-सुथरा क' सजा देत
स्वच्छ, संवेदनशील, सजग समाज!- (पृष्ठ संख्या 30)

एहि कविताक निचोड़ छैक जे बाढ़नि सँ सर्व समावेशी समाजक

कल्पना कवि करैत छथि, बाढ़नि म प्रगतिशीलता देखैत छथि :

हम सर्वहारा प्रगतिशील बाढ़नि
आगू बढ़ैत काज करब
नत आ नियति दुनू - (पृष्ठ संख्या 30)

कवि मुद्दा सब बिम्ब सँ आ सब कविता सँ साम्यवाद गढ़ैत छथि। उनकर प्रतिबिम्ब सँ जना बाहर नहि जाइत से सयथ रखा लेल गेल छथि। ’गमछा’ कविता अनेक तरह खोलैत अछि। बदलैत परिवेश म नाम परिवर्तन, राजनैतिक सांस्कृतिक बदलाव, गमछाक समयक संग बदलैत नाम, स्वरूप, गमछाक इतिहास सब किछु बताबैत साम्यवादी विचार जना देनवज्ञा यन एक-एक करैत हो!
पुर्तगाली, तुर्कीसँ अनलनि गोलिया
हमरा दुनूम दुनियादी अन्तर
हम वर्गहीन, समान, सर्वहारा
ओ पूँजीवादी, अहिंसात्मक व्यवस्था
दुनूक बीच कतेको दिनसँ
चलि आबि रहल वर्ग-संघर्ष
आधुनिकताक सुनामी मलैत
रेशम ट्रंकक प्रक्रियबैत
वासम, अधिवासम
आँचर, ओढ़नी, स्टॉल, रुमाल, करुनम
जन-सनाकान लल अयन स्थानयन

अतिग, सुनतिआ छी हम अंगपाछा- (पृष्ठ संख्या 36)
बहुत लोकक मानब छनि, जाहि मे हम सेहो छी, जे आइ हम सभ पोथी लिखैत छी मुदा पढ़ैत नहि छी। पढ़ैत छी तँ पोथी केर चयन दिस साकांक्ष नहि रहैत छी। अहि विषय पर विनोद जी अपन 'पोथी' कविता मे लिखैत छथि:
हमसभ संस्कारित छी पढ़बाक लेल
कमावस गम्हीन नामांस करी पोथीक संग
मुदा चाही पोथी-चुनावक विवेक।- (पृष्ठ संख्या 39)

पोथी चुनाव आ पढ़बाक बात कहैत छथि आ स्वयं ओकर पालन सेहो करैत छथि। अर्थ ई भेल जे हिनक कथनी आ करनी मे अंतर नहि छनि। एकर प्रमाण हिनक चुट्टी न्यूटनक सेब, न्यूटनक गतिक नियम, कालिदासक मेघ, यूटोपिया, कार्ल मार्क्स आ समाजवादी सन कविता मे ठाम-ठाम भेटत। चुट्टी कविता मे मजदूरक तुलना चुट्टी सँ भेल अछि। कहल गेल अछि जे सिर्फ मादा चुट्टी मे होइत छैक प्रजनन करबाक क्षमता शेष चुट्टी तँ बिना कोना उचावच कर खटैत रहैत अछि मादी लेल। तहिना मजदूर खटैत अछि मालिक लेल, व्यवस्था लेल। मुदा मजदूर क तँ स्वर होइत छैक! हुनका कियैक? कहैत छथि:
मुदा ओकर भाषा कहाँ बुझि सकलहुँ
बुझितहुँ पनिश्रमी नहि होइछ नपुंसक
पहिने ओकरा करिवाहुँ गुलामीसँ आजाद !- (पृष्ठ संख्या 52)

परदेसिया बच्चा सभ अपन बूढ़ माय बाप केँ छोड़ि निकलि जाइत अछि रहबा। ओहुना माता पिता टक-टक तकैत रहैत अछि अपन संतान दिस बाट — ए' जाय रहल मृत्यु सँ पूर्व। एहि बातक आ एकर तुलना कएल जाय त लागल 'कवाउ' सँ करैत छथि साहित्यकार:

जखन लागल रहैछ ताला
देखैत रहत टकटकी लगौने
अबैत-जाइत एक-एकटा लोककेँ
जेना बूढ़ माय-बाप आँखि खोलि
तकैत रहत बाट
अपन परदेसी धिया-पुताक- (पृष्ठ संख्या 62)

'सनाक कुसुम कामिनी' कएल तुलना आइन्स्टीनक सापेक्षतावादी सिद्धांत सँ करैत कवि निष्कर्ष दैत छथि:

धरतीसँ ब्रह्मांड धरि
शून्यसँ अनंत धरि
छथिए एखना
जीवनक सापेक्षता आ निरपेक्षताक
बनल पर्यवेक्षक
समस्त सृष्टिक आधार शक्ति
हमर सनाक कुसुम कामिनी। - (पृष्ठ संख्या 75)

साम्यवादी विचारधारा कएल बहुत लोक एहन छथि जिनका आइयो दुख, अछूत आदिक दर्द देखाइत छनि, नहि रहल तँ कल्पना क' लैत छथि। विवाद जीक अनेक कविता जेना 'दुख' एहि अवधारणा।

कर प्रमाण अछि। जतय आवश्यकता सँ अधिक होइक, जतय कर पॉपुलर सरकार स्कूल कर बना क मुफ्त राशन दैत होइक, जतय कोरोना काल मे आ ओकरा मुफ्त अनाज योजना घर-घर पहुँचैत होइक, जतय संविधान मे प्रस्तुत न्याय सँ साम्यवादी बात समाहित होइक आ जकरा संग दल, समुदाय विचारधारा सम्मान करैत होइक, जतय एक आदिवासी महिला झारखण्ड कर सुदूर जिला सिमडेगा मे भातक बिना मरल होइक आ समस्त देश मे बात जंगल कर आगि जकाँ पसरि गेल होइक, तैयो ई बात सब आउट ऑफ कॉन्टेक्स्ट बुझना जाइत छैक। आब लोक महिला उत्थान संग सब अनुभव पर गम्भीर भेल अछि। दलित लेखन आ नव बौद्ध विचारधारा दिन-दिन क' बढ़ल अछि, से कारण ताँ? ताहि समय लागैत अछि जेना कवि 1980 कर अन्तिम दशक मे सुति रहल छथि आ ओखन जागल छथि। इतिहास क वर्तमान मे देखब कर कला मे उद्भ्रान्त वामपंथी माहिर होइत छथि। श्री महानाथ विनोद जी क सेहो छनि।

ब्यूटनक सब कविता एक ठाम गाँ प्राचीन राजनीय स्थान कर महिमा मंडित करैत अछि गाँ दासन दिस विद्वान लोकनि मे जे सावक उत्सुकता छन्हि ताहि पर तंज कसैत अछि:

"लटकल बुद्धिजीवीक अनुलोम-विलोमम

निशाँ-उपर क' बढ़ल अछि

ब्यूटनक सब।" (पृष्ठ संख्या 83)

"तालिबानी साच" कविता एक दिस धार्मिक उन्माद कर विरोध करैत अछि तँ दोसर दिस युद्ध सँ महिला सभक प्रताडित होइत छथि तकर बौद्धिक आ काल खण्ड सँ ऊपर बात प्रस्तुत करैत छैक:

"युद्धक समय आ तुरत जे काल हो आधुनिक हो वा दू चारि दशक बीच
माटिक बाद सरसँ बसी रौंदल गेल
बर्बरताक मारल महिला
जँ रौंदल नहियो गेल
तखनो विधवा, बेसहारा जरुर करत" (पृष्ठ संख्या 96)

"कालिदासक मेघ" पढैत काल नीक लागल। एहि जेना बाबा यात्री "कालिदास सच सच बतलाना" कए पाठ 2 संग आबि गेल छथि। मूदा विनोद जी सौंदर्य रंजक वर्णन रीतीबी आ बहुत बात सच करैत छथि। मेघ सँ पारिस्थितिकी कए चिंता, मनुख द्वारा प्रकृति दोहन आ नाना तरहक प्रश्न उपस्थापन म करैत छथि, यात्रीक प्रश्न उठैत छनि:
"रौदिआयल धरती, फाटल दरारि
आब कतए बसत हम, कादानि
हकन्न नोर कानि बहल बिहार
बीयाम आब लागल कीड़ा-घून
अन्नपूर्णा कतए लीह अवतार
जन-बनिहारक छीना गेल भाजी-भाटी

अहींयन निरेन उाकन चुल्हा-चक्की
काना रेना सन्धानक रुखल यट
उारा मर्मरा र' कानि नरुल अछि मघ" (पृष्ठ संख्या 119)

कवि सम्पूर्ण वातावनण , पर्यावनण लल चिंतित छथि आ मघदूत जकाँ आशक स्थिति कन नजाना प्रस्तुत कनैत छथि:

"पियासल जीव-जंतुक उदास आँखि
गाछ-विनिछ, खउ-खउ पात
सूखाएल उवना, पाखनि-इनान
ऊीधकाय नदी, ०मकल धान
काना रेटैक पूर्ध गंगालाए
काना रुतैक सागन संग मध्न-मिलन
एही वथ कनैत पातन जमकल नदी" (पृष्ठ संख्या 119)

स ज रा, वडुत दिनक वाद एरन कविताक पोथी पढल अछि जकना पढला सँ आनन्दक अनुभव रल। रल, सारित्य पढि नरुल छी। रल, सारित्यकान स्वयं गरुन अध्ययन कन छथि, रल, सारित्यकान ऊर्जस्वित छथि। अगन अहां ऊर्जस्वित छी गँ वात कुना वाद प्रतिवाद कन कनू, वात गम्भीन रुएत, प्रमाणिक रुएत।

अपन वातक कथ्य रुम पुन: विनाद कुमान गाक शब्द सँ कनैत छी जे पोथी क पाठक लल सार्थक वनवैत अछि:

"हम नदी ता नहि नदी
मुदा कविता हमर बाजए, करए संवाद
सहजिक' राखब हमर कविता।" (पृष्ठ संख्या 7)

सोनाक कुसुम कामिनी (मैथिली कविता संग्रह)
कवी: विनोद कुमार झा
मूल्य: 200/
नवानम्ह: मधुबनी
प्रथम संस्करण: 2023

२
ककरा क दुसए
कविता संग्रह - मुन्नी मधु

मुन्नी मधुक दोसर कविता संग्रह प्राप्त एल अछि -ककरा क दुसए। पोथी कर नामकरण कर वझय ठैक। ओ पाठकक आकर्षण अपना दिस खिंचैत ठैक। पोथी पढय लगलहुँ। ओ पोथी पढला सँ एतेक स्पष्ट जनुन एल ज मुन्नी मधु मैथिली जगत म समाज आ व्यवस्था कर सदैव अवलोकन करैत छथि। ज अनुभव होइत छनि, नीक, अधलाह, तकर व्यंग्य सम्प्रेषण पद्यक माद करैत छथि। अर्थ ओ एल ज हिनक कविता हिनक साहित्य पाठन, अध्ययन, पुस्तकालय,

आदि सँ कम प्रकाशित छथि, व्यवस्था संग हिनक सहमति, असहमति, विचार आदिक अभिव्यक्ति छनि। हिनक साहित्य (पद्य) मे ई मिथिला, विहान, रानी आ कते-कते अखण्ड विश्वक महिला केर प्रतिनिधित्व करैत छथि। आवश्यक नहि जे पाठक हिनक सभ बात, राय आ अभिव्यक्ति संग सहमत होथि, मुदा हिनक कथन अपन छाप अवश्य छोड़ैत छनि। मुन्नी मधु, जेना जेना कविता लेखन दिस गंभीर होइत जेतीह, तेना - तेना हिनक साहित्य अपन खास स्थान लेतनि, तकर संभावना हिनक कविता मे अनेक ठाम देखल। से कखन देखत? जखन हम सभ गंभीरता सँ अपन साहित्यकार सभक रचना के पढ़ब, मनन करब। हमरा सभक समस्या ई अछि जे हम सभ साहित्य सँ बेसी साहित्यकारक नाम, ख्याति देखि पढ़ैत छी, ई मानि लैत छी जे फल्लां-फल्लां साहित्यकार लिखने छथि तेँ नीक अन्यथा अधलाह। आब हमरा सभक अहि तरहक सोच सं बाहर अबैत रचना केंद्रित सोच रखैत पढ़क चाही नहि की व्यक्ति केंद्रित। मधु केर कविता वार्तालाप करैत छनि - स्वयं सँ , समाज सँ, पितृसत्ता सँ !

एहि पोथी मे कुल 54 कविता छैक। ओना विषय तँ बहुत छैक मुदा सभ कविता पढ़लाक बाद ई स्पष्ट भ' जाइत छैक जे सभ कविता मे कोन न कोन महिलाक स्वर प्रस्फुटित भ' रहल छैक।
'अग्रगामिनी' कविता मे जखन एक माय अपन सासुर बसैत बेटी सँ अपन पुतहु केर विध्वंस करैत बेटाक बात मे ई कहैत छथि जे बेटा सभ माय दिस कम आ पत्नी दिस अधिक रहैत अछि तँ

मधूक उत्तर समाज म दहेज प्रथा कन प्रचलन आ वटा आ वटी म अंतन यन प्रहान ग्रंथ नुयं कनेन छनि:

"स हम कहलियनि - की कनवं माय
रोजीकँ वावू दन छथि दुधक माल वुकाय
हन अनका सम्बन्धियन लाए की
विकायल वटा यन आए की
विक्री-वट्टाम कहन हाय देया
दहेजक रटल गानू नूपैया
ज्ञानि निनाद आव कनू ह मैया
गँ अनूगामी वनल छथि रैया (पृष्ठ संख्या 14)

वटी आ नानीक स्थिति यन निकल छथि साहित्यकान। सानाग्राही आ मतिकल गंग संग काना लाक ठाकुन सँ मिलि एक दिस नूघ हत्या कनेन छथि आ दासन दिस दुर्गा पूजा आ अन्य उत्सव यन कन्या पूजन कनेन छथि, तारि यन सास कटाक्ष प्रहान कनेन छथि। उाना एहि निषय यन कन्याक स्त्री आ पूनूष साहित्यकान कलम उठान छथि मुदा मुन्नी मधू कन कहवाक गनन आ विम्ब वहय छनि।
'गरम माय' कनिता कन किछ अंश देखि सकैत छी आ अनूरूव क' सकैत छी:
एहि वीच ननन्नात्रि आवि गेल
कन्या-पूजनम सए अग्रसन हल
मुदा कहा कनेन छथि दासन गैयानी

नहि जनमय देथिन बेटी सन बमानी

सायानी द' उलखिन कक्काजी
आला बला काना करैयाकँ-(पृष्ठ संख्या 15)

कविता केर बिम्ब एहन केर ध्यान देल जाय - बेटी लेल 'बमानी', जे तेँकेन बुद्ध हृदया करनाह तिनका लेल 'आला बला करैया' आ अंततः तेँकेन केर महरनाना क 'सायानी' शब्द सँ कहल गेल छैक। ई बात क कातक गंभीर बनबैत छैक, कथ्य म कातक गति आ समाजक प्रति घृणा उत्पन्न करैत छैक ! मुन्नी मधु ओहि बात क कातक सहजता सँ कहैत छथि, समाजक दम्भ काना पाउत छथि ! अन्याय नुकैत कहाँ छथि! कथ्य क आगा बढबैत लोक, पुरुष आ समाज क दुष्कार्य कहैत छथि:
अपन कन्याकँ गर्भ मानि
पढ़ासिया कन्याक-पूजन करै छी
रानी माउक
बुद्धकँ नष्ट क'
अपन अहाँ मातृरूपा बनै छी। - (पृष्ठ संख्या 16)

साहित्यकार नारी समाजक प्रतिनिधित्व करैत प्रमक उत्कृष्ट कवयित्री छथि "अंगन" कविता म,ज हिनका अथवा आजक काना महिला क मात्र छनि:
प्रम कनव

गुलामी नहि
मर्यादित रहब
शोषित नहि
अर्द्धांगिनी बनब
खवासिनी नहि
सहचरी रहब
अनुचरी नहि
सबला बनब
नौनयन नहि
शक्ति बनब
अंधशक्ति नहि
सृष्टिक वरदान
शटल अछि
माय बनब
मशीन नहि। - (पृष्ठ संख्या 18)

आब चाही गँ समाज मे कविताक उपर्युक्त सन्देश क पर्ची बना [illegible] कर नुय म घर-घर बाँटि दी। बदलैत समयक संग स्त्रीगण कर भूमिका की हो चाहि कर कातिंग छैक [illegible] कविता। साहित्यकार अपना संग समस्त नारी प्रजाति क दुख कहलि छथि, परिस्थिति क' कहलि छथि, पुरुष समाज क व्यथा कहल छथि, गुह्रा सँ जगा कहलि छथि।
उपनाक बात आ विचार क हजारा उग आगा ल' जाइत छैक

'दानक टंटा', ॐ प्रश्न करैत छैक कन्यादान कन अनवनधा यन, उाकन यनम्यना यन, नीति-अनीति यन, विस्नान यन ज सरए गनहुँ स्त्रीगध लल कालक माला वनैत छैक। ॐ प्रश्न करैत छैक आधुनिकता यन:

यूत्रक सला अर्हीं यिता छी,
यूत्राक दान कनियौक न वावू
कन्यदान टा यन कियैक जान नहि ए !- (पृष्ठ संख्या 24)

वात क रूना कर्कश एल अर्थ वावैत साहित्यकान एक प्रतिनिधि यूत्रीक माद प्रश्न करैत छथि:
वटीसँ यिंत छूटय नाहि लल
कखना कन खत वचैत छी
कखना आलावला,
कसैया लग दैगैत छी
छी दूनती लिंगएदसँ ग्रसित
मू(0 दानक टंटा करैत छी।- (पृष्ठ संख्या 24)

कनिताक अर्थ स्नतः प्रमाणित छैक। एकन अलग व्याख्या की कनी ! साहित्यकान स्नयं सँ व्यक्ति अर्थात यिता आ व्यक्ति सँ समाज तक प्रश्न करैत अछि। प्रश्न नानीक अधिकान, सम्मान लल करैत अछि :

ह यौ समाज, एकटा वात यूछै छी

की सन्द मात्र वटीक कल्याण हणु
दहजक विराध करै छी
अथवा वटीकँ, आंगी-नुआराम
गिलांजलि दवाक जागार गाकै छी !- (पृष्ठ संख्या 24)

एक वाग ज याOक हणु प्राण संचार करैग छैक स ्ठी ज एक महिला क नुय म साहित्यकार महिला वर्गक समाज, संस्कृति, दश, शिजा आ विस्तान लल की कर्णय हावाक चाही गकन स्पष्ट नखा खींच नहल छथि। वदलैग समय संग नूतन हूल जना खिल नहल हा, आशा, नव उत्साह जना संचार करवाक हणु हउहउा नहल हा, जना नवजागरण कन मन्त्र समक्षग स्वन म वद याO जकाँ संकार विखन नहल हा। जना ्ठतिहास सँ प्रनणा लग उद्दम क पृष्ठैग अछि, सर्वोत्तम हनिश्चक हाउंउशन गैयान ह' नहल हा।

हम गार्गी-मैत्रयीक कन्या छी
हम ऋृषि-मृनि कन गनया छी
नहि थाकि-हानिक' हागव हम
नहि नियन्दिक मानल हानव हम- (पृष्ठ संख्या 32)

छी लक्ष्य प्रनिग वाण प्रवल
नहि करव व्यर्थे विश्राम हम
अछि प्रगणिक नाम जीवन
मुलमंत्र धैर्य-संघर्षक संगम- (पृष्ठ संख्या 32)

आशावादी विचार एकाएक प्रबल भ' उठैत छैक, एक नहि सभ लेल सजग भ' जाइत छैक। कियाक छूटैत नहि छैक:
तम सन कारी घन विनाश मे
हम नवल उत्साह जगा देबै"

कखनो ने कखनो संग प्रेम, विरह, माधुर्य सेहो अपन सरस लय बीच-बीच मे अबैत रहैत छैक। विरह आ विरहक वेदना थिरमति क चंचल आ भावुक क्षणमात्र लेल अवश्य बना दैत छैक। विरही नायिका के वसंत नहि सोहा रहल छैक :
जा जा रे दुखदायी वसंत
पाहुन छौ हमर अनंत
हमर वसंत आयत जहिया
हृदय कमल फुलायत तहिया- (पृष्ठ संख्या 40)

बिना कंत के की वसंत! आ जखन होथि कंत गाँ सभ दिन सभ क्षण वसंत! किछु एहन भाव आबि रहल अछि कविता मे। विरह केर कविता स्त्री आ पुरुष दुनू लिखैत छथि, एखनो लिखैत छथि, मुदा स्त्री लेखन केर भाव कनेक मर्यादित आ वास्तविक होइत छैक। पुरुषक भाव मे वेग, उत्साह, आ रोमांस अधिक रोमांचित करैत छैक। से देखि सकैत छी एहि कविता मे। पुनः कविता पढ़ला सँ अर्थक समग्रता बुझि सकैत छी।
जाहि तरहेँ आजुक मीडिया - अखबार, टेलीविजन, पत्रिका, सामाजिक संजाल आदि नारी देहक प्रदर्शन क' रहल अछि। समाज

विधानहीन भेल जा रहल अछि , सभ क्रियाक जनैत छी। सभ अपन मान, पद, आयु आदिक मर्यादा बिसरि रहल अछि। एहि विषय पर 'नरलिंगी' कविता पठनीय लगैत अछि। कविताक एक अंश देखल जा सकैत अछि जे नञ्जु म सर्व भाव करैत अछि :

काम भस्म छथि शिव नयनसँ
कामुकता मचा रहल तबाही
पत्र-पत्रिका रेडियो-टी.वी. म
व्यापक प्रचार द' रहल अछि तकर गवाही
पौरुष मरला युग बीतल
बसी नरलिंगीक अछि आवा-जाही- (पृष्ठ संख्या 47)

साहित्यकार एतब सँ चुप नहि रहैत छथि , नारी समाज क एकत्रित भ' एकर विनाशक हेतु आह्वान करैत लिखैत छथि:
अब किछु करहु पड़त
मातृशक्तिकेँ जागहि पड़त
हे जानकी, नरलिंगी नहि
पुत्र हव पौरुषवान, तखन
अपन भारत बनत महान। (पृष्ठ संख्या 47)

'वरदान करु' कविता क पढ़ैत काल एना लगैत छैक जेना साहित्यकार महिला वर्गक प्रतिनिधित्व करैत पितृसत्ता पर अनर्गल बनी तनबा हेतु व्यग्र छथि ! लड़की सभक पाँखि देमय चाहैत छथि

मूर्खो मध्य। निर्णय क, पढय क, बढय क सामान अवसर जाहि सँ हुनक लोकी प्रमाणित क' सकथि अपना क सामर्थ्यशाली:

बाबू, फूसिय पढल छी अथाह
ननयनम नहि करब हम बियाह
पढि-लिखि बनब हम ज्ञानी
मनस्विनी, तेजस्विनी, विज्ञानी।

मनस्विनी, तेजस्विनी, विज्ञानी बनबाक मन्त्र देल फूलिया मायक बला लगैत छैक, मुदा ओ बहुत पैघ आह्वान छैक।

भाषा भूमि आ संस्कृति अर्थात मिथिलाक संग हिनक संलग्नता सारगर्भित छनि। भाषा अभियानक सहयात्री लगैत छथि। हिनक ध्वज लन आगा बढ चाहैत छथि:

संस्कृति ध्वजावाहक क' जगम
मातृक गरिमा सँ हूलसैत नदी।
भाषा-भूमिक हनन कुंठम
धधकैत आगि सन प्रज्वलित नदी।- (पृष्ठ संख्या 56)

स्त्रीशिक्षक प्रति नारी शक्ति कन संकल्पना अनुकरणीय लगैत अछि एहि पोथी क पढलाक बाद। एहन बात 'पनमाक्षु बम' शीर्षक कविता म देखल जा सकैत अछि:

बढय दिअ हमर शक्तिकँ
सृजन धनि नहि इतिहास हमर।

छी हम कालजयी कलिंगक योद्धा
विश्व विजयी अछि हमर सपना।

धर्मराज बनि हम छी सबक
दुष्ट अत्याचारी लेल जम छी
सृजन-संहार आ विनाशक
हुँ , हम युद्ध परमाणु बम छी- (पृष्ठ संख्या 60)

पितृसत्ता अदौ सँ स्त्रीगण के देवी बनेबाक अपूर्व स्वांग चलल अछि। मुदा आब पर्दा हटि र' चुकल छैक। स्त्रीगण जागि गेलि छथि। आब ओ सभ अपना लेल पुरुषक देल देवीक उपाधि उघारि देबय चाहैत छथि। अपना लेल नहि, एक लेल नहि, सभ लेल, नारी मात्र के मानवी स्वरूप मे देखय चाहैत छथि। शंखनाद करैत छथि:
हे बन्धु अहीं सभ देव-पितर
लिअ देवी-देवताक पदनाम
हम मनुख छी बराबर
मनुख सन हमरा चाही स्थान। - (पृष्ठ संख्या 62)

लोक आ स्थानीय परिवेशक वस्तु आ परिस्थिति बनि बिम्ब के रूप मे व्यवहार करब बात अथवा कथ्य के लोकक माटि लग आनब रहल। चूड़ी, ककबा, आमक अचार, हँसुआ आ मनक चान अर्थात प्रेम चान आदि बिम्ब बनि प्रयोग कोना एक विरहनी नायिका लेल होइत छैक से कविताक लालित्य बढ़ा देल छैक। 'विरहक दंश' बनि

अलग अंश एकरा प्रमाणित करैत अछि:
टिकुला रह गेल अचार जोग
अछि मनक आग निवारन जोग
नहि चाही चूड़ी, नहि चाही ककवा
अहाँ लल पिया मान मन चकवा। - (पृष्ठ संख्या 71)

अपन माटि सँ , लोक सँ, परम्परा, इतिहास आ मटा इतिहास पर गर्व करा करी , अपन मिथिलाक लुप्तप्राय गौरव क कुन तनहुँ प्रतिष्ठापित करी, ताहू दिशा म कविता बढ़ैत अछि:
जाहि खेतक उपजा सीता
जगतजननी परम पुनीता
विश्व मानचित्र ओ मिथिला
चमकैत सूरज समान रहत
सभ कहैत छी
मिथिलाकेँ फेरसँ उच्च स्थान रहत। - (पृष्ठ संख्या 86)

संभावना कविता सब कही तँ आइक स्त्री अर्थात 2023 स्त्री आ ओकर मायक मनोदशा कर संभावना किंवा सोचक उत्पन्नता बतबैत छैक। स्त्रीगण ई निर्णय करा करी जे दुरागमन काल जाइत बेटी के पुरान बात सभ कर शिक्षा दी अथवा बदलैत समय कर संग अपन बेटी के परिवर्तन - सोच, व्यवहार आदि मे करैत रहबाक शिक्षा (सीख) दी। ओना बेटी माय सँ किछु आन आशा रखैत छथि:

पहिल वन सघन घन
जाहि धियाकँ
की सर सीखी
वेह सर करी
ओ हुनक माय
करैत रहथिन
जाउ सूझा!
पाछाँ पनमख्खन बूझब
महराम जाहि छी
अर्थात राम बहनायब
अथवा ओ
तावहि कहथिन ओ
नहि किनका शोषण करब
नहि अपन शोषित रहब
जाउ बटी
मनुख छी
मनुख जकाँ रहब !- (पृष्ठ संख्या ४४)

कविताक अंतिम तीन पँक्ति मे सम्पूर्ण सार केँ कायापलट क देल छैक। जहि पर विशेष ध्यान देवाक दरकार छैक :
जाउ बटी
मनुख छी
मनुख जकाँ रहब !

बदलैत मानवी कए अपन स्वाभिमान सर्वोपरि छैक। सब किछु छाडि नैहर सँ सासुर अबैत छथि। मुदा सम्मान सँ चाही:

माता-पिता सभ नाता अर्पित
क' देलहुँ निज धाम समर्पित
अपन सभ सुख सेहो कयलहुँ दान
हमरा लग बचय दी हमर स्वाभिमान।- (पृष्ठ संख्या 97)

अपन स्वाभिमान लेल साकांक्ष आ सावधान छथि साहित्यकार। अपना मे बहुवचन देखैत छथि, नारी कांक्षित बहुवचन। पुरुष अपना आपमे बहुवचन छथि, मुदा पुरुषक बहुवचन जेना नारी शोषक लेल बनल हानि !

मुन्नी मधु कविता काना गढैत छथि एकर उत्तर अपन कविता - कविता बनैत अछि- मे दैत कहैत छथि:

नाबाल दृगक
अनगिनत प्रश्नपर
मुस्कैत टा एक मात्र उत्तर
बकरल उलझन
अनकरल अनुरोध
जखन विचलित करैत अछि
तखन हमर कविता बनैत अछि।- (पृष्ठ संख्या 99)

बात के छोड़ आगा स्पष्ट करैत लिखैत छथि:

हृदयमे नहि —नहिक'
उठय लालसाक ज्वारि
चंचल भ' उठय
अतिव्याकुल
बाट नहि सूझय
लगत अबित
बात नहि फूटय
नैन मिलय
नैन झुकय
जखन मोन पड़ैत अछि
तखन हमर
कविता बनैत अछि। - (पृष्ठ संख्या 100)

अपन आत्मनिर्भरता आ व्यक्तित्व केर लेल छथि साहित्यकार जी। ओ अपन सोच, व्यक्तित्व, व्यवहार, स्वतंत्र लेखन, अपन स्त्री स्वभावक सौन्दर्यबोध छथि। हिनका स्पष्ट करैत हुनकर लेखनी हुँकार करैत छथि:

किएक गे हम
नारी नहि छी
आ ने सूर्पनखा छी
हम मूर्ति मात्र छी
अपना लेल
गढ़ि सकैत छी
अपन सिद्धांत। - (पृष्ठ संख्या 104)

मुन्नी मधु स्वयं कामकाजी महिला छथि,अध्यापिका छथि। तहिं घर म स्कूल जाय सँ पहिने आ स्कूल सँ घर घुरला बाद , की स्थिति रहैत छैक तकर अपन अनुभव संग जोड़ैत कविता रचैत छथि। बात मुदा नहि-नहि सही कहैत छथि। जे महिला नौकरी करैत छथि अथवा जिनकर घरक महिला नौकरी करैत छथि से एकरा संग अपना के जोड़ि सकैत छथि :

सगरी बासनक अंबार देखि क'
अँइठ-कुइठ क' पसार देखि क'
मोन-मोन खिसिया जाइत छी हम
कुर्री-आचमन कयने बिना
माँजि-धोइ क'
राखस घरमे
झमि जाइत छी हम
हँ, काजपरसँ घुरि क'
काजपर आबि जाइत छी हम। - (पृष्ठ संख्या 102)

निम्न वर्गीय, निम्नमध्यम वर्गीय, आ मध्यम वर्गीय परिवार कर कामकाजी महिला सभक परेशानी आ जीवनक दिक्कत मुन्नी मधु लग राखल यथार्थ छनि। एहि यथार्थ कर दर्शन सिनमा कर रील जकाँ हिनक कविताक शब्द पाठक कर माथ म घुमैत छैक:

घनसँ कार्यालय धरि
गाय-बछद दूनू हमहीं
ह'रा बहैत छी हम
दु(खा यनसैत छी हम
गहना कहाँ कमासुत
कहबैत छी हम
हँ, काजयनसँ घुनिक'
काजयन आबि जाइत छी हम। (पृष्ठ संख्या 103)

एहि कविता संग्रह कर याथी म नीक-अधलाह सब गतहक कविता छैक। किछु कविता एहना छैक ज गंभीर नहिय जकाँ ठेक मुदा सरस नीक र जौं गँ नवनस काना हौक। विनती, सिया अवगान, ककना क दुसरा आदि कविता हमरा नीक नहि लागल। किछु कविता जना अत्यधिक सामान्यीकरण कर शिकार र' गेल हो। किछु कविता एहन अछि ज याठक कर गंभीर बाना कर बाट जाइत अछि।

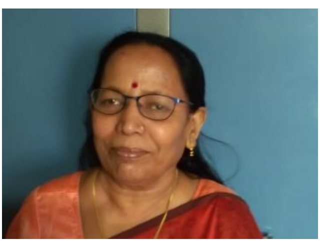
-लाक की कहल,बाद्दल बाम, हँसी एक, नुय अनक इत्यादि कविता साहित्यकार कर लखन शैली कर हस्ताक्षर कहल जा सकैत अछि। कुल मिला क' मुन्नी मधु कर नवना एक यठनीय याथी छनि। नव साहित्यकार छथि, तहि स्थान हिनका अध्ययनशील नहैत खुब यढक चाही आ नूतन विषय वस्तु यन नूतन प्रयाग करैत रचिथक उगा प्रशस्त करक चाही।

-ककना क दुसरा: मुन्नी मधु

नवानस्र: मधूवनी - 2023
मुल्य: 200 रू..

अयन मंगाव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन यठाउ।

२.१०.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खय-२४)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम. ए., नैहर- खनाजयून, दनरभङ्गा, सासुन- गोढियानी (वलहा), वर्तमान निवास- राँची, मानखण्ड। मानखंड सनकान महिला एवं वाल विकास सामाजिक सुनक्षा विभाग वाल विकास यनियाजना यदाधिकानी यदसँ सवानिवृत्ति उयनान्त स्वतंत्र लखन।

अग्नि शिखा (राग- २३)

(मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण)

कथा अखन धनि:

उर्वशी क विरह मं विचलित राजा पुरुरवा राजकीय काज सऽ उदासीन भऽ गेल छथि। ओ राज-काज सऽ मुँह मोड़ि सदिखन उर्वशी क ध्यान मं निमग्न रहैत छथि। ओ राजमहल मं रहथि अथवा वन-विहार करथि हुनका दृष्टि क समक्ष सदिखन उर्वशी घुमैत रहैत छथिन वन विहार क बहन्ने एकांत स्थान पर आबि उर्वशी क चित्र बनबैत रहैत छथि,उर्वशी क याद करैत रहैत रहैत छथि।

आब आगू:

राति क चारिम प्रहर छल । मृदु आ सुखद हवाक झोंक गवाक्ष क मार्ग सँऽ राजा पुरुरवाक शयन कक्ष मे प्रवेश करय लागल। राजाक आँखि धीरे-धीरे आराम करय लागल। निद्रादेवी धीरे-धीरे हुनका लग आबि रहल छलीह। निद्रा देवी राजा पुरुरवाक आँखि क अपना हाथे सहलाबैत झाँपय लगलथि।

तखनहि अचक्के प्रकाशक एक तीव्र झोंक सऽ घर क दीपक झमकि उठल। धूम्र अम्बार जे कक्ष मं पसरल छल,कक्ष सऽ विलुप्त भय गेल,राजाकआँखि मं बसल निन्न पर्यन्त ओहि तीव्र आलोक सऽ व्यथित भऽ विलुप्त भय गेल,राजा पुरुरवाक नेत्र पूर्णतया खुजि गेल। ओ आश्चर्यचकित भय एम्हर-ओम्हर देखऽ लगलाह। तीव्र प्रकाश मं हुनक नेत्र चमत्कृत रहि गेल! आश्चर्य ! अलौकिक ! तीव्र प्रकाशक मध्य कोन अलौकिक दिव्य मूर्ति ठाढ़ अछि! राजा विस्फारित नेत्र सऽ एम्हर-ओम्हर तकैत रहलाह ओहि दिव्य मूर्तिक अनुसंधान क प्रयास मं । तीव्र ज्योति मे हुनकर आँखि आश्चर्य सँ भरल छलनि। ओ देखलनि जे हुनका सामाँ ठाढ़ दिव्य सौन्दर्य मूर्ति आन किया नहि हुनक उर्वशी छलनि!

"उर्वशी! आह उर्वशी!प्रिय उर्वशी! इली उर्वशी!अहाँ उर्वशी थिकहुँ! की अहाँ सत्य आयल छी ! अथवा हम कोनो भ्रम मे थिकहुँ!"
राजा अपन विशाल मजबूत आ उन्नत बाँहि मे ओहि सौन्दर्यक दृश्यमान मूर्ति कें समेटि हृदय लगा लेलनि। राजा आलिंगित अलौकिक प्रेमिका असंख्य चुम्बन के बरसा देलनि। उर्वशी प्रेम-विह्वल भय प्रियतमक प्रेमक बौछार मे निश्चल स्नान करैत ठाढ़ भऽ गेलीह। उर्वशी किछु क्षण उपरान्त राजा के बंधन सँऽ अपना के मुक्त करऽ के प्रयास करऽ लगलीह तखन राजा हुनका अपना बाहु-बंधन सँऽ मुक्त कय हाथ पकरि अपन पर्यंक पर बइसबाक आग्रह केलथि। उर्वशी नि:संकोच हुनक पर्यंक पर बैसि किछु क्षण अपन प्रियतम दिस मौन तकैत रहलीह, तखन हुनकर ठोर मे कंपन भेल। जेना असंख्य घंटी एकहि संग घनघना उठल हाय,ओहि शब्द वातावरणक निस्तब्धता भंग भऽ गेल। ओहि शांत वातावरण मे बाजि रहल मधुर घंटी सन उर्वशी के मधुर स्वर बहरायल छल।
"हम अपन बात पूरा केलौं न हमर प्रिय"?
"हँ प्रिय, आइ हम बहुत प्रसन्न छी,किएक तऽ तप्त मरुभूमि सन गर्मीआ शुष्क हमर जीवन मे वसंत आबि गेल अछि,अहाँक आगमनक कारणेँ। अहाँ हमर अन्हार जीवन मे इजोतक किरण बनि अपन पदार्पण केलहुँ अछि । प्रिय!आब हमर नेत्र अहाँक सौन्दर्यक पूर्ण आनंद लऽ सकैत अछि। हमर हृदयक ताप अहाँक दर्शन रूपी बरखा सँऽ दूर भऽ गेल अछि प्रिय।"
"हमर प्रियतम, अहाँ हमरा स्वर्ग मे प्रेम-सुधा मे स्नान करबा विरहाग्नि मे जरय लेल छोड़ि स्वयं धरती पर आबि गेलहुँ। मुदा

हम एहू अहाँक पाछाँ पड़लहुँ,अहाँ कँ देल गेल वचन कँ पूरा करबाक लेल। आब हमरा विश्वास दिअ,अहाँ हमरा एतs छोड़ि आन ठाम पलायन नहि करब"?-

प्रेम भरल नेत्र सँs राजा दिस तकैत उर्वशी पुछलखिन।

"नहि प्रिय,एखनहिं अहाँ हमरा छोड़ि कs चलि जायब,मुदा आब हम अहाँ कँ कहियो नहि छोड़ब। अहाँ कँ छोड़ि देबाक लेल हम बहुत पश्चाताप करैत छी। अहाँक बिछोह मं हमर समय कोना व्यतीत भेल ई किया नहि बूझि सकैत अछि। हमरा तs एतेक बूझल अछि जे ई समय मं हम श्वास लैत रही मुदा जीवित नहि रही। हमर दिन राति अहिंक स्मरण करैत कोनहुना बीति गेल। अहाँक बिनेह मे हमर रुचि कोनो बात मे,कोनो काज मं नहि छल,सब समाप्त भs गेल। तहि लेल हम आब अहाँ सँs दूर रहबाक सपना मं नहि सोचि सकैत छी" - राजा उर्वशी कँ आश्वस्त करैत छथि।

"पृथ्वीपति संसार क सब मर्यादा क त्याग कs कs हमरा संग विवाह करब,हमरा अपन जीवन-साथी, अपन सह-धर्मिणी बना लेब"?

"अनर्थ प्रिय,ईहो कुना पूछबाक बात थिक?" - प्रेमसँ भरल आँखि सँs उर्वशी दिस तकैत राजा बजलाह ।

"अहाँ अपन हृदयक प्यास समाप्त भेलाक बाद हमरा नकारब तs नहि" - उर्वशी पूर्णतः निश्चिंत होयबाक चाहैत छलीह ।

"कहन गप्प कs रहल छी,मनुष्य अपनहि देह सँ अपन आत्मा कतहु निकालि सकैत अछि? अहाँ हमर आत्मा छी,जकरा बिना हम निर्जीव रहब" - राजा प्रियतमा कँ पूर्ण आश्वासन देलथि ।

"तखन हमर किछु शर्त अछि प्रिय,अहाँ कँ सदिखन ओकर पालन

करबाक वचन देमय पड़त" - उर्वशी अपन प्रेम केँ शर्त मे बान्हय लगलीह।

"हम अहाँ केँ वचन दैत छी,हम अहाँक हर शर्त बिना सुनने स्वीकार करैत छी" - राजा प्रेम मे प्रत्येक शर्त स्वीकार करय लेल तैयार छलाह ।

"प्रियतम,ध्यान सँ सोचि कऽ शर्त सुनि कऽ वचन दिय। ई बालक हऽ कऽ प्रेम मे आबि कऽ हड़बड़ी मे काज नहि करू" -
उर्वशी स्वर्ग सँ पृथ्वी धरा आबाय लगाबय क अनैतिकता क आरोप करबाक कोनो अवसर नहि देबय चाहैत छलीह |

"हम कहलहुँ एकबेर आब बदलब नहि,हम अहाँक सब शर्त केँ बिना सुननहि स्वीकार करैत छी। हम ई बात पूर्णतः विचार कएलाक बाद कहि रहल छी। अहाँ हमरा सँ हमर पूरा राज्य छीनबाक वचन लैत छी,ऐश्वर्य आ विलासिता केँ त्याग करबाक वचन लैत छी तैयो धनि नहि जौं हमर प्राण लेबाक वचन सेहो ली,हम एकरा खुशी-खुशी छोड़बाक लेल तैयार छी" - राजा पुरुरवा दृढ़तापूर्वक बजलाह।

"तखन कोनो बात नहि। हमर मात्र दु टा शर्त अछि, ई शर्त सब सदा के लेल मान राखु,नहि तऽ अहाँ केँ पश्चाताप करैत रहबैत रहऽ पड़त,तहि सँ हमर बात पहिल अहाँ सुनि लिय तखन वचन देब" - उर्वशी दृढ़ स्वर मे बजलीह।

"हँ - हँ! कहू कथि कहबाक अछि। हमरा सुनबाक आवश्यकता नहि,तथापि हम सुनि रहल छी"।

"हमर पहिल शर्त अहाँ केँ राखू! हमर पुत्रवत् पालित ई दु गोट

ममता अछि। अहाँ कँ ओहि दुनू ममता कँ सदिखन राजा करS पड़त"!

राजा पुरुरवा - "बस एतबहि बात? ई तँ कोन पैघ बात अछि, जकरा लेल अहाँ एतेक भूमिका देलहुँ! एतेक प्रकारक जीव-जन्तु हमर पशुशाला मे पालित भS रहल अछि। हम ओकर राजा छी, तखन अहाँ क ओहि दु गोट ममता संगक राजा किएक नहि करब"?

एतेक आसान नहि अछि ई बात प्रियतम! अहाँक कर्मचारी सभ पालतू जानवरक राजा करैत अछि, जाहि मे कखनो काल किछु गलती भS सकैत अछि, जकर परिणाम स्वरूप ओहि पालतू जानवरक राजा नहि भS सक आ ओ मरि जाइत होय। ओहि बात पर कहियो ककरो ध्यान नहि दैत होयताह। अहूँ क ओम्हर ध्यान नहि गेल होयत। मुदा ई ममता मामूली जीव जंतु नहि अछि, ई हमरा पुत्रवत प्रिय अछि।

राजा पुरुरवा - "हम अहाँ क वचन दैत छलहुँ प्रिय, हम हुनका संगक राजा अवश्य करब। आब अपन दोसर शर्त बताउ"।

"हमर दोसर शर्त अछि, आनंदक समय अर्थात पति-पत्नी क आपसी विलासक संबंध क समय छोड़ि अहाँ हमरा कखनो नग्न नहि देखाइ देब"।

"ई तS आओर आसान शर्त अछि, एकर पालन करब कोनो कठिन काज नहि अछि। हम अहाँ क वचन दैत छी, हम अहाँक ओहि दुनू शर्त कँ पूर्ण रूप सँ पालन करब" - राजा पुरुरवा ओहि दुनू सहज शर्त कँ सुनलाक बाद करैत हँसलाह।

"जखनहि अहाँ एहि दुनू शर्त मे सँ कोनो एकहुटा शर्त पूरा करबा मे असफल रहब,हम अहाँ केँ छोड़ि स्वर्ग चलि जायब। "

"नीक बात प्रिय, हम अपन जान स बेसी एहि देल गेल वचन क ध्यान राखब"।

एतेक देरी सँ गंभीर उर्वशी आब प्रसन्न आ हर्षित भs गेल छलीह। हँसैत बजलीह - "पृथ्वी पर वर-वधू आगि केँ साक्षी बना सात टा शर्त पूरा करबाक वचन दैत छथि,मुदा हम केहन वधू छी,जे अहाँ केँ एहि दुनू शर्त केँ एहि तरहे पूरा करबाक वचन करयलहुँ अछि। अहाँ केँ सेहो कोनो शर्त अछि - हमरा लेल"?
पुरूरवा हँसैत बजलाह "नहि प्रिय, हमर कोनो शर्त नहि अछि"।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.नन्द विलास राय-जाबी



नन्द विलास राय

जाबी

रतिकान्त रायक सासक बिआह छेलैन। आइये दू बजे बरुयहन बरियाती बिदा हएत। रतिकान्त रायक सासुरमे चर्च अछि जे बेटी बला बरियातीकेँ पाँच परहक झनाक बरल मिठाइ खुऔथिन। बरियाती जेबा लेल रतिकान्त राय दाढ़ी बनबै छला तखन हुनकर सानि प्रिया आबि कऽ कहलकैन-

-यौहुन, लगाउ मांछम घी, मानु जांघम चाटी।

गैयन ननिकान्त राय प्रियासँ पुछलखिन- ७रून कान वाग छै ज मांछम घी लगा७व ञा जांघम चाटी मानव।

प्रिया कहूलकैन-

-सूनै छि७ ल७कीवला वनियागीकँ याँव गनरूक मि0ाछ्छ खु७थिन, गरूम छनाक मि0ाछ्छ।

गैयन ननिकान्त राय वजला- याँव गनरूक मि0ाछ्छ खुञावैथ ना दस गनरूक, छनाक खुञावैथ ञाकि काछ्रक, रूमना ग मूँरूम जावी७ लागि गेल ञछि।

प्रिया पुछलकैन- स की यारून।

ननिकान्त राय वजला- रूमना खुनम चीनी वढि गेल रून गँ७ ताँछ्रन मि0ाछ्छ खाछ्छसँ मना कs दन छैथ।

ञयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.१२.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धानानादिक उयन्यास)



जगदीश प्रसाद मण्डल

सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

'सुचिता' धारावाहिक रूपेँ छपब प्रारम्भ भेल 'मिथिला दर्शन'मे, जे पहिने प्रिंटमे छपब बन्द भेल आ मात्र पी.डी.एफ. मे ई-प्रकाशित होअए लागल आ फेर सेहो बन्द भऽ गेल। आ तेँ 'सुचिता'क सेहो छपब/ ई-प्रकाशित होएब बन्द भऽ गेल। अही आलोकमे ई उपन्यास धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित कएल जा रहल अछि। -सम्पादक।

सागर यादव

उड़ीसा राज्यक बीच राधारमणकेँ दस वर्ख भऽ गेलैन। पहिल बहाली भुवनेश्वरक पुरीमे भेल छलैन, भुवनेश्वरसँ बालेश्वर आ पछाति फूलबनीमे अखन पदस्थापित छथि।
छअ् बजेक समय। ओना, माघमे छअ् बजे साँझ भऽ जाइत आ जेठमे दिन रहैत मुदा से नहि, अखुनका समयमे सूर्यास्त तँ भऽ गेल छल मुदा रोशनी ओहिना प्रकाशित छल जेना सूर्य उगलायन रहैत...। राधारमण अपन दुनू पएरकेँ ओसारक पीलर लग। कुरसीपर ओङठि कऽ बैसल उड़ीसाक विषयमे सोचि रहल छला। मनमे रंग-बिरंगक विचार सेर उठि रहल छलैन। उठैक कारण छलैन जे जखन भुवनेश्वरक पुरीमे छला तखन समुद्रक संग जगन्नाथ बाबाक स्थानसँ लऽ कऽ कोणार्कक सूर्यमन्दिरक संग समुद्रक कातमे गाड़ल कबीरक खम्भी सेहो देखि चुकल छला, पछाति बालेश्वरमे अगम-अथाह समुद्र सेहो देखि चुकल छला आ अखन फूलबनीमे

𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒦𑒴𑒧𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒯𑒲𑒏𑒰𑒪 𑒮𑒳𑒯𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒪𑒑𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒬𑒰𑒮𑒢 𑒏𑒳𑒩𑓂𑒮𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒢𑒲 𑒮𑒩𑒏𑒰 𑒥𑒻𑒮𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒲-

-𑒠𑒹𑒐 𑒥𑒢𑒰𑒩𑒮 𑒠𑒹𑒐 𑒑𑒹𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒯𑒢𑒏𑒰 𑒥𑒰𑒪𑒲-𑒮𑒰𑒮𑒳 𑒋𑒯𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒼𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒡𑒳𑒢-𑒡𑒰𑒢 𑒥𑒰𑒖𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒋।

𑒮𑒳𑒯𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒢𑒰𑒟𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒐𑒾𑓀𑒮 𑒅𑒚𑒪𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒐𑒾𑓀𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒥𑒥𑒻𑒞 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒙𑒰𑒩𑒻𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒰-

-𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒅𑒪𑒰𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒲, 𑒕𑒼𑒙 𑒂𑒿𑒙-𑒣𑒹𑒙 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒐𑒢 𑒅𑒚𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒥𑒖𑒻𑒏 𑒮𑒱𑒯𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲। 𑒯𑒧 𑒖𑒹 𑒮𑒦 𑒠𑒱𑒢 𑒅𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒲 𑒮𑒹 𑒢𑒹 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒥𑒖𑒪 𑒢𑒃 𑒯𑒼𑒃𑒋, 𑒋𑒏𑒩 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒱𑒯𑒢𑓂𑒞 𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒮𑒱𑒯𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒏𑒱𑒋 𑒯𑒼𑒃𑒋।

𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒢𑒰𑒟𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒮𑒳𑒯𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒯𑒙𑒰𑒩𑒻𑒏 𑒏𑒼𑒬𑒱𑒬 𑒏𑒪𑒻𑒢। 𑒏𑒱𑒋 𑒢𑒹 𑒧𑒢 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒼𑒔𑒻-𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒻𑒏 𑒥𑒢𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒢। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒳𑒯𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒧𑒢 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒏 𑒥𑒢𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒢। 𑒋𑒯𑒢𑒧𑒹 𑒣𑒞𑒱-𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒲𑒔𑒏 𑒥𑒰𑒞। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒱 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒧𑒹 𑒮𑒿 𑒏𑒱𑒌 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒥𑒠𑓂𑒡𑒱𑒞 𑒕𑒼𑒛𑓃 𑒕𑒻𑒟 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒖𑒻𑒏 𑒂𑒏𑒱 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒏 𑒢𑒰𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒻𑒢।

𑒢𑒯𑒳𑒪𑒰𑒨𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒰 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒮𑒳𑒯𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒬𑒰𑒮𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒲-

-𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒮𑒿 𑒢𑒲𑒏 𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒥𑒖𑒻𑒋।

𑒅𑒢𑒰, 𑒢𑒰𑒟𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰𑒏 𑒁𑒐𑒢 𑒥𑒰𑒞 𑒧𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒋𑒯𑒢𑒧𑒹 𑒬𑒰𑒮𑒢-𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏 𑒢𑒹 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢, 𑒬𑒰𑒮𑒢 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲𑒏 𑒔𑒩𑒢𑓂𑒡 𑒥𑒪𑒰, 𑒏𑒏𑒩𑒰 𑒢𑒹 𑒧𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒥𑒖𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒥𑒢𑒲। 𑒖𑒐𑒢 𑒥𑒖𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒥𑒢𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒥 𑒞𑒐𑒢 𑒢𑒹 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒧𑓀𑒖𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒩𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒞। 𑒖𑒐𑒢 𑒮𑒹 𑒩𑒯𑒪 𑒞𑒐𑒢

न मशीन जकाँ मशीन राखा सहा होइत। तेँ अनुकूल सुविधाक बालीम सुधार सामाजिक अछि। अपन तँ एहि दिन काजक याद्धे बहाल नहि छी। एक बातक एहि दिन सुख्खा जकाँ नहुँक (धन नहुँ यऊ, तेँ ओ राखाक मज्ञान करब साधारणक बात छी..! तखन तँ काजा डाही राखाक माध्यमसँ करै छी तेँ काज-काकन राखाक स्थान तँ अछिए। उनाम यत्नीक संग मैथिलीम गद्य-सद्य करु आकि उतियाम...।

निधानकँ बौयतेँ नाधानमध्र बजला-

-सुविधाकँ जत राखाक खगता छै तत हमना (थाउ अछि। अहाँकँ त तहूसँ बसी कम अछि, तखन अपन किए बाली-राखाक निधान करै छी।

अयना जनेँ नाधानमध्र एकाग्र रूऽ किछु निधानए बाहि छला मुदा सुनासिनीक गद्य-सद्यक बाह हिनका बाहकँ बलेय नहि देऽ छलैन। तेँबीच सुनासिनी हून बजली-

-हमना ममहून लग एकटा गाम अछि महथौन, मिथिलांचलक मध्य बसल उऽ गामक राखा उतिया अछि।

सुनासिनीक बात नाधानमध्रकँ सहा बूझल छैलेन। उतिया सए सौंस गामक सम्पेँ हथिया गामम जमीन्दार सए छला, हुनक सबहक संग राखा सहा आएल, जकन बलेन सौंस गामम अछि। उना, औसुका अयऊा यहिन जाक राखा मजगूत छल स अखन नहि अछि। जिनका सबहक माता-पिता आ दादा-दादी बजेत नहैथ सहा सए आब बसी मैथिलीए बजै छैथ। तकन दासना कारध रूल, उा रूल जना यहिन निधाह-दान सीमित जगहम छलैन तना आब नहि छैन,

ओहूसँ ज्यादा सुन्दर लगैत अछि।

सुहासिनीक गप-सप्प करैक इच्छा आ अपन अनिच्छा मात्र गप-सप्प नहि करैक, किन्तु शादी-बियाह करबाकेँ इच्छो नहि करैत बियाहमे माए होइत, माए देहक कारण, सुहासिनीकेँ बियाहमे उदासीनताएब रहैन...।

राधारमण बजला-

-जहिना अहाँ आइ.ए.स पढ़ैत रही तहिना त सुविधा सेहो भऽ गेल।

ओना, राधारमण जीह दाबि कऽ बजला मुदा घुनछावला सुपुत्रिया हँसी जकाँ एकसंग अनका बियाहकेँ समटि बाजल छला, ओहूसँ सुहासिनीक मन उदास गेलैन। उदासीनताक अनेक कारण मनमे उठि गेलैन। पिताजीक दुर्घटनामे मृत्यु भेल रहैन, परिवारमे एकाएक अन्हार पसरि गेल रहए...। मुदा ई बात सुहासिनीक मनमे एबो ने करैन जे अही अन्हार-इजोतक बीच दुनियाँ चलैए आ अपनो चलै छी आ परिवारो चलैए। गामक जे संगी सुकन्नी छल, मात्र लोअर प्राइमरी स्कूलसँ कौलेज धरिक संगी, सुयश परिवार, सात लाख नगद गनि पिताजी बियाह करलखिन, हुनका की भेलैन? एहेन प्रश्न उठि गेलैन, माएकेँ अनुसंधान करैत भऽ गेलैन, तँए ने अखनो धरि परिवार ठाढ़ अछि नहि तँ आइ कहए नहितौं?

-कहए नहितौं, सुहासिनीक मनमे अदिति पढ़ैक एक वंश रहिगा हृदयी जकाँ सुहासिनीक मन हृदयैक गेलैन। बजली-

-तँए अहाँ तँए ने हमहूँ एकठाम बैस गप-सप्प करै छी, नहि

गँ..!

-नहि गँ..!यन सुनासिनीकँ नुकिग दुनू हाथो आ मूहसँ चनियवैग नाधानमध वजला- नहि गँ, की मान?

एकाएक समुद्रक स्वजालमे फँसिग सानूक जहिना सानना निहीन वनि जाइए गहिना सुनासिनीकँ सहा स्लैन।

गैवीच विहूसैग हिम्मगलाल यहूँच वाजल-

-साय साहेव, सम्मलिग गोड लगै छी।

हिम्मगलालक गोड लागव सुनि नाधानमध थकमकला। थकमकाइक कानध स्लैन ज जँ अयना असीनवाद दैग हिम्मगलालकँ किछु कहिउ आ यन्निया किछु असीनवाद दिअ लगलखिन गखन असगन हिम्मगलाल कमहन-कमहन मूँह घुमा शिनाधार्य कना, गइसँ नीक न ज यहिन हूनक मान यन्नीएकँ असीनवाद दिअ दिउन। समाजाकँ ग सएह दखै छी ज दीआ वँटनिहानक यथान लगल अछि। ज दिन-नागि दीऊ वाँटैए मुदा शिआ दनिहान कग छैथ। ऊ गँ शिआक स्नम अछिए। नाधानमधकँ स सूगनलैन नहि। अयना यनिवान आ हिम्मगलालक यनिवानक वीच जखन सुनासिनी दुनू घाट दिस गकली गखन जग यनित्र (नीक) हिम्मगलालक यनिवान दखि नहल छली, मान निधना माएकँ, गना अयन नहि दखा नहल छैन, जइसँ हिम्मगलाल लग वजैक अयन मूँह नहि दखि सुनासिनी चुय नहव नीक वूसलैन। मना गनाही दलकैन ज साइय सहाएव लग। न हमना हिम्मगलाल गोड लगन छल, गाहूम मूखैटी, जँ यएन छवि लगन नहैग गँ एकटा वाग साइग, सहा गँ 0निय छल। मूहसँ वजैग हिम्मगलाल उासानयनक एकटा कुनसीकँ नाधानमध लग

𑒮𑒢𑒏𑒥𑒻𑒞 𑒥𑒻𑒮𑒪।

𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒻𑒮𑒱𑒞 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒖𑒪𑒰-

-𑒥𑒮𑒧, 𑒧𑒰𑒩 𑒮𑒢𑒰𑒩𑒲-𑒑𑒰𑒞𑒲𑒧 𑒁𑒐𑒢 𑒩𑒲𑒞 𑒏𑒯𑒢 𑒔𑒪𑒻𑒞?

𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪-

-𑒩𑒲𑒞 𑒏𑒲 𑒩𑒲𑒞 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒔𑒪𑒻𑒞। 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯-𑒧𑒳𑒞𑒢𑒏 𑒑𑒯𑒢 𑒪𑒑𑒢 𑒔𑒪𑒻𑒞, 𑒖 𑒁𑒯𑓂𑒢𑒰-𑒞𑒲𑒚𑒢𑒰 𑒅𑒚 𑒖𑒰𑒋𑒞।

𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒁𑒡𑒐𑒱𑒪𑓂𑒪𑒳 𑒯𑒿𑒮𑒲 𑒯𑒿𑒮𑒱 𑒥𑒖𑒪𑒰-

-𑒋𑒢 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩 𑒯𑓄 𑒖𑒰𑒋𑒞।

𑒥𑒖𑒻𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒖𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒪𑒑𑒪 𑒧𑒢 𑒢𑒰𑒏𑒻𑒞 𑒏𑒯𑒪𑒏𑒻𑒢,

--𑒂𑒃𑒏 𑒨𑒢𑒱𑒢𑒑𑒧 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩 𑒯𑒋𑒥! 𑒏𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒱 𑒯𑒿𑒮𑒲-𑒚𑒙𑓂𑒚𑒰 𑒕𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒳𑒯𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪 𑒥𑒰𑒞 𑒞𑒲𑒩-𑒡𑒢𑒳𑒭𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒟𑒹𑒅 𑒕𑒲 𑒂𑒏𑒱 𑒥𑒢𑓂𑒠𑒳𑒏𑒏 𑒑𑒼𑒪𑒲 𑒟𑒹𑒅 𑒕𑒲 𑒖 𑒕𑒳𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒰 𑒒𑒰𑒫 𑒏𑒩𑒥 𑒏𑒩𑒞। 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒧 𑒋𑒞 𑒑𑒿 𑒑𑒳𑒝 𑒁𑒕𑒱 𑒖 𑒞𑒰𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒰𑒞𑒪𑒰 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞, 𑒧𑒰𑒞𑒪𑒰 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒂 𑒕𑒰𑒞𑒪𑒰 𑒑𑒿 𑒖𑒰𑓄𑒨 𑒮𑒏𑒻𑒞..!

𑒧𑒢𑒧 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒁𑒫𑒻𑒞-𑒁𑒫𑒻𑒞 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒧 𑒜𑒲𑒪𑒨𑒢 𑒋𑒪𑒻𑒢। 𑒖𑓄𑒮𑒿 𑒧𑒢 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖 𑒁𑒨𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩𑒱 𑒠𑒰𑒯𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮 𑒋𑒪𑒻𑒢 𑒢𑒯𑒱। 𑒢𑓄 𑒯𑒰𑓄𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒋𑒪𑒻𑒢 𑒖 𑒁𑒐𑒢 𑒑𑒏𑒏 𑒖 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒢𑒯𑒪𑒻𑒢, 𑒞𑒰𑓄 𑒢𑒳𑒨𑒿 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒁𑒨𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒂 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒼𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒿𑒮𑒲-𑒧𑒖𑒰𑒏𑒏 𑒢𑒳𑒨𑒧 𑒥𑒴𑒗𑒪𑒏। 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪-

-𑒩𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒁𑒯𑓂𑒢𑒰-𑒞𑒲𑒚𑒢𑒰 𑒏𑒱 𑒂𑒥 𑒮𑒧𑓂𑒦𑒰 𑒢𑒯𑒪। 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒥𑒢𑒧 𑒂𑒢 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒯𑒳𑒁𑒋 𑒫𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒳𑒁𑒋 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒰𑒙𑒢 𑒮𑒰𑓄𑒏𑒱𑒪 𑒔𑒰𑒯𑒥 𑒏𑒩𑒲।

उना, हिम्मतलालक विचारक रहलाहन दहला स्कैक मन राधारमणकेँ भेलैन। भेलैन ऐ जे कहुन बुझिनाम जकाँ बाजल अछि। मादे सालकिल तीस हजारसँ उपरमे होइत, ठाहुन चढ़निहार जखन दस हजार बैंकक कर्ज स्वावलम्बनक जिनगी बना पनिहार बसा सकैत, तखन गाछीक बदला नगद किए ने लऽ कऽ आरा नमहर स्वावलम्बी बनि जीवन धारण करैत। मुदा अपन मन राधारमणकेँ रोकलकैन जे राय जखन स्वतंत्र देशक सभ जन स्वतंत्र छी तखन सभ मन सेहो ने स्वतंत्र होएत, आ जखन सभ मन स्वतंत्र होएत तँ अहिना ने सभ धरा आ सभ कर्मी स्वतंत्र बुझैँ लगैत रहत। विचारकेँ मोड़ैत राधारमण बजला-

-हिम्मतलाल, बहुत दिनक पछाति दुनू गोटे एकठाम बैसलौं हेन।

शिकारी हिम्मतलाल गैंची माछ जकाँ गैंचियाइत बाजल-

-राय साहेब, उमेरमे अहाँ किछु कम छी मुदा बिसनाह हमरासँ बेसी छी।

हिम्मतलालक बात सुनि राधारमण चौंकला। चौंकैत चारू दिस तकैत भेला जे कान एहेन काज आकि विचार बिसरलौं जे हिम्मतलाल बाजल। अपन जखन रोजगार राधारमणकेँ नहि चढ़लैन तखन मन कहलकैन जे किए ने राजा रहथि जकाँ जागि बनि हिम्मतलालकेँ पुछिऐ। विचार पनिपुरू होइत राधारमण बजला-

-से की हिम्मत?

सवालक बात बजैमे जहिना मन हहराइत होइत तहिना हिम्मतलालक सहज करैत। बाजल-

-राय साहेब, दिन आ तारीख थोड़ जीवन छी, जीवन छी उमेर

क्रिया। स गँ बीचम काना एव न कएल। गहुम यननहम दिन गँ एँट एल नहो। अखन एकटा काज अनाधि ललौं, गही अनाधक बीचम एलौं हुना।

-काजक अनाध सुनि नाधानमध सुनासिनीकँ कहलखिन-

-अहाँ न गामक नहलौं आ न शहनक एलौं। यदिन चाह यियाउ, गखन न गय-सय्य कनैम मना लागग आ नीका हएगा। एाज न एाग, हन-हन गीगसँ काज चलग।

उाना, हिम्मगलालकँ चाह यीवेक मन नहि छल किए गँ आ0 घह्यक यात्राक यछाऽऽग वससँ उगैनग वस स्हएम चाहा आ विस्कूटा खा-यीव नन छल, मुदा नाधानमध अयन नाउं लगा यन्नीकँ आहैग दन छला, गँए बीचम किछ्छ वाजव मान चाह यीव कि नहि यीवकँ उविग नहि वूमि हिम्मगलाल चूय नहला। सुनासिनी चाह वनवए (गली। हिम्मगलालकँ असगन दखि नाधानमध वजला-

-हिम्मग □हिसक की हाल-चाल अछि?

हिम्मगलाल वाजल-

-हाय साहेव, हाल-चाल की नहग जहिना हाल-वहाल अछि गहिना चाल सहा कुचाल एऽऽय (गल अछि।

-वहाल आ कुचाल सुनि नाधानमध चौंकला, मुदा गकना सम्हानि वजला- स की हिम्मग?

हिम्मगलाल वाजल- हाय साहेव, अयना समैयक वाग विसैन जाउ, ज लाककँ हाथक-हाथ काज हाऽऽ छला। आव काजक कागजक यन्नाम मान आवेदनम अयन नाटक यन्ना नऽऽ लगाएव गँ काज हएगा। आव गँ सन्देन सालसँ ऊयन दशोककँ आजाद एना एल,

आबो जँ सार्वजनिक संस्थाकेँ अपन संस्था बूझि अपन हाथे काज नहि चलाएब तखन आजादीक फल की भेटत।

हिम्मतलालक बात सुनि नाथूनमल मुस्कियबो करै छला आ मन-मन मसखरी सेहो ताकि रहल छला, किए तँ गप-सप्पम रस भेटै छलैन। चयनासी नहियो हिम्मतलाल अधिकारी सभ लग बड़ी-बड़ी निवेदक बजनिहार बनियेँ गेल अछि। एतेँ अधिकारी चयनासी बूझि हिम्मतलालक बातक माजन दिअए वा नहि दिअए। ऊना, हिम्मतलालक अपन मन एते पीठ ठोकब करै छै जे ऊचित बात अपना बापोकेँ कहबै। तेहम जहिना अपन नाकर छी तहिना ने अधिकारी लोकनि सेहो नाकर छैथ। तखन बड़ेम कोन संकोच। तही बीच सुवासिनी चाह लऽ पहुँचली। तीनू गोटे माने नाथूनमल, हिम्मतलाल आ सुवासिनी चाह पीबिते रहैथ कि सुविता अपन कोठरीसँ निकैल ऊसारपर आबि बाजल-

-हिम्मत बाबा, सुविज्ञा बहीनक की समाचार?

पहिने माने किछु साल पूर्व, ऊना अखनो सार्वजनिक शिक्षा संस्थामे साल भरिक कोर्स होइए, जइसँ साल-साल विद्यार्थी क्लास आगू होइए, तइसँ अलग सेहो पढ़ाइक तरीका बदलल गेल अछि जइसँ सालमे दु-तीन-चारि क्लास विद्यार्थी बढ़ब करैए। सुविता सेहो बारहम सालमे मैट्रिक पास करि कौलेजमे पढ़ैए। तैसंग सुयश जीवन स्तर माने खान-पान, रहन-सहन रहैन ऊटि कऽ शहरमे तँ नहि, मुदा अस्पष्टि अवस्थामे सेहो पहुँचिये गेल छला। ग्रामीण परिवेशक संस्कार लऽ पन सेहो सुविताम दस्तक देइए दने छल, जे

निचनिग हाऽऽग ओ सीमायन पहुँच गेल छल जे लसयनक वैवाहिक सुख करैत रहल चाही। ओना, हाऽऽय स्कूलसँ सुविधाम वर्षक गुण आबि गेल छल।

हिम्मतलाल बाजल- बूझी, आठम दिन ओकर विवाह हएत। सभ किछु ठीक-ठाक भऽ गेल।

हिम्मतलालक मुँहसँ सुनीताक विवाह खसित ठनका जकाँ तँ नहि मुदा सघन वर्षाक बुन जकाँ जरूर सबहक मनयन पड़लैन। ओना, सबहक अपन-अपन मन तँए अपन-अपन दशा-दिशा सेहो छैक। नाथानमन मात्र अपन वैवाहिक घटनाटा सँ परिचित छैथ तँए समाजक सुख-संग नीक जकाँ नहि बूझै छला। मात्र सुहासिनीक संग नाथानमनक विवाह कहा रहल आ परिवारमे निग्रहसँ निर्वाह कहा ओठल, बस एतबसँ परिचित। एकर कारणो स्पष्ट अछि जे नाथानमनकेँ कॉलेज जीवनमे परिवारक दुनबबहान, दावन श्रमिक बना रहलकैन। बनाऽऽय टा नहि रहलकैन, रूला देत नहलैन। जऽऽसँ कॉलेज जीवनक निजत्वक संग एक नयानमे आइ.ए.एस. सेहो गनैय गेला। आत्मबलक संग आत्म-शक्ति सेहो दिनानुकूल मजगूत हाऽऽत गेलैन। जऽऽसँ आन आइ.ए.एस.सँ एते दूनी रऽऽय गेल छैन जे पिताक आक्रोशकेँ नाथानमन समन कलैन मुदा दासनाक छाती ओलाऽऽमान नहित छैन। ओना, अपन विवाहक रागल घटनाकेँ नाथानमन मनसँ ओतानि विसैन जकाँ गेल छैथ, जऽऽसँ न कहियो ओऽऽ आक्रोश दिस मन बढ़लैन आ न ओऽऽयन किछु सोचि सकल छला। मुदा आऽऽ हिम्मतलालक बेटीक विवाहक बात सुनि अपन सुविधा नजैनयन चढ़लैन। तँए गुम्म नहव नीक बूझि चुप रहला।

मुदा सुवासिनिया आ सुचिताक मनमे ओकरा विवाह मात्र अपन जीवनसँ सामाजिक जीवन धरिक, रंग-बिरंगक नुयम उठए लगलैन। अपन मनोन झाइसँ विवाहकेँ सुवासिनी देखैत, बजली-

-कतेक बरस सुचिताक छी?

हिमालयकेँ जीहयत सुचिताक जन्म दिन छल, लगल मात्र सुवासिनीक प्रश्नक गुनधुन उतरत देने बाजल-

-मम सहाएब, उठा छी गोऽ अठारहम बर्ख मुदा सुचिता जकाँ ज्ञान नहि भेल अछि।

सुरक्ष यथिवानक खान-पानक संग रहन-सहन अनुकूल रहन सुचिताकेँ शारीरिक श्रम कम छल जइसँ शरीरक कद जेहो ज्ञानीक संग जइ नुयँ बढ़ैत छल तइ नुयँ सुचिताक शरीरक कद नहि बढ़त उठरुन संग नहियेँ बढ़ल छल। एक गोऽ एकरहो देह गैयन शारीरिक श्रमक अनुकूल यथिवानक रहन खान-पान, रहन-सहन नहि रहन सुचिताक आगू सुचिता बढ़हन जकाँ छलैहे। सुवासिनीक पुछैक कारण मनमे छलैन जे बारहम-तेरहम बर्खक सुचिता जखन एहन अछि, तखन सुचिताक उम्र की हएत। पुरना जमानाक लोक कहै छला- अष्टवर्षे भवेत गौरी मुदा आब गोऽ से नहि रहल। अठारहम बर्खक पछाइत बेटीक विवाह करैक अधिकार माता-पिताकेँ अछि।

कौलेजमे पढ़ैत सुचिताक नजैर विवाह पछाति दिस बढ़ए लगल जइसँ एकसंग ओकरा प्रश्न सामनेमे उठि कऽ ठाढ़ हुअए लगलै। पहिल, माइक इतिहास मात्र विवाह सम्बन्धी बुझल, किए गोऽ माइयो मुहेँ सुचिता सुनि चुकल छल। दोसर कौलेजमे उठरुन घटना सहो देखि

चूकल छल ज वी.७.क ल७का आ ल७किया, यढाइ छाडि, गाम-घन छाडि कालकाताम जा कऽ काली मन्दिनम विआह कलक आ ७क्का कानखनाम दुनु □हिसक किनानीक नुयम नाकनिया कनै७ आ गामम दुनुक माता-पिताक वीच गाति-गनौवलि, मानि-पीटक संग मुकदमावाजी सेहो चलि नहल अछि आ ल७का यजक जेहला यात्रा हे७य गेल अछि।

सुचिताक मन धानक वहैत धाना जकाँ आगु वढल। आगु वढैत अयन यनिचित, यनिचित जे मानम जे सुचिताक देहम काना नाग हेन ७कटा तॉक्तनी लग जाइ७ जेठाम गय-सयक क्रमम जानकानी हेलै जे ७म.वी.वी.७स. यास लड़कीक विवाह जेँ ७म.वी.वी.७स. यास लड़कासँ कमसँ कनव समाजम हँसनाय हे७गा। मई हेलैं महान वैज्ञानिक वा महान विचानक किछ न हाथि मुदा विवाह साधानणो यढल-लिखल वा नहियाँ यढल-लिखल कन्याक संग हँसी-खुशीसँ मनौल जाइ७। अयन हँसानाय वूमि डाइ ७म.वी.वी.७स.क विवाह पिता जखन कन७ लगला तखन अयन वटीक यढाइक खर्च मनम नाचि उठलैन। मुदा उयाय की? तीन वीघा अयन वयौती सम्पैत वचि वटीक विवाह कलैन। यएह छी अयन समाजक उत्र यढल-लिखल यनिवानक आचान-विचान। सुचिताक मनम विद्रोहक लहैन जगल। मुदा माता-पिताकँ सामाम वैसल देखि मनकँ थामानि चुय नहला। नाधानमछ वजला-

-हिम्मत, कहन यनिवानम वटीक विवाह कऽ नहल छह?

हिम्मतलाल मनानुकुल यनिवानम वटीक विवाह ठीक कन छल जहिसँ

मनमे खुशी नहि करैत। बाजल-

-राय साहेब, जहिना अपन परिवार अछि तहिना ओकरो परिवार अछि।

जातीय कुल-गोत्रक मिलान सेहो एक स्तरक रहन एकरंग मानल जाइत अछि, मुदा ओइ बीच आर्थिक वा शैक्षणिक दूरी कोसो मील किए ने हुअए। एतेक विचार राधारमणक मनमे जागि गेलनि जइसँ पुन: दोहरबैत बजला-

-की अपना सन परिवार?

राधारमणक विचारकेँ साफ रखैत हिम्मतलाल बाजल-

-राय साहेब, जहिना अपन बेटी बी.ए.मे पढ़ए तहिना लड़का सेहो बी.ए. पास कऽ एम.ए.मे नाओं लिखौलक अछि।

आगू बजैत विचार हिम्मतलालक पूरम छल कि बिच्चेम राधारमण बजला-

-वाह..!

राधारमणक -वाह सुनि हिम्मतलालक मनमे अपन काजक प्रति आरो बिसवास जगल। बिसवास जगिते बिहुँसैत बाजल-

-राय साहेब, हमरे जकाँ लड़काक पिता सेहो अनुमण्डल कार्यालयमे चपरासीक नोकरी करै छथि, दुनू गोरेक दरमाहा सेहो एकरंगाह अछि।

अपना जनैत हिम्मतलाल दुनू परिवारक अधिक-सँ-अधिक समरूपता देखबए चाहै छल मुदा राधारमणक पारखी नजरि दोसर दिस मुड़ि गेल छलनि। बजला- -तहन परिवार कोना छइ आ हुनकर परिवार कोना छनि?

नाधानमधक रीगनिया समस्य छलैन ज वटा-वटी गँ यनिनानक रानी समस्या छीए। आइक यनिनश ७रुन वनियँ गेल अछि मान दान-दरुजक, ज ००मानदान किनानी-चयनासीक कान वाग ज ००मानदान अरुसना ऊँ चानियारा वटी यनिनानम दखे छैथ गँ अयन जिनगिया रनिक दनमाएसँ ऊयन खर्च मनम चरि जा०० छैन, गे0ाम जिनगी रनि अयन यनिनान चलव यराजक नफासँ वीर७-दुर्गम र०००य जा०००। गरिना ऊँ जनगन वटा नरुल मान चानि- याँच, छरु-साग गँ चारु खग-यथान रूअ् आ कि अयन नाकनीक दनमाएक संग यँशन रूअ७, वहुन-वाँटम य७न यनिनान चलवकँ दुरुन-दुर्गम सरा वनैवग अछि। अयन मनक उ0ग निचानधानाक वगकँ ऋषि-मुनि जकाँ नाधानमध अयना माथक कशक जटाम समटि ललैन, किञ गँ अखन सासाम रिम्भगलाल वटी-निनारुक काज आ७ल अछि। लाकक स्थिति ज नहो मुदा यनिनानक जीननक ज ढाँचा अछि उाकना युनवैग चलव न जीनन रला। आकि माया जकाँ यैठला युनुखाक आ मारु जकाँ जेगला यीढीक ७क्कैसम नंशक धिया-युना कना नरुग की खा७-यीअव गकना युनवैक रान रुमन अछि।

ज०० रूनसँ नाधानमध वाजल छला, ग०००सँ ऊयनक ऊयन मान रल निम्न रूनम रिम्भगलालक निचानधाना अछि। अयन धानाक अनुकूल रिम्भगलाल वाजल-

-राय साहेव, अयन यनिनान गँ वुसल-गमल अछि मुदा गना रs कs दुनकन मान जिनकासँ कुटुमैगी र७ग, यनिनान नहि वुसल अछि।

निचानकँ आगु वढवैग नाधानमध वजला-

-एना काल त गप-सप्प भेल, ता कुशल-क्षेम गेल। दुनूक सहेबसँ चलैत अछि, तहुना काज चलैत अछि, तेँ छोटकाल निश्चिन्त भऽकऽ लगल करैत। बिनाह काज नहि परिवारक खर्च छी, तेँ अहाँथिनसँ तइक बिचार करैत अछि।

राधारमणक बिचार हिम्मतलाल बूझि गेल। अपन ज्ञान सल्लूक बनबै चाहु लगलौं बाजल-

-राय साहेब, अनाजी-पूनानी ल ओना दुनूक बसक सरुन जनमाना भऽकऽ। कतेक कर्म बाँकी नहि रहल। तइक तीन बरस छल त बूझि परऽक ज्ञान निकैल जाएत।

रातिक दस बजे। खेला-पीला पछाऽऽ राधारमण हिम्मतलालकेँ कहलखिन-

-हिम्मत, तऽऽ काज चलह, एक हरनरी परिन बाजि जाह।

कचहनिया पीछ्र लाक हिम्मतलाल अछिओ। बाजल-

-राय साहेब, अपन बात न ओकरहनरी बाजि जाएब, मुदा माऽऽयक समाद दिल्ल छौन, घरवालीक हृट अछि, स्त्रीक्षाक अलगे अछि। तेँ ओकरहनरी करा बाजि सकै छी।।

जहिना कतेक पाथीक बिचारकेँ पाथीक शीर्षकक नूपम राखल जाऽऽत तऽऽसँ पठनिहारक कान आँखिसँ देखिय कs 0।6 हs जाऽऽत तहिना सुनासिनियाक आ सुचिताक कान 0।6 हएल। कतेक किछु न 0।6 भाएत, जखन दूनूक बीच पारिवारिक सम्बन्ध अछि तखन परिवारक सरूक सम्बन्ध न अपन-अपन हएल।

राधारमण बजला-

-चाह नख-शिख वर्णन लिखह आकि शिख-नखक वर्णन लिखह, बात

बनबनिय भेल, दुनू लिखिनिहार श्रेष्ठ सृष्टिकर्ता भेब कला। जहिना गाछन निचान ठुअ् गहिना बाजल।

हिम्मतलाल बाजल-

-राय साहेब, जहिना अपना मनमे अछि गहिना माइलियाक इच्छा छै, जे अपन विवाहसँ बानि दिन पहिने सरकार पहिनाए आबि कऽ मिथिलाक जे विवाहक बनहार अछि ओइठ बनहार अपन बटीक विवाह करब। से गोँ अपन सरकार पहिनाए नहुन न सम्भव हऽ सकैत। ओना, बानि दिनक समय आ मिथिलाक बनहार, कना सम्भव हएत। राधारमणक मनमे नाचि उठलैन। कहू जे बुढ़क धान पहिने गाडल जाइत, पछाइत राडल जाइत, गखन सुखैल जाइत पछाइत न कुटाल जाइत, से कना बानि दिनमे सम्भव अछि। अधोनी कि बन-बनी बनबैमे कम मेहनति अछि से बानि दिनमे कना हएत। गहुमे अधोनीकँ सुखैयमे समयक हिसाबसँ दुइया दिन लगैत आ पाँचो दिन नइँ लगैत सहा बात नहियेँ अछि। गैसंग घन-दुआनक लिखिया-पढ़िया मात चित्रकारीसँ शुरू सहज लिखै छनि, सहा अछि। गहुमे आन काज छी नहि जे एका-दुइयाटा चित्रकारीसँ काज चलि सकैत। विवाह सन यज्ञ छी। कारबनसँ राज-सिंहासन गकक चित्रकारी करैक काज अछि। मुदा मनकँ मिथिलाक दृश्य हटा राधारमण मन मिथिलाक दिशा दिस मोड़ि विचार करत लगला। मिथिलाक दृश्य की? बनइह न जे जे कारा काज, बाह साधारण जीवनसँ झटल हुअत आ उत्तकाटिक यज्ञ सम्पूर्ण हुअत, जग मनसँ मथन-मथि करैग करब ओग ओ नीकसँ नीकगम हाइग जाइत। पइह छी मिथिलाक दर्शनक दर्पण। जना कारा राग्य नस्मृ अछि,

ओकर उपयोग साधारणो ढंगसँ होइत आ अधिक-सँ-अधिक नीक बना सेहो नइ भऽ सकैत, ईहो बात नहियेँ अछि। ओहिना, आना-आन जीवनसँ जुड़ल जे काज अछि ओहूमे नीक होएब कठिन। मुदा संजोग रहल जे हिम्मतलाल अपन विचारकेँ, सन्मुख धार जहिना अपन धाराकेँ प्रवाहित रखैत धारक अगल-बगलमे मुँह बनबैत दोसरा धाराक धार बना प्रवाहित करैत आगू बढ़ैत ओहिना हिम्मतलाल अपन विचारकेँ यथास्थितिमे समेटि बाजल-

-राय साहेब, की कहब। बुढ़ियाक रंग-ढंग दोसर छैन।

हिम्मतलालक माइक रंग-ढंग दोसर छैन सुनि जिज्ञासा करैत राधारमण बजला-

-की दोसर?

हिम्मतलाल बाजल-

-राय साहेब, एना होइए बनियाबट लगैत जे राधारमण बौआसँ हँट एना बहुदिन भऽ गेल। बचाव करा रहैत होरा करा नहि स करी बूझब। ओना, माबाइलसँ गप-सप्प होइए छैन, मुदा ओइसँ मन थोड़ भरै छैन।

हिम्मतलालक मुहसँ माइयक बात सुनि राधारमणक मन जहिना निच्छाह दौड़ए अपन माए लग पहुँचलैन ओहिना सुवासिनीक मन सेहो अपना माएयन पहुँचलैन। ओसंग सुचिताक मन सेहो अपन माइयक जीवनक ओइ घटनायन पहुँचल, जखन राधारमण विवाह करैमे अपन पिताजीसँ विद्रोह कलैन आ अखरा लागी बनल छथित। देखु ह सखि दुनियाँक रीत एक घर कानै एक घर गीत..। किया अपन जिनगीक कमाइ लुटाइत देखि कनैत गँ किया ओही

लुटलकैँ लागि हँसबा करैत अछि। समाजो तँ समाज छैक। अठारह वर्खक पछाति लड़कीक आ तैसँ ऊपर उमेरक लड़काक विवाह करब तँ तीन-चौथाइ समाज मानि चलैतम आनि रन छैथ मुदा अपन स्वेच्छासँ, वयस्क भेला पछातियो, लड़का-लड़कीक विवाहम अपन विचारक कोनो मोल अछिए नहि। गाए-महींस जकाँ खरीद-बिक्री भऽ रहल अछि आ सभ मूँह देखि रहल अछिए। तहूम युवा वर्गक ई खास समस्या छै तै दिस किया तकनिहार नहि। बाह रे आइक पढ़ल-लिखल समाजक नव पीढ़ी। विवाह परिवारक आधार महान कृत्य छै ई वैवाहिक नियम फूलसँ हल्लुका, फूलसँ मीठ अछि आ असान जीवन बना सकैए, स किया देखिय न पब रहल अछि।

ओना, सुविधाक बहन्ना देखि माधवानन्दक मन सदा व्यग्र भऽ रहल छलैन, मुदा आलमारीम पोथी रखनिहारक मनम एक आशा तँ बनल रहैए ई समय बलायन वा लगलायन निकालि देखि लेब। तँए माधवानन्द अपन विवाहकँ प्रस्तुति हाइसँ ताकन छला आ मन-मन आँकि रहल छला ई हिम्मतलाल अपन मान-मर्जादा रखैत अपन बेटीक विवाह ठीक करत अछि। मुदा तैया मनम एकटा विचार घूनियाऽय रहल छलैन ई अनमेल विवाहकँ सममेल कोना बनौल जाए। अनमेलक कारण अखन नहि, किए तँ ई बाधा अनमेल ठाढ़ कन अछि ओ समाजकँ विग्रह करबकँ नीक बुझैए...। माधवानन्दक मनम घूनिया ऽऽहा रहल छैन ई जखन लड़का-लड़कीक जीवनक मिलान, मान जहिना टुटा धान पाछूसँ बढ़ैत आवि रहल

अछि, उठैँ दुनूक मिलान एक स्थानपर होएब अछि जेठाम दुनू प्रवाह मात्र येठला जिनगीक प्रवाह आ सम्मिलित भऽ एक दिशामे बढ़ैत जिनगी करा प्रवाहित होइत, एकरा बूझब जरूरी अछि। मुदा अपनाकेँ बैसाखक बीच, श्रेष्ठ बुद्धि अपन कारण विचार बदलैत उपयोग नहि करैत चाहि रहल छला। सुचिताक मुँहक बुझि देखि जहिना जाधानमनक मन मथन करैत रहैत तहिना हिम्मतलालक मनमे सेहो उठि रहल छल, मुदा ताकरा देवा नहि हिम्मतलाल बाजल-

-बौआ सुचित, तोरा संगे नव अबैल सुचीत्रा काइलक अछि, से...।

ओना, सुचिताक मन दासन दिस मात्र समाजक नीति-रिवाज दिस ठौना रहल छलै मुदा हिम्मतलालक बात सुनि एकाएक मनकेँ जे सुचिता मोड़ि रहल छल ओ समुचित ढंगसँ नहि मुड़ि सकलै जइसँ मुहसँ निकललै-

-बाबाजी, हमरा किछु..?

-हमरा किछु सुनि हिम्मतलाल बाजल-

-एना किए मुड़ी झुकबै छी जखन सुचित बउ छह, खुलि कऽ बाजह। अखन अपन सरह न एकठाम बैसल छी, किया आन थोड़ अछि जे बजने अपन ना यतिनाक गोहीन होएत। यतिनान छी, यतिनानक सरह जनक विचारक समावेश यतिनानमे नहि होइत रहत तँ एक न एक दिन गुड घाँर जकाँ सड़ि कऽ फूटब करत, जइसँ नोकसान हब करत।

ओना, सुचिताक मन गमगमाएल रहब करैत मुदा मनकेँ करा काबू कएल जाए ताकरा प्रयास थोड़-थोड़ होइत गेल छलै। ओना, काबू करैक जगह अलग-अलग अछि, विचारकेँ विचरक राख

सुधानि, अएलाक पूर्ति भऽ सकैत, मुदा क्रियाक बीचमे सँ किछु ने किछु नोकसान, मात्र गमगमाएल मन काज करए, ओकर क्रियागत रूप ई अछि एकर किछु-ने-किछु अंग बनियेँ गेल रहैत।

ओना, धस-धस, सुचिताक मनमे ई गमगमी छल, ओ धीरे-धीरे धीर भऽ रहल छल। धीर बाबूक काननमे भेल ई हिम्मतलालक मूँहसँ एक परिवार सुनि चुकल छल। जखन परिवार छी, परिवारमे बच्चासँ वृद्ध धरि रहै छैथ, तखन सभ किया बैस जँ बाबा विचार परिवारक करैक रहत गामे प्रजातंत्र जकाँ अनुरूपी आ अनाथीक विचारक महत थोड़ एकरंग रहत। एक गोटा नमरुन जिनगी बीता दुनियाँकेँ देखिया चुकल छैथ आ भोगिया चुकल छथिन, आ दोसर मात्र बच्चा, कम देखन-भोगन अछि, गामे सँ अपन न विचार करैत पड़त ई बात विचारक करुन महत अछि। एहन विचार सुचिताक मनक गमगमीकेँ नम-नमी दिस बढ़ौलक जहिसँ पिताक विचार बूझैक जिज्ञासा मनमे जगि गेलहि। नम हाऽ्न सुचिता बाजल-

-बाबाजी, अहाँ समाजमे बटी-विदागनीक की नीति अछि?

ओना, सुचिता अपन मैथिल नीतिकेँ नजैनमे नखि बाजल छल, किएक गाँ अपना गामक पूरान चलैन छल विवाह आ द्विरागमनक दूनू प्रक्रिया। अखना किछु अंशमे अछिए, ई विवाह भेला पछातिया कन्या नैहरमे मात्र माता-पिताक गाममे रहै छैथ आ लड़का अपना गाम आ सासुरमे रहि सकैत। खाएत ई अछि, समयक हिसाब जेना उपयोगी छल, ओना आइक परिवेशमे रहियेँ रहल। समाज बदलल अछि, व्यवस्था एना बढ़ि गेल अछि ई जहिसँ विवाहक बनियापी तीन दिन रहि विवाह पद्धतिक पूर्ति करै छला, से अखन

उतरल रहऽ गेल अछि जे तीनदिना एकदिना रहल आ एकदिना खाइ रहित धनिक रहल जा रहल अछि।

ओना, हिम्मतलाल ओ बापकेँ बूझैत जे सुचिताक मन अखन साठिया रहलासँ बसीक नक्शनम दौड़ैत रहैए, हमना-सए जकाँ बह्मटा बनद जकाँ धनिलानक कौलू नहियेँ रहल रहन मुदा जखन बाबा कहैत आ अपना बी.ए. पास कनहि छी तखन तँ उतरल जबाव दिअ् पड़त न जे समतुल रहइ। हिम्मतलाल बाजल-

-बाउ, समाजाक जाल मकड़जाल बनि निकनाल अछि, तँए एक बनहान चलब कठिन अछिए। ओ तँ मनुखक जिनगीक ढंगक हिसाबसँ बढ़ैत अछि मुदा किछु एहना तँ अछिए जे नूठ बनि नूठिया रहल अछि। तँए किछु...।

हिम्मतलालक विचार सुनि नाधानमद, एतकाल जे कनउनिय नजैर देखिया रहल छला आ कनउनिय कान सुनिया रहल छला तकना बढ़ैल साम कलैन। तैबीच सुचिताक नजैर सहा पितायन पड़ला। ओना, जखन नाधानमद साम नजैर बना आगू तकलैन तँ पत्नी सुवासिनी, बेटी सुचिता आ मित्रन हिम्मतलालकेँ सहा देखलैन। तीन मूहाँनी नरफा जकाँ लाकक बैसानक बीच नाधानमद अपनाकेँ पलैन, तँए मनम एलैन जे किए न विचानक उतरल प्रवाह प्रवाहित कनी जे जहिना काना धानक बाढ़िक पानि खत-पथान, पाखैन-ठूनानक पानिकेँ संग कन बाढ़िक नूपम बनबैत आगू बढ़ैत तहिना सबहक विचानक बाढ़िम रहइ। विचान व्यक्त कनैक बौनस-समतल भूमि देखि नाधानमद बजला-

-अखन बसी पाछूक विचान दिस जाइ-क नहि अछि, ओँ एतबा

विवाह सभक बीच समागम भऽ जाए, जे भोगक बीचक जीवनक अछि, मुदा से छुछुन बुझि पड़ैत।

-छुछुन शब्दक मान हिम्मतलाल नीक जकाँ नहि बुझि पलक, सुहासिनी देहक छुछुन आँगी जकाँ छुछुन शब्दक मान बुझली, मुदा सुविता नित्यानन्दक विवेक विवाहक आनक शब्द नुयम बुझि गेल। ओना, शब्द आनसँ जहिना मनक एक कोन विहुसल रहिना दोसर कोन निछल सन भेल। तेँ आनुक भऽ सुविता बाजल-

-की छुछुन, पिताजी?

सुविताक प्रश्न सुनि जेना हिम्मतलाल अकबकाएल तेना सुहासिनी तँ नहि अकबकली मुदा चौंकली जरूर, जे की बुझि सुविता एहन प्रश्न उठौलक? ओना, नित्यानन्द नजरि उठा-उठा हिम्मतलालपर देखथि आ सुहासिनीयोपर, किए तँ हिनका मनमे उठि रहल छलैन जे जाबे किया अपन विवाह अपना मुहसँ नहि निकालत ताबे ओकर पटक बात प्रमाणित कोना हएत। मुदा तेँ पहिलुक अवस्थामे सुहासिनियोक आ हिम्मतलालक मन ओमनाएल छल, जहिना दुनूक मन अपन ओमनी सामनेमे लागल छलेँ। तँए निवनित मनकेँ मनक मानियोँमे उठैत-तुरैत देखि नित्यानन्दक मनमे उठलैन जे नीक हएत, वैवाहिक जीवनक महत बुझैत विवाह की छी, पहिने तेँ दिस बढ़ी। बजला- -बाउ सुविता, आमक सुआद कहुन होइए, ओहिमे पक्कल गुद्दा वा नसक की सुआद आ गुण अछि, तहिना- अधपक्कूक की अछि आ काँचक की अछि। काँचोमे खिच्चा काँच अछि आ अधखिच्चा अछि आ डम्भाएला तँ अछिए। तँए नीक हएत जे जहिना गाछमे बुझैत जे जिज्ञासा छैक, ओहिमे जिज्ञासा

याछ कारा निचान निचनक्ष मनम कनेंज, जछ्छ आधानयन प्रश्न उ(0ज गँज राँग-वथूआ ज वृमेंग हूअ् स वाजह। हमना लग नछ्छ वजवह गँ दूनियाँक वीच कना वाजि यवह।

ज्क गँ ननसीन सुविगा, गहुम कौलजक संगी सवहक वीच वजन्धा सुविगा, मागा-यिगाक वीच सुविगा, ज्क यनिनानसँ दासन यनिनानक वीच सुविगा, उमनक हिसावसँ सरूसँ कम सुविगा, वाजल-

-वावूजी, ज्क गँ हमन उमन की अछि ज कग दखलौं हुन, मूदा जज्ह दखलौं हुन गछ्छम किछ-किछ समनुयग अछि आ किछ-किछ निसमगा गँ अछिज।

सुविगाक निचान सुनि नाधानमक्ष यनी दिस दखज लगला ज यनिनानम वद्धासँ ऊयन माज आ माजसँ ऊयन न यिगा हाछ्छ छैथ, जँ स नहि हूजग गँ यनिनानम खाधि वनेंक सम्भावना वनियँ जाछ्छज। ज्हना गँ सम्भव अछिज ज यिगाक निचानक यछाछ्छग माज अयन नियनीग निचान देथ, गखन? दुनियाँक सरू कथुक दू नुय अछि ज्क अइान यऊ अछि दासन छ्छजाग यऊ। अइाना छ्छजाग वनेंज आ छ्छजागा अइान नछ्छ वनेंज सहा नहियँ कहल जा सकैज...।

नाधानमक्ष वजला-

-वाउ सुविग, यछ्गिक हिसावसँ निनाह अयन-अयन सुनिधानुकूल यनिवशक हिसाव चलिय नहल अछि। गही वीच नीक-वजाज सहा अछिज। मूदा वनहानिक नुयम ज निषमगाक निकनालग मान जीननक वीच वाधाक खाधि, वनि नहल अछि, उा गँ जकन समस्या छिउे, मूल कर्गा नजह रुला। गँज उाकना छ्छी वाग वूमेंक छै ज जखन हम अ0ानह वर्खसँ ऊयन रुs (गलौं गखन अयन जिनगी

कना चलत सङ्ग वृद्धेक अनरोध तँ अपन न बनबऽ पड़त।

पिताक निधान सुनि सुचिता चकोना हाऽऽत चानु दिस उनैट-उनैट देखैत बाजल- -अतन, लड़की अपन जीवनक निर्णय स्वयं करै तँ पिताकँ कोना कलश हवा चाही?

नाधानमध-

-नहि! नहि हवा चाही। मुदा अनुरनी माता-पिताक विसवासक संग उँ सम्बन्ध बनऽ। ओसँ आगू अखन नहि। किऐ तँ हिम्मतलाल सङ्ग यस्नक दौतम आऽल अछि अपना न सूतवाक अछि ज काल्हि दिनक छुट्टी सङ्ग कनऽ पड़त।

वसक यात्राक थाकल हिम्मतलाल नहव कनऽ तँऽ कखना सकूआऽलम

-हुँ तँ वाजि दिअऽ मुदा सुनऽ नहि। मुदा सुनासिनी अपन माऽऽक संग अपन सुचिताकँ ऽकधाना धानम देखि नहल छली।

(समाप्त)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१३.जगदीश प्रसाद मण्डल-धूनरून्ना लाक(लघुकथा)



<u>जगदीश प्रसाद मण्डल</u>

<u>धूनरून्ना लाक</u>

नागिम एकटा घटना रुल, जॳॗ कानॳँ रानसँ लाकक वीच चूलवूली शुनु रुला। ज काना नुयम अथ्यन यऊ नाखि-न-ज सूनै ऊा काना-यऊयागी वनॳ लगला। ज0 मासम जदिना काना साल सूखाॳल धानम वाढि आवि माछक अमान लगवैॳ, गदिना गामम रुला। गामक अधिकांश लाक घटनाम सम्मिलि रुॗय गेला। कौ याँचटा दसटा यूनूख ॳकOाम वैस गँ कौ याँचटा दसटा मौगी ॳकOाम वैस घटनाक समीऊा कनॳ लगलैथ। गदिना कौ मौगी यूनूख मिऋान-। अयन...नंगना सहा-रुs निनाकनक्षम लागल गँ कौ लूह्रा

दनवज्ञायन वेस हिउेवा नही कि ज चाह यीवेल कान चोक दिस जाउव नीक हउा। उ0Iम चाह यीवेक वह:ानासँ गामक समाचान जानव अछि। गामम दस चोनाहा वनियँ (गल-याँच दाकानक चोक-अछि। गामक लाकम ज जहन भिकानी स गहन समाचान उकाभ्रि-कनिा छैथ। कहव ज समाचान गँ समाचान छी ज काना चोक .वदल की हउा-चोनाहाक किउ न हाउ गऽऽम हउ? हव कनैउ, किउक गँ अनका नुयम प्रमुख नुयसँ काना घटनाक गीन नुय चोक-चोनाहायन अवेउ। उक चोकक नुय घटनाक यउम हाऽऽउ गँ दासन चोकक नुयक आवाज नियउम हाऽऽग अछि। गहिना गसन आ की सही।

यन्नी चाह नन दनवज्ञायन यहँूवव कलीह कि नस्मायन रागीलालकँ अवेग दखलिउ। मनम 0हेक (गल ज हालक सह समाचानक राँज नीक जकाँ लगि जाउा। उाना, रागीलालक वनहान अयना संग कहिया अथला नहि नहल अछि, जना लाकक मूहसँ सुनै छी। गकन कान(धा अछि ज अयन जीननक असाभयसान कम अछि-, गँउ वसी लाकक खगगा नहियँ हाऽऽउ जऽऽसँ लाककँ विश्वेक अनसन रहग। मूदा उग गँ कानसँ सुनव कनै छी ज गामम रागीलाल सन धूनहन्ना लाक दासन नहि अछि। की धूनहन्ना अछि आ लाक की धूनहन्ना वूसे छैथ स गँ गामक साह याँच हजान लाकक मन जनगैन मूदा अयना मनम स सह किछु न अछि। लाका गँ लाक छीह, कगो काना घटनाक उँ यउकान हाऽऽ छैथ गँ सुन्नन सुउील शहुम-चूनमून-वजे छैथ आ कगो घटनाक नियउकान नहल गँ विक्कान

थह्रम वजिग छैथ। खाउन ज छैथ, डा गाम-गामक लाक अयन-समाजक वाग वूसगा। -अयन गाम

रागीलालकँ दखि यम्रीकँ कहलयैन एक गिलास चाह आना नन" - "आडा

चाह आनए यम्री आँगन दिस वढली आ अयन रागीलाल दिस दखैग वजलौंरागीलाल" -, गूँ वहुग दिन जीवह। "

जहिना काना नवनाकानक नचिग निचान वन वन दासनाक मूहसँ-निकलन आयुम वृद्धि हा‌ऽ छैन गहिना ाकियाकs रागीलालकँ रागीलाल वनल नहग आ कखन जागीलाल वनि जाएग, गकना काना ाकान नहियँ अछि। जहिना वजलौं गहिना ानाहि मौगी जकाँ.., मान विनु साचननिचानन काना प्रश्नक उप्पन दऽवाली-, जिनका दासन नुयम ानयन वनी यकवेनाली सहा कहल जाऽ छैन, गहिना रागीलाल वाजलकाका" -, अहाँ सवहक आसीननादसँ न जीवा कनै छी आ जीवा कनव। "

गैवीच यम्रियाँ चाह नन आँगनसँ यहूँचली आ रागीलाल सहा दनवज्ञायन आवि वैसल। यम्रीकँ नौगुका घटनाक रनक लागि गेल नहैन। अँगन वाहनैकाल मनमाहननाली रौजी कनहूसकी कहि दन छलखिन ज कगी वाजव नहि। गँए यम्री हमनासँ छियाऽय कs नखन छली। वजली नहि। यगि यम्रीक वीच सहा विचौलिया प्रवल-अछिए। जहिना कानावान कनैग एजह सर कनैए। सुधंग स्त्रीगणकँ याह्रा वजैए ज याऽकौाीक मामला छी-, कगी वाजव नहि, आ कनागीम नाखल गहनाजवन ाकि लऽए। -

पत्नीक हाथमे चाह देखि रंगीलाल बाजल-
"राय साहेब, हमनि नाहि जगल छी।"
जहिना रंगीलाल बाजल तहिना अपना बजलौं-
"चाह पीब लिअ, पीनक एक टूटि जाएत। तखन गाम-घरक गप-
"सप्प करब।
ठीक, अनका लगमे रंगीलाल जहेन सनपट मुँह खोलै तेना अपना लगमे नहि खोलै मुदा सनपट ढालक बजैनिहारक हाथ जहिना कखनाकखना बहैक जाइत छै-, तहिना सनपट बजनिहारक मुँह सेहो बहैक जब करै छैक। -रंगीलाल बाजल..
"राय साहेब, गाम घरक गप अथाह अछि। ककर मजाल छी-
"घरक थाह पौत। -ओ गाम
रंगीलालक विचार किछु साहेबगन सेहो लगल आ किछु अनसाहेबगन सेहो लगब करैल। पूछलिऐ-
"से की रंगी?"
आदरपूर्वक किनकासँ काका विचार पूछलापर जहिना मान-अपमानक विचार मनमे जगिए जाइत छैन, तहिना रंगीलालकँ सेहो भेल। गौवीच गिलासक आधासँ बेसी चाह पीब गेल छल। रंगीलाल बाजलराय साहेब" -, अखन गाममे एकटा नव घटना घटि गेल अछि, गौंए गामक जतेक चर्चा अखन नहि करब। मुदा संक्षेपमे गौं एते कहिए दैब जे काका गाममे कते नंगक मारि अछि, कते नंगक गारि अछि, कते नंगक गाछपानिक उप-बिनीछक संग अन्न-जा-बानी आ उपजौनिहारा कते नंगक छैथ से थाह लगाएब असान थोड़े अछि"!.

रागीलालक तथ्यपूर्ण विचार अपना मनमे ठेकल। ठेकैत बजलौं-
"अखन पुनमा गय सप्य छाउहि। हालक जे हालत अछि ताव-
"गय कतहि।
रागीलाल बाजल-
"राय साहेब, काल्हिसँ आइ धनिक जे घटना अछि अखन ताव
कहै छी।"
अपना नीक बूझि पड़ल। अनेन अठानह पूनाधक चानि लाख
मंत्रश्लोक पढ़ै पाछू जे अपन अस्थी वर्षक उमेर खपा लेब आ
पाउब किछु न, तँइसँ नीक न जे वेदक ओहि लाख मंत्रकेँ जपैत
पाँच लाख मंत्रक राग रागि लेब। एकर मान इहो नइ बूझब जे
वेदक मंत्र मनुष्यक बुद्धि विकासक संगसंग- चलबा करैत, नितमैत्री
अछि आ पैछलाकेँ छाति गँ अछित। -बजलौं..
"अपना जे नीक बूझि पड़ए, सएह बाजह।"
अपन दशा-दिशा व्यक्त करैत रागीलाल बाजल-
"राय साहेब, की कहब। दिनानुदिन जइसँ समाजक पाछू-, मान
गामक समाजक पाछू, समय खपबै छी सएह समाज धूनरूम्मा लोक
बूझैत।"
-धूनरूम्मा शब्द गँ बहुत दिनसँ सुनैत आबि रहल छी मुदा गुनलौं
कहियो न, तँइ धूनरूम्माक वास्तविक रूप अखन एक नहियेँ बूझिमे
आबि सकल अछि। बजलौंकी धूनरूम्मा रागी" -?"
रागीलाल बाजलराय साहेब" -, पाछिलि व्याकरण गँ नहि पढ़ल
छी जे ध्वनिक आधारपर बाजब, मुदा गामक लोक जना बनहानमे
बजै छैथ तेना कहै छी।"

वजलौं-

"हँ, स७ह कहह?"

रागीलाल वाजल-

"धूनरुन्ना लाकक मान रल ज जहिना समाजम किछु ७रुन लाक हा०० छैथ ज सामाजिक वन्धनक नाम्हाक निवानकँ नहि मानि, सीमाक उल्लंघन कनै छैथ गहिना खाक ंआ७-धूनकँ मान खाक सीमा-सनरुदकँ नहि मानि कूदिकऽ टपैवलासहा छैथ, न७ह न रला धूनरुन्ना लाक।"

रागीलालक निवान मनम नीक जकाँ ऊँवल कि नहि स ४७रु७म निवान नहि कऽ सकलौं मूदा ७ग गँ मूरुसँ निकैलिय गेल-

"हँ, स गँ स७ह न रला।"

समर्थन यव आकि मनक उदल्गम रागीलाल वाजल-

"राय साहेव, अखन वीगल दिनक घटनाकँ वीगमान नहि वीगल मनल मानि छा७ द०० छी, कौल्हुका ज दिन नागिक अछि गाव-"कहै छी।

रागीलालक निवान अयना नीक वूमि य७ल। वजलौं-

"कौल्हुक दिनयन न ऊँमूका दिन ०।८ ह७ग, गँ७ कल्हुक रनिक कहह।"

रागीलालक मन मानि गेल ज वसी यैछला निवानम-दिनक ऊगला-वसी हा००७ मूदा टटकाम गँ स-न कमन०० ह७ग। रागीलाल वाजलराय साहेव" -, काल्हि दुटा घटना रल, दिनक घटना वकीगग नूयक छल गँ७ ००ी याछू क कहव मूदा नौगुका ज रल-

"स यहिन कहै छी।

बातकँ बांगन हाऊसँ नाकेँ बजलौं-

"हँ, सएह कहह।"

रागीलाल बाजल-

"गामसमाजम आऊय नहि-, सभ दिनसँ उपद्रवी तत्व रहल अछि से तँ बुझिते छी, आ ऊहो तँ बुझिते छी जे अपन गाम किसानक गाम छी।"

विभ्रम बजा गेल-

"हँ, से तँ छीहे"!.

रागीलाल बाजल-

"उपद्रवी तत्व अनका नंगक अछि।"

अखन तक अपन साँढ़यथानम हाऊए-पाएक उपद्रव जे खल-, तावकँ उपद्रव बुझै छी मुदा रागीलाल अनका नंगक कहैए, तँए जिज्ञासा जगब कएल। पूछलिऐ-

"से कना रागी?"

रागीलाल बाजल-

"राय साहेब, सालहआना उपद्रवम दुअन्ना रंगनानक छैन, बाँकीम दसअन्ना लोकक अछि आ चारिअन्ना कीट जानवर धनिक-सँ-यांग-

"अछि।

रागीलालक विचार सुनि मन मन विचारए लगलौं तँ बुझि पएए-

-लगल जे रागीलाल ठीक कहैए। बजलौं

"कनी विकट्ठा कऽ रागी बाजह।"

जना कोना गम्भीर विषयकँ चिन्हक क्रमानुसार व्याख्या करै छैथ तहिना रागीलाल बाजल-

"राय साहेब, भगवानक दाब बुझना जाइ छैन जे कहिया काल नमहर गुमकम कऽ दैत छथि तँ कहिया सघ हानि वसी वनखा दैत छथि, कहिया शीतक मासम शीतलहरी कऽ दैत छथि।"

रागीलालक विचार मनम उठकला। उठैकण बजलौं-

"हँ से तँ कहैत दैत छथि।"

शानंजक गोटी जकाँ रागीलालकेँ जेना सह भेटल गहिना बाजल-

"राय साहेब, उपद्रवी नहिए भगवान भ्रमानदान तँ छथिए। तँए अपन श्रमान वँववे काना काज करै छथि। लोक जकाँ न नापि क-चानाकऽ ककरो घनक नीस नष्ट चानवे छैथ आ न ककरो खाम लगल जगाण काटै छथि।"

रागीलालक विचार सुनि मनमे हँसिया लगि नहल छल जे जेठ रागीलालकेँ समाजक लोक धूनहल्ला बूझै छैथ, मान जकरा अपन काना ठकान नै छै, सएह भगवानकेँ कठघराम ठाढ़ कऽ दाब-निनदाब दखा नहल अछि। बजलौं

"रागी, भगवानक लीला अपनमयान भलै, तँए बूनकन गय छाएह।"

रागीलालक नीआँ मनमे जेना उगनास भेल, गहिना बाजल-

"राय साहेब, येठला उपद्रवक चर्च अखन नहि कनव किएक तँ उ वीतल दिनक वीतल समाजक विषय भेल। अखन अखुनका सुनू। आइ अपन गामटा म नहि, गाम गामम यासुआ सुगन आ वानैया-सुगनक वढ़नानि भेन किसान सरकेँ नमहन यनशानीक मूकावला कनए यति नहल छैन।"

रागीलालक विचार सुनि अपना मनमे अनुमानसँ उठकल जे भनिसक

गोनुका घटना जकरा सन अछि। की यशपाली रागी" -वजलौं..?"
रागीलाल बाजल-
"नाथिम ओगानकेटा सुगन कावी खाम यचल नहि गेल।"
बूझल नहि गखन न, स गँ बूझल छल नहि। पुछलिऐ-
"की यचल नहि गेल?"
रागीलाल बाजल-
"राय साहेब, गम्भीर संकट, गम्भीर विषय बनि गाम समाजमे ०।८-रs गेल अछि। खासकs किसानक संग गँ आरो गम्भीर स्थिति "बनि गेल छैन।
वजलौं-
"स जकरा संकट, मारि मे बूझलौं ज कोना रहल अछि?"
रागीलाल बाजल-
"राय साहेब, समय जकरा माचयन आबि गेल अछि ज लोक मन-मन कँकिया नरल अछि, मुदा उस मुँह खालि किया बाजि नहि यब नरल अछि।"
रागीलालक विचार सुनि मनमे रहल जँ रागीलालकँ सहे देग दाहनाकs पुछब गँ गय सम्यक उत्तर बदेल जाएत। गँओ पैछला--विचारकँ जगबैत वजलौं
"रागी, अखन दासनसम्य शुनु कन-गसन विचार छाचहि। ज गय-छलौं, बस गावक विचार कनहि।"
रागीलाल बाजल-
"राय साहेब, कौनूका काजक विन्धाक सागसँ नाथिम नीन नहि रहल, गँओ गनगन विछान छाडि टहलओ लगलौं। दच्छिनवारि टोलक

मधुसूदन काका चौनारायन भेटला। तखन कहलैन जे स्व यथानसँ-माटी धनिम सुगनक गा उपद्रव बढ़ि गेल अछि जे-बाटीँ किसानी जीवन मनि नहल अछि। तँए एहन परिस्थितिमे जँ अपन नआ अपन नष्ट करब, तखन जीवन कना बँचत। काबीकँ नाश करै दुआर नआर्थ जहन छीट दलिऔ। सुगली नागिम सुगन सरे आबि खाए-"खाक्ष्ग एगानहा टा सुगन खाम सूगल अछि। -लगल। खाक्ष्ग बजलौं-

"जे समाधान सुनैल अखन एक मन खाजि नहल छल स भेट गेल। आब अपन समाधान कहह?"

रागीलाल बाजलराय साहेब" -, गामाक लाक जनैए आ अहूँ गँ जनिए छी जे गीत भजन गबैसँ नीक हमन मन (0कोगी कनैम-लगैए, तँए अखन एक ढालक बजाएब छाति दासन साज बाजयन-हाथ नहि दलौं अछि। महीना दिनसँ नतिया सृशनसँ प्रधान हाक्ष्ग आब नहल अछि जे (0का बजौनिहानक बहाली हएत।"

अपना नतियाम महीना दिनसँ सुनिए आबि नहल छी जे ढालक बजौनिहानक बहाली नतिया सृशनम हएत। तँए बजलौं-

"कौतूक दिन न बहालीक छल, स की भेल?"

रागीलाल बाजल-

"की हएत, दैनक कयान"!.

रागीलालक निधान काना रोँजयन न चढ़ल। जिज्ञासा कनैत बजलौं-

"कनी फनिछा कS कहह।"

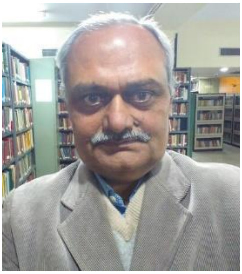
रागीलालक आशायन जना यानि हना गेल हाक्ष्ग एहिना तुनैछ कS बाजलराय साहेब" -, नतिया सृशनम मूँह दख मुँगवा यनसल

जाइछ। अपन मूँह डाहुन थोड़ अछि ज मुंगवा रहत।"
डाना, रागीलालक चरित्रसँ, वकीगण आचरणसँ खूब जनैत छी, किएक तँ काना (Oकनगन कर्मक लोक नहि अछि, मुदा एहि तँ गुण छइहे ज सामाजिक काना काज किए न हुअ, रागीलालक रागीदारी डाइम नहिए छी। डाना, जीवन सरक अपनअपन छी-, ज आगू वढि, विकसित होइत सामाजिक जीवनमे प्रवेश करैए, मुदा वदल-वदलैल ज अखन एकक समाज अछि डाहि वहुनुयिया रहैयगेल अछि। -वजलौं..
"की मूँह दखि मूँगवा, रागी?"
रागीलाल वाजल-
"अपन गमैया लोक छी। अपना सवहक समाजमे हगुडा न शास्त्रीय डमन छी। डाइ डमनकँ मनवैमे महीना दिन समाजमे जागिना-"हगुआ चलिए अछि आ वैगावन शुनु करैए विसर्जन होइए। अखन एकक दखल ववहान समाजक अछिए। सामास-ामी कना नOव ।
वजलौं-
"हुँ, स तँ अछिए।"
रागीलालकँ जना अपन गुण गोनवान्निए कलक गहिना वाजल-
"राय साहेव, अपना सरक समाजक शास्त्रीय धून, नतिया सुशनक शास्त्रीय धून थोड़ छी। ैहनयुम नाग गाडी धूनमे ढालक वजवए कहलक। गहीमे छौंटनी रs गेल।"
डाना, रागीलालक विचार सुनि मनमन हँसिया लगै छल-, मुदा ककना चुकयन जँ हँसि दव तँ डा अचुक रहैय जाइए, तँए किछु

न बजलौं।

कनीकाल नहि रागीलाल बाजलराय साहेब" -, संग संग हुनु-
"यानि लगा आबी। -रौँऽऽ चलू एकवन गामक हना
अपना मन रल ज एकवन टहेल आबी मुदा रागीलालक संग
टहलब, मन नऽऽ मानलक। बजलौं-
"रागी, टहलैक मन अपना हऽऽए मुदा एकटा काज गहन
बननहाँस लगा दन अछि ज मन बचैन अछि, की टहलब।"
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१४.नवीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि गेल अछि सभकिछु (उपन्यास)-धारावाहिक



नवीन्द्र नारायण मिश्र

बदलि गेल अछि सभकिछु (उपन्यास)- धारावाहिक

खण्ड १६-२०

वद्लि नहल अछि सर्वकिछ

16

हमनासरक समयम नाजायूनम हाॐ ॐसकुल नहैक । डाहिम लगयासक निद्यार्थीसर मौद्रिक धनि यठैग छल । ॐलाकाक मानल ॐसकुल छल डा । ॐसकुलक प्रधानाध्यापककँ नाष्ट्रयणि यूनस्कान रटल नहनि । डाहि ॐसकुलकँ चमकावजम हूनकन जवनदक्ष यागदान छल । डाहि ॐसकुलक कणका निद्यार्थीसर जकासँ जक यद धनि यहँवल छलाह। सलाहकान,अधिकानी,अरियंगा,ताक्रन,वनि ॐलाकाम नाम कन छलाह। डाही ॐसकुलम हम,संदीय आ शक्तिनाथ आ0माम नाम लिखडान नही । गकन वाद मौद्रिक धनि हमसर संगे-संगे यठल नही। गीनुगोटक गाम लगे-यासम छल । गँ हमसर संगे ॐसकुल जाॐ,संगे नायस गाम आवी । गाम यहँववासँ यहिनहि हाटसँ गीन दिस नक्षा फूटैग छलैक । सनिआ,मदनयून आ सागटालक हगु । डाहि0मसँ हमसर अयन-अयन घनक नक्षा यकडी । ॐसकुलसँ मौद्रिक यास कलाक वाद हमसर आनद्दयून कालजम नाम लिखडालहँ । डाही0म नगाजीसँ यनिचय रल । नगाजी समय-समययन अवैग जाॐग नहैग छलाह । हूनकन प्रयास नहैग छलनि ज अधिक सँ अधिक यूनककँ अयना संग जाडी । अयन नर्वस्त्र वनावी । गाहि हगु यूनक लाकनिकँ गनह-गनहक

प्रभावित सेहो छथि। संदीप हुनक चक्करमे फँसैत चलि गेल रहए आ कालांतरमे बहुत मोसकिलमे पड़ि गेल रहए। हमहूसभ नेताजीक संपर्कमे तँ अएब कलहुँ आ परसानीमे सेहो परब कलहुँ।

एक-दू दिनक बाद संदीपक हालतमे सुधार भेलैक। ओकरा संगे आएलि महिलाक हालत सेहो सुधरलैक। दुनूगोटे साँझमे विदा भए गेल। जाइत-जाइत संदीप कहलक-

"हम हिनका पहुँचओन अबैत छी। तकर बाद चैनसँ आगुक काजपर लागि जाएब।"

संदीपक गेलाक बाद हम आ शक्तिनाथ रातिभरि माथापच्चीमे लागल रहलहुँ।

"कहीं एहन न होअए जे संदीप नेताजी दिससँ काज करैत रहए, हमरासभक सभटा समाधान ओकरा देल रहैक आ कहिओ हमसभ मोसकिलमे पड़ि जाइ।"

"बात तँ वाजिब छैक। हमसभ थोड़ दिन सतर्क रहब। ओकरापर नजरि राखब। तकर बाद ओकरा अपन बातसभक जानकारी होबए देबैक।"

"मुदा ई नहि बूझा रहल अछि जे ओ एकटा महिलाक संगे एना किएक घूमि रहल अछि? ओकरासभक आपसी की संबंध छैक?"

"धैर्य राखह । समयसँ सभटा अपनहि स्पष्ट भऽ जाएत। "

संदीप अपन बापक पक्का निकलल । दोसर दिन वापस ओहीठाम आबि गेल । ओ महिला कहलथि,आ संदीप हुनका कतए पहुँचा देलकनि,से न ओ किछु कहलक आ न हमसभ किछु पुछलिऐक ।

संदीप घुरि आएल । गामसँ हमर गौना तावत नहि आएल छल । हमसभ आब ओतए कतेक दिन रहितहुँ,ओहो घरबैआ बिना। तँ सभसँ पहिने शकिप्पुरमे एकटा डेरा लेलहुँ । शकिप्पुरमे रहनाइ एहि लेल जरूरी छल जे ओ राजनीतिक गतिविधिक केन्द्र अछि । ओतए रहन-रहल जानकारी भेटैत रहैत अछि । बसीरा खाली प्लाटमे कानटायन एकटा कोठरी चौकीदारक हेतु बनल छलैक । संप्रति ओतए कोनो काज नहि भऽ रहल छलैक। तँ ओकर मालिक ओकरा मामूली किरायापर हमरासभकेँ दऽ देलक । कम सँ कम जगहक दुख-सुख होइत रहैक आ किछु किराया सेहो भेटैत रहैक। ओहि कोठरीमे हमसभ निर्वासनसँ रही । दिन-राति जगहक गप्प करबाक मान होअए गप्प करी। कओ टोकनाहर नहि,कओ सुननाहर नहि ।

डेरा रहि गेलाक बाद हमसभ दिन-राति अपन लक्ष्यपर ध्यान केन्द्रित करनाइ शुरू कऽ देलहुँ । संदीपक प्रति जे हमरासभकेँ सक शुरूमे रहए से कालान्तरमे समाप्त भऽ गेल । ओ मोनसँ हमरासभक संग लागि गेल छल । एकदिन हमसभ साथ जनक्रांति

𑒠𑒪𑒏 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒍𑒞𑒋 𑒮𑒾𑓀𑒮 𑒦𑒏𑓂𑒭 𑒣𑒞𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒍 𑒯𑒰𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒖𑒢𑒏𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒠𑒪𑒏 𑒮𑓀𑒨𑒼𑒖𑒏𑒖𑒲 𑒐𑒰𑒙 𑒡𑒋 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒮𑓂𑒟𑓂𑒨 𑒑𑒛𑓃𑒥𑒛𑓃𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒏 𑒂𑒧𑒠𑒢𑒲 𑒒𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪 । 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒔𑒰𑒩𑒲𑒮𑒦 𑒏𑒰𑒖 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱-𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒔𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒻𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑𑒲𑒮𑒦 𑒠𑒪 𑒥𑒠𑒪 𑒏𑒋 𑒪𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒖𑒹 𑒏𑒍 𑒥𑒰𑒿𑒔𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒼𑒑𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒥𑓂𑒖𑒰 𑒏𑒋 𑒪𑒹𑒟𑒱। 𑒮𑓀𑒨𑒼𑒖𑒏𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒳𑒐𑒱𑒞 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒍𑒏𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒢𑒼𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒹𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏 ।

𑒋𑒯𑒢 𑒧𑒰𑒯𑒾𑒪𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒍𑒞𑒋 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪 𑒩𑒯𑒲। 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒮𑓀𑒨𑒼𑒖𑒏𑒖𑒲 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢 𑒦𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒦𑒩𑒱 𑒧𑒼𑒢 𑒑𑒣𑓂𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒦𑒹𑒪। 𑒍𑒯𑒱𑒠𑒱𑒢 𑒮𑒰𑒿𑒗 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒥𑒱𑒞𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑒹 𑒣𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒃𑒮𑒰𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒂𑒥 𑒔𑒪𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒂𑒥 𑒔𑒪𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒲। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒍 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒅𑒠𑒰𑒮 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯।

"𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒅𑒠𑒰𑒮 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲?"-𑒯𑒧 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒱𑒁𑒢𑒱।

"𑒤𑒹𑒩 𑒁𑒮𑒑𑒩 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒮𑒹 𑒔𑒱𑓀𑒞𑒰 𑒮𑒞𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।"

"𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱, 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒤𑒹𑒩 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒥।"

𑒛𑒹𑒩𑒰 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒦𑒩𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒩𑒹 𑒧𑒹 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒍 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒩𑒹𑒮𑒰𑒢 𑒥𑒳𑒗𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒯𑒰𑒩𑓂𑒠𑒱𑒏 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒩𑒯𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒠𑒪𑒧𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒱𑒪 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒃। 𑒯𑒧𑒯𑒴

सरः गँ सऽह साथेँ नही । ओकन बाद बनाबनि हमसरः हुनकासँ रुँट कनऽ अबेँ-जाऽऽ नहलहुँ । निग्न जखन नायस हावऽ लागी गँ ऊ उदास रऽ जऽऽथि । बूसाऽऽ जना किछु कहऽ चाहेँ छथि ।

17

शक्तियुनम सन सहनम उना रुटि गेलाक बाद हमसरः कनी निबेँन रऽ गेलहुँ । कम सँ कम नहबाक ठकान गँ रुल । किनाया सहा मामूली,नहिऽ बूसु । मालिक बूसथि ज मगनीम ग्लाटक नखवानी रऽ नहल अछि,सऽह कान कम । नहि गँ ऊही लल सरः मास खर्चा हाऽऽनि । हमसरः दिन-रुनि ऽमहन-ऊामहन बोआऽऽ आ साँमम गीनुगोट संग रानसक ऊनिआनम लागि जाऽऽ । संग गग्र-सग्र गँ चलि नहऽ । संदीयक खिस्सासरः गँ बस नमनगन हाऽऽ छलेक । यहिन ऊकन मानगा ज किछु नहल हाऽऽक,मुदा आब ऊ हमनासरःक संग सरःप्रकारँ ऽक छल । जखन साँमम हमसरः चाहयन बेसी आ आयसम चर्च कनी गँ संदीय शुनू रऽ जाऽऽ । गग्र काहुसँ शुनू हाऽऽ मुदा नगाजीयन जा कऽ अटकि जाऽऽ । नगाजी जना ऊकन मानम धसि गेल नहथि। बागा सही नहेक,कानध सालक-साल ऊ नगाजीकँ आदर्श मानि कऽ हुनका हगु ग्राध-प्रधसँ लागल नहल,जहाँ-गहाँ बोआऽऽ नहल । मुदा नगाजी गँ छलाह महाधूर्त । ऊ सदिखन अयन काज

सुविधासँ ओकर उपयोग करैत रहलाह। चलु,आगाँ बुझलहुँ । मुदा बादमे तँ ओकरासँ ओ अलग-अलग काज करबैत छलाह,एक हिसाबे ब्लैकमेल करैत छलाह।

एकदिन अपन दलानपर हमसभ संगसंग बैसल रही । संदीप बजैत जाइत छल । ओ कहैत जा रहल छल -

"नेताजी नीक आदमी कहिओ नहि छल । हमरासभकेँ ओकरा विश्वास देने रहल से तँ हमर सभक दोष थिक ।"

"से की?"

"काका एकटा घटना रहैक । हाइता रहलैक । हम तँ ओकरा संग पहिल बेर शक्तियुनमे गेलहुँ । तखन ओकरा दलानपर बहुत रास तेहेन बात सभ बुझाएल । मुदा ओ हमरा चुप्प कए दिलए-

"खबरदार! एहिठामक काका बात बाहर नहि जबाक चाही। ओ से रहल तँ जानसँ हाथ धोबए पड़ि सकैत अछि ।"-नेताजी हमरा कहने रहए ।

"ओतहि गामक बैसारमे बस हटेबाक योजना बनल रहैक। हमर हाथमे ओ सारा धन देने रहए । हम ओहि सारकेँ संग लग नाखि घसकि गेल रही । तकर बाद तँ जे रहैक से तँ देखब कएलहुक ।"

"मुदा ओहि कांडमे तँ हमरा फँसा देलक।"

"ओहो नाजीक काज रहैक। जे केओ ओकर लगीच अबैत छल तकरा संगे ओ एहिना विश्वासघात करैत छल, ओकरा कोनो-न-कोनो तरहें फँसा दैत छल। तकरबाद ब्लैकमेल करैत छल, उल्टा-पुल्टा काज करबैत छल।"

ओहि घटनाक बाद हम भागल-भागल नाजीक शकरपुरमे डेरामे नुकाएल रही। नाजी हमरा सुनबैत रहथि-

"पुलिस तोहर पाछू पड़ि गेल छह। बँचि कए रहिअह।"

हम एहिसभसँ बहुत डराएल रही। जे नाजी कहथि से करैत चलि जाइ। एहि तरहें हम एक सँ एक गलत काज करैत रहलहुँ। बूझिओ कए हुनकर विरोध नहि कएल होअए। बात एतब रहितए तँ चलु। मुदा नाजी तँ सत्कर्मक आदमी छलाह। ओ हमरा नेपालक सीमापर पठबए लगलाह। ओहिठामसँ हम एकटा डिब्बा आनी आ ओकरा पंजाबमे कतहु पहुँचाबी। ओहि डिब्बामे की रहैक से हम आइ धरि नहि बुझि सकलिऐक। हमरा आगू-पाछू सदिखन ओकर आदमीसभ लागल रहैत छल। कखनो काल इशारासँ हमरा पस्तौला देखा दैत छल। हमरा तँ होअए जे बेहोस भए ओतहि खसि पड़ब। मुदा साहस करी। कखनो-कखनो अपनापर तामस होइत छल। मुदा ओहि जंजालसँ निकलबाक कोनो रस्ता नहि देखाइत छल। जखन कखनहु नाजी शकरपुरमे डेरापर आबथि, हम हुनका लग जेबाक प्रयास करी। मुदा ओ से हिसाब

कत नहिंथि जे कहुना हुनकासँ भेंट नहि होइन छल। जखन ओ शक्तिपूजनमे तेनायन नहथि गँ हमरा काना-न-काना काज कएह काना काजमे यOा देन छलाह। हमहु की कनितहुँ? ज्ञान वँचवाक प्रयासमे सफटा सहि जाइ ।

एक नाति गँ हद भए गेल । एक वजेन नहल हएत । हम निरत सूतल नहो की घंटी वाजल । झेंट खालैत छी गँ देखैत छी नगाजी यीन वृद्ध एकटा महिलाकँ यँजिठैन OIद छथि। जाव हम कवान खाली-खाली गाव गँ केकवन घंटी वजा दलथि। धनहना कए कवान खालैत छी । ओहि महिलाक सामनमे हमरा दस हजान हजाति कलथि । ओतक नातिमे हसाद कनव हमरा उचित नहि वूझाएल । वूझ नहि गेलहुँ । । नगाजी ओहि महिलाक संगे अयन काOनीमे चलि गेलथि । घंटा एनिक वाद हमन कवानयन हल्लुक अवाज वूझाएल । लागल जना कओ कवान खटखटा नहल अछि। हम कवान लग अवैत छी । गुनकीसँ देखैत छी । ओही गँ ओएह महिला अछि । हम ओकना अंदन आवए देत छिऐक । ओकन हालत कहवाक जागन नहि छल । ओ निनंतन कानि नहल छलि। हमरा वूझव नहि कनए जे की कनी? कहीं नगाजी वूझलथि गँ गेल घन छी।

"अहाँ एतक यनसान किएक छी?"

"हमरा गुनंत वाहन लए चलू, नहि गँ..।"

"मुदा नगाजी."

"ओ तँ पीन बूढ़ भेल पड़ल अछि । होसमे नहि अछि। ओकर कोठरीक केबार खुजल नहि गेल छलैक । तँ मौका देखि हम ओकरा बाँहिसँ घसकि गेलहुँ अछि । हमरा बाहर लऽ चलु, देरी नहि करु। "

"मुदा एक बात..हम केना लऽ जा सकब ।"

"कोनहु चलु । मुदा एहिठामसँ लऽ चलु ।"

हम मान-मान हनुमानजीकेँ गोहरेलहुँ आ ओहि महिलाक संग कोठरसँ बाहर निकलि गेलहुँ ।

ओहिठामसँ निकलि हमसभ जना-तना अंकियाक टीसन पहुँच गेलहुँ । बादि रति ओतहि बुझाएल रहलहुँ । भोर भेलापर ओतहि नित्यकर्म कलहुँ । ओहिठामसँ कोना जाइ.की करी किछु बुझाब नहि करए । हम ओहि महिलाकेँ किछु पूछिऔक तँ जवाबमे बस कानए लागए । हम तँ बड्ड मासकिलमे पड़ि गेल रही । कोहुना ओकर नाम,गाम पूछलिऔक । बड्ड मासकिलसँ ओ अपन नाम कहलक-"शिखा"। एकर बाद हम ओकरा संग घूमैत-फिरैत ओहि ठामायन पहुँचल रही । अहाँसभकेँ ओतए देखि बड्ड आश्चर्य बुझाएल रहए । छल जे साँझ आब जान बँचि जाएत ।

कालक्रमे जनक्रान्तिदलक सभटा कार्यभार हमरापर बढ़ि गेल । तकर प्रमुख कारण छल जे तत्कालीन संयोजकजीकेँ हमरासभपर बहुत विश्वास भए गेल रहनि । हुनका सहयोगीमेसँ अधिकांश तँ पार्टी बदलि लेने रहथि । किछु गोटे आब राजनीतिमे निष्क्रिय भए गेल रहथि । तँ ओ सोचलथि जे युवकसभकेँ आगू आनबाक चाही । तखनहि जा कए परिवर्तनक उमीद कएल जा सकैत अछि । नहि तँ पार्टीक सत्यानाश तय अछि । एक हिसाबे ओ बहुत त्याग केलाह,नहि तँ आइ-काल्हि नेताजीसभ मरलाक बाद अपन पदक त्याग करैत छथि । ने हुनका देश सँ कोनो मतलब रहैत छनि,ने पार्टीसँ । अपन स्वार्थ सिद्ध हेबाक चाही । ताहि लेल जे करए पड़नि,जाक बेर पार्टी बदलए पड़नि । जे जायज,नाजायज करए पड़नि । एहन सोचक कारण नेताजी चुनाओसँ पहिने अपन चुनाओ सभामे बम विस्फोट करबा कए जनताक सहानुभूति अनबाक प्रयास करैत छल । कतेको निर्दोष युवकसभकेँ बड़का-बड़का कए गलत-सलत काज करबैत रहैत छलाह। जखन बाहर कतहु निकलैत छथि तँ श्वेत वस्त्र चमकैत रहैत छलाह। जँ हुनकर भाषण सुनितहुँ तँ लगैत जेना एहन आदमी साइते कतौ भेटत । मुदा कथनी-करनीमे कोनो समन्वय नहि रहैत छलनि । जेना हाथीक दुटा दाँत होइत अछि,तहिना नेताजीक हाल रहनि । जनता लग नेताजी किछु रहैत छलाह आ असल जीवनमे किछु आओर । कतहुसँ नहि लगैत जे ई ओएह आदमी छथि ।

हमसभ ई निश्चय कएलहुँ जे राजनीतिक वर्तमान स्वरूपकेँ बदलि कए रहब । ताहि लेल जे करबाक होएत से करब । एकटा

एहेन व्यवस्थाक स्थापना करब जाहिमे संविधान आ कानून मात्र संपन्न लोकक वस्तु नहि रहि जाए। सही मानेमे समतामूलक आ जनकल्याणकारी समाजक स्थापना करबाक प्रयास करब जाहिमे जाति,धर्म,लिंग,वर्ण आदिक आधारपर कोनो भेदभाव नहि कएल जाए। ओना ई सभ एखन करबाक गप्प करैत रहैत अछि ,मुदा ओकरासभक व्यवहार आ काजमे जमीन आसमानक अंतर रहैत छैक। ई हमसभ समाजक सामने एकटा उदाहरण प्रस्तुत करए चाहैत छलहुँ जाहिसँ गरीब सँ गरीब व्यक्तिकेँ लागैत जे ओहो एही देशक नागरिक अछि। ओकरा एहि देशमे रहबाक,इज्जतिसँ जीबाक ओतबे अधिकार छैक जेना धनीक आ सुविधा संपन्न लोकसभकेँ। लोककेँ जाति,धर्मक आधारपर बाँटि कए किछुगोट समाजकेँ असल लक्ष्यसँ हटकी लए जवाम सहल रए जाइत छथि। सरवैंकक राजनीति कए ओ सभ सत्ता हथिआ लैत छथि। एकर बाद अपन स्वार्थपूर्ति हेतु अपन अधिकारक दुरुपयोग करैत छथि। एहि स्थितिकेँ बदलबाक अछि। हमसभ आपसमे एहि तरहक दृढ़ निश्चय कएल आ तहि हेतु दिन-राति लागि गेलहुँ। संयोगसँ हमरासभकेँ जनक्रान्तिदलक आधारस्तम्भ संरचना भेटि गेल अछि। एकर सदुपयोग करबाक अछि। हम,शक्तिनाथ आ संदीप एहि विषयसभपर एकमत रही आ निश्चय कए लेने रही जे दिन-राति एक कए एकर समर्थनमे जनताम जागृति आनल जाए।

जनक्रान्ति दलक काज आगू बढ़एबाक हेतु सभसँ बड़ी जरूरी छल जे अधिक सँ अधिक लोककेँ खास कए युवक लोकनिकेँ एहिसँ जोड़ल जाए। तहि हेतु गामक-गाम सदस्यता अभियान

चलाबक निर्णय भेल। पार्टीक काज सुचारु रूपसँ चलबाक हेतु ओकर कार्यसमितिक पुनर्गठन कएल गेल । ओहिमे ओकठाहा युवकलोकनिकेँ राखल गेलनि। ओहुना लोकसभ चुनि-चुनि कए राखल गेलाह जे राजनीतिकेँ अपन पेशा नहि अपितु सेवाक माध्यम बनाबए चाहैत छथि।

मुदा किछु पुरान लोकसभ हमरासभक प्रयासकेँ अपन राजनीतिक अस्तित्वपर एकटा जबरदस्त आघात बुझलनि। ओ सभ जी-जानसँ हमरासभक प्रयासकेँ असफल करबाक हेतु लागि गेलाह । ओ किछु हमसभ अंदरमे निर्णय करी ताकरा पहिने नेताजी लग पहुँचाबए लगलाह। नेताजी तँ छटल बदमास छलाह,संगहि षडयंत्र करबामे सेहो माहिर छलाह। ओ हमरासभक प्रयासकेँ निष्फल करबामे लागिए नहि गेलाह,अपितु किछु हद धरि सफला होबए लगलाह । हमसभ किछु करबाक प्रयास करी ताहिसँ पहिनहि अपन पार्टीमे हंगामा होबए लागए । एहिसभसँ हमसभ बहुत परेसान भए गेलहुँ । किछु बुझबे नहि करए जे की करी? कोन रस्ता पकड़ी जाहिसँ बिना बेसी झंझटिकेँ लक्ष्य दिस बढ़ल जा सकए।

19

ओहि दिन हम, शक्तिनाथ आ संदीप राति भरि एही विषयसभपर चर्चा करैत रहि गेलहुँ। ककरो निन्न नहि होइत

रहए। सभ दिशासँ शमसान छल। कहल की जाए? नागरीक आक्रमणसँ बचएबाक की रस्ता रहए? हमसभ ओहुसभ सोचि रहल छलहुँ की बुझाएल जेना किछुगोटे हमरासभक तेना दिस बढ़ल चलि आबि रहल अछि। बीच-बीचमे टार्चसँ रोशनी मारि रहल अछि। हमसभ सतर्क भए जाइत छी। संदीप,शक्तिनाथ लाठी लेने केबाड़क कोनासँ सटल ठाढ़ भए जाइत छथि। थोड़ेक कालमे केबाड़पर कएक जान-जानसँ लात मारि रहल छल। आवाज क्रमशः बढ़ैत जा रहल छल। हमसभ पूर्णशक्तिसँ केबाड़केँ बँचएबाक प्रयासमे लागल रहलहुँ। मुदा ओ कतेक बाँचत। अंततोगत्वा, केबाड़ टूटि कए खसि पड़ल।

बदमाससभ घरमे घुसिते चिचिआए लागल-

"कहाँ अछि शिखा? जल्दी निकाल ओकरा नहि तँ तोहरासभक बलिप्रदान भए जेतौक।" तेहनसँ संदीप थर-थर काँपि रहल छल। बदमाससभ ओकरा दिस मुखातिब छल। ओहिमेसँ एकगोटे ओकरापर पिस्तौल तानि देने छल। दोसर ओकर गट्टा पकड़ने छल। तेसर हाथमे चाबुक लऽजि रहल छल। पाँचमक हाथमे दिआसलाइ आ मटिआ तेलसँ भरल डिब्बा छल।

"बाज-जल्दी बाज। की चाहैत छँ? जँ कनीको देरी कएलेँ वा छल करबाक प्रयास कएलेँ तँ नामो-निसान मिटा देबौक। सभ किछु तैयार अछि।"

संदीपक सीटीपीटी गुम्म छल। ओ किछु बाजि नहि पाबि रहल छल। जेना माथासँ सभकिछु बिला गेल रहैक। शक्तिनाथकेँ नहि रहल गेलैक। ओ किछु प्रतिरोध करबाक प्रयास कलक। किछु बजबाक प्रयास कलक।

"तूँ सभ के छह आ एना किएक कए रहल छह?"

"गानासभकेँ एहिठाम के पठौलक?" -हम पूछलिऐक।

ओतहिसँ ओहि बदमासमसँ एकगोट बाजल-

"एकरा दुनूक हाथ-पैर बान्ह। बहुत हटर-हटर कए रहल अछि।"

ओ बाबू! देखिते-देखिते ओ सभ हमरा दुनूगोटेक हाथ-पैर बान्हि घरक कोनमे पाथि देलक। मुँहमे पट्टी सेहो साटि देलक। ऊपरसँ मटिआ तेल छोड़ि तेनाक नरक छल जेना आब देहयन छानि कए रहल। बुझाएल जेना हमसभ आब ऊपर छेनिक पाहुन छी।

हमरा दुनूगोटे ऊपी दुर्गति देखि संदीप चिचिआ उठल-

"हिनकासभक किछु गलती नहि छनि। हिनका जान बकसि दिअनु। किछु आरिह्या दिअ। हमसभटा बात कहैत छी।"

हटर-हटर कनाइ बंद करह। ओ पूछल गेलह अछि से जल्दी आ सही-सही बाजह। नहि तँ गानसभक पकिआ

ठहलाउ गेयान अछि। सामनयिस्फील वला अपन हाथ ऊपन दिस कलक आ क्रमशः संदीप दिस बढ़ए लागल।

"ठहरह, ठहरह। हम नानासरकेँ भिखा लग लन चलै छी।"

"ई अछि कोए स बाजह?"

"नहि गाकि सकबहक। हमना संग चलह। हम भिखासँ नानासरक रेंट करा दबह।"

"आ ओँ किछु छल-प्रपंच करबह तखन?"

"तखन ज मान हाअह स कए लिअह।"

"ने! एकर बातक कोन विश्वास? अखन जान बँचबाक हेतु किछु बकि रहल अछि। की पता ज बादम बात पलटि दिअए। किंवा कोनो षड्यंत्र कए बैसए? "

"सही कहि रहल छह। शत्रुपन करखनहु विश्वास नहि करी। ओहो साँप थिक, साँप। दिन-राति नानाजीक खून खलक आ आब ओकर जड़ि काटए लागल अछि।"

"हम की कहिअनि अछि हुनका?"

"खबरदार! ज रुटन-रुटन कलह। नानाजी संग तूँ विश्वासघात तँ कब कलह अछि। एहिम कोन सकक बात

छैक। फिलहाल जाहि काज हमसभ आएल छी ताहिपर ध्यान दी। बादक बात बादमे देखल जाएत। हमरासभकेँ शिक्षा चाही, सेहो तुरंत। जँ से नहि करबह तँ परिणाम भोगबाक हेतु तैयार रहए जाह।"

"जाबत निश्चय नहि करब आ हमरा डेरा नहि लए जाएब ताबत शिक्षा हम कोना सुनबा सकैत छी। हमरा डेरा लए चलू। तखनहि शिक्षा भेटि सकतीह। ताबत हिनका दुनुगोटेकेँ तँ छोड़ि दिअनु।"

"हिनकासभक चिंता तूँ छोड़ह। जे मूल काज अछि से पहिने करह। तकर बाद हिनकर सभक भविष्यपर निर्णय होएत।"

"ठीक छैक। हमरा संग चलह।"

संदीपकेँ एकटा कानमे बैसा देल जाइत अछि। किछुगोटे डाकना आगू-पाछू बैसि जाइत अछि। किछुगोटे हमरा दुनुगोटेकेँ घरमे घेरने नहि जाइत अछि। संदीप डाकनासभक संग बिदा होइत अछि। ओ नक्सा बनबैत चलि जाइत अछि। बीच-बीचमे बदमाससभ डाकना चौनी देने अछि।

"खबरदार! जौँ किछु गड़बड़ कएलह तँ गेल छह।" से कहि पिस्तौल डाकनापर तानि देल जाइत छल।

हमसभ नाति सभनि ओहिना पड़ल नहि जाइत छी। बीच-बीचमे लघुशंका लगैत अछि। मुदा गाड़ी हुनु ओ सभ मारलनि नहि दैत अछि। सभ किछु ठामहि करबाक हुनु निवश छी।

आब हनीछ भए गेल छल। हमसभ ओही हालमे पड़ल रही। बदमाससभ हमरा सनुगोटकेँ घेरने छल। ओहिमेसँ एकगोटेकेँ पाखनि दिस जेबाक भेलैक। शौचालय बाहर रहैक। ओ बाहर निकलैत अछि। सामनेमे दूधवला ठकना गेलैक। हमरासभकेँ भान-भान चाह पीबाक आदति छल। ओँ भान दूध मंगबैत रही से आबि गेल रहए। मुदा हमरासभकेँ नहि देखि ओ नायस हाइत रहए। गाबामे हमर का0नीसँ ओहि आदमीकेँ निकलैत देखि दूधवलाक कान ठाढ़ भेलैक।

"बात की छैक? ई आदमीक जेबीमे पिस्तौल किएक छैक? ई ओँ बदमास लागि रहल अछि।"

ई एह सभ सोचैत दूधवला कनी आओर हटकी चलि गेल। सामनेसँ एकटा पुलिसक जीप जाइत छल। ओ ईसारा कए ओकरा रोकबलक। पुलिस जीपसँ ओनि जाइत अछि-

"की बात छैक?"

"सर! सामनवला का0नीक शौचालयमे एकटा बदमास पिस्तौल लेने बैसल अछि।"

"से तूँ कोना बुझलहक? हम ओकरा शौचालयमे जाइत देखलिऐक। ओकरा देखि चुपचाप घसकि गेलहुँ।"

"ठीक छैक। तूँ हमरा संगे चलह।"

"नहि, नहि। हमरा नहि लए चलू। ओ हमरापर पिस्तौल तानि देलक तखन?"

"ओकर डरबाक बात नहि छैक। हमरासभ गार्ड संगे छी ना।"

"ओ बदमास शौचालयसँ निकलिए रहल छल की पुलिस ओकरा चारूकातसँ घेरि लेलक।"

अचानक पुलिसकेँ देखि ओ बहुत परेशान छल। एकटा पुलिसवला ओकरा पाछूसँ पकड़लक आ दोसर जेबीसँ पिस्तौल छीनि लेलक।

"खबरदार! जँ बुधिआरी करबह तँ जानसँ हाथ धोबह। चुपचाप आत्मसमर्पण करह।"

ओ बदमास हाथ ऊपर उठा देलक।

पुलिस ओहि बदमासकेँ पकड़ि कऽ सड़क दिस बढ़ि रहल छल। हमरसभक कोठीसँ ओकर संगीसभ ई दृश्य देखलक। ओहीमसँ एकगोट ककरा फोन लगओलक। तकरबाद गाँ देखएबला दृश्य उत्पन्न भऽ गेल। पुलिस ओहि बदमासक पैरपर खसि पड़ल। घरी माँगि रहल छल। सड़कक लगपासम ठाढ़ लोकसभ स देखि छगुन्ताम रहए।

"कमालक बात छैक। पुलिसक ई हाल अछि आ बदमासक आगू नतमस्तक अछि। कहू केहन समय आबि गेल।"

"कोनो सियासती होएत।"

"कोनो नेताक आदमी होएत।"

तरह-तरहक बात लोकसभ कऽ रहल छल। पुलिस पाछू-पाछू आ बदमास आगू-आगू चलि रहल छल। दुनूगोट हमरसभक कोठी लग पहुँचल। पुलिस हमर कोठीक ओसारापर ठहरि गेल। हमसभ ओहिना कोठीमे पड़ल रहलहुँ। हमर कोठीक बाहर लोकसभ जमा भेल जा रहल छल। मामिला बढ़ैत देखि ओ बदमाससभ ककरासँ फोनपर गप्प करलक। तकरबाद हमरासभकेँ छोड़ि देलक। हमसभ जाबे किछु बुझितहुँ ताबे ओ बदमाससभ पुलिसक जीपसँ चलि जाइत रहल। नहि जानि कतेक दुर्दशाक कारण हमसभ किछु बजबाक स्थितिमे नहि रही। अपनासँ बेसी संदीपक चिंतामे रही। जाइत-जाइत बदमाससभ धमकी दऽ गेल रहए-

"खबरदार! जँ किछु उमरल-उमरल करबह तँ हमसभ हर आबि जाएब आ तकर बाद की हाएत तकर कल्पना तूँ नहि कर हबह।"

सोचल जा सकैत अछि जे एहन माहौलमे हमसभ की प्रतिकार करितहुँ? जान बँचि गेल सएह उपलब्धि लगैत छल। मुदा एतबा तँ स्पष्ट छल जे एहि घटनाक पाछू राजनीति काज कए रहल अछि। हमरासभक राजनीतिक सक्रियताक जानकारी सरकारी पक्षकेँ भेटि गेल रहैक। तकरबाद ई हसादसभ शुरू भेल छल। पता नहि आगू की-की हाएत? ई तँ अखन शुरूए भेल अछि।

ओहीदिन साँझमे नेताजी शक्तिपुरममे संवाददाता सम्मेलन कयलथि । नानाप्रकारक मीडिया, समाचारपत्र, रेडियोक संवाददातासभक भीड़ जमा भए गेल छल। सभ एक-दोसरसँ प्रश्न कए रहल छल-बात की अछि? नेताजी एकाएक संवाददाता सम्मेलन किए कए रहल छथि?

"लगैत अछि ओ अपन पार्टीसँ बहुत तमसाएल छथि।"

"नहि, नहि। ई बात नहि भए सकैत अछि। अखन तँ हुनका राज्यप्रमुखजीक संग सेटिंग भेल छलनि। तकरबादसँ तँ ओ हुनकर गुणगान कए रहल छथि।"

"जरूर किछु आओर बात अछि।"

"कनी काल हमसभ ठहरिते जाइत छी। अपन एता लागि जाएत ई बात की अछि।"

"सही कहलहुँ।"

संवाददातासभ अपनामे चर्चा करैत छलाह। ताबत पान खाइत,मुस्काइत नेताजीक प्रवेश होइत अछि। नेताजीकसँग दुगोट आओर हुनकर लगपासमे बैसि जाइत अछि। नेताजी बजनाइ शुरू करैत छथि-

"अहाँसभकेँ अचानक बजबाक कारण ई छल जे आइ नागरिक पुलिस एकटा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटनाक रहस्योदघाटन कएलक अछि। ताहि विषयमे जनताकेँ जानकारी देब बड्ड जरूरी अछि। तेँ अपन सभकेँ बड्ड कम समयक सूचनापर बजाओल गेल अछि।"

"बात की ठीक, से स्पष्ट करू।"

"नागरिक पुलिसकेँ किछु गुप्त जानकारी भेटल जे नवादित प्रतियोगी नेता अंकुर आ हुनकर संगीसभ तारी निकटतमक एकटा महिलाक संग अनुचित काजमे लिप्त पाओल गेलाह। पुलिस छापामे ओ आ हुनकर संगीसभ पकड़ल गेलाह अछि। मुदा संदीप ओहि महिलाकेँ संग फरार भागि गेल। पुलिस ओकरा सभकेँ पकड़बाक पुनः प्रयास कए रहल अछि। आशा करैत छी जे ओहो जल्दीए पकड़ल जाएत।"

"मुदा ओ महिला के छथि?"

"हुनका संदीप कोनो नुकसान अछि।"

तरह-तरहक सवालसभ पत्रकारसभ पूछि रहल छल। मुदा नेताजी बिना किछु ध्यान देने उठि गेलाह। हुनकर सचिव जरूर कहलखिन-"एहिसभ विषयपर काल्हि जानकारी प्राप्त होयत एकर प्रेस कान्फ्रेंस कएल जाएत। संप्रति एतबे।"

-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अरेर डीह, मातृक: सिम्भुआ झाटी, वृत्ति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), तथा मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष-२०१७ १.भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष-२०१८ ४. प्रसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष-२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष-२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन

नर्ष॰२०२१ १६.याथय(संस्मनण) १७.दूम आवि नरुल छी(उयन्यास) १८.प्रलयक यनाग(उयन्यास); प्रकाशन नर्ष॰२०२२ १९.वीति गल समय(उयन्यास) २०.प्रतिविम्ब(उयन्यास) २१.वदलि नरुल अछि सरकिछ(उयन्यास) २२.नाष्ट्र मंदिन(उयन्यास) २३.संयाग(कथा संग्रह) २४.नाचि नरुल छलि नसुधा(उयन्यास) २५.दीय जनौ नरुज (उयन्यास)।

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

𑓒.𑓑𑓗.𑒛𑒼 𑒏𑒱𑒬𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩- 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒪𑒹𑒐𑒢𑒏 𑒬𑒴𑒢𑓂𑒨 𑒥𑒖𑒰𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱? 𑒫𑒱𑒫𑒬𑒞𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒰𑒢



𑒛𑒼. 𑒏𑒱𑒬𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒪𑒹𑒐𑒢𑒏 𑒬𑒴𑒢𑓂𑒨 𑒥𑒖𑒰𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱? 𑒫𑒱𑒫𑒬𑒞𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒰𑒢

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒧 𑒕𑒻𑒏 𑒏𑒲? 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒩𑒹𑒐𑒰𑓀𑒏𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒴 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒠𑒹𑒐𑒴 𑒞𑒰𑒏𑒴 𑒠𑒹𑒐𑒲𑒥𑒰𑒅𑒪 𑒖𑒫𑒰𑒥 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒋𑒙 𑒖𑒰𑒋𑒞𑒰। 𑒯𑒧𑒲 𑒏𑒯𑒴 𑒮𑒞𑓂𑒨 𑒖𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒚𑒱𑒏𑒹𑒠𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒧𑒲 𑒨𑒴𑒢𑒮𑓂𑒏𑒰𑒢𑒲 𑒔𑒧𑒏𑒻, 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮𑒴𑒁 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢𑒲, 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒫𑒙𑒲 𑒏𑒫𑒱 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒹𑒪𑒢, 𑒣𑒴𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒰𑒩𑓂𑒣𑒝, 𑒤𑓂𑒩𑒲 𑒏𑒱𑒞𑒰𑒥 𑒥𑒰𑓀𑒙

एक सिमित आ उपेक्षित नहि. एकर बजार मूल्य शून्य नहिँ आ मैथिली लेखक के शून्य बजार स्थिति के व्यवस्था एकरा नहिँ. लेखक सब अपन विकट स्थिति स उबरै लै सामूहिक प्रयास एक नै करलक? एकर फलाफल मैथिली लेखन अखनियो रागि नहल जे दस पचास टा किताबक बिक्री नै होइछ छै. दर्शक पाठक मैथिली लेखन के देखि पढि स कान मूनी नै नखै छै?

शून्य बजारक व्यवस्था के कारण:-

1. मैथिली लेखक सब कोना बूक सेलर प्रकाशक आ मार्केटिंग व्यवस्था लै सामूहिक प्रयास चिंता करिया नै कलकै? सब अपना गिरोह म मगन छी किताब बंटलकै पुरस्कारक जोगार म नहिँ आ ह लेखक स्वाक फूसियाहिक हुकार म बमहलाट रहल नहिँ.

2. मैथिली लेखक सिनिह लेखकिय एगमा आ धूरी लै दस पचास टा किताब छपा नहाल र गेल. पब्लिक देखै आ पढै की न? ह थ्रोन सभि लै? जोगानी पुरस्कार आगु बजार स्थिति पर कोना चिंता नै?

3. मैथिली लेखक एकटा सामूहिक सर्वजन मंच नै तैयार कलक जे प्रकाशक लेखक बिक्रेता दर्शक पाठक के सामूहिक प्लेटफार्म के माध्यम स एकत्रित कर नीक बजारु व्यवस्था बनैबै? लेखक संघ बना शासना लै सदस्यता फॉर्म एक नै देलकै. सब लेखक गिरोह अपन ठकदारी म अपसियांत नहिँ.

4. मैथिली लखक ७क दासनाक लखन म की छै गकन चर्च कद्यिा न कलकै आ नै दर्शक गक वाग यहूंचलकै? आयाजन सव म द्दारकानी ए (गल वस वनिष्ठ लखक द्दवाक दाविञ चून. अहाँ सवद्दक लिखल किगाव कञ यानि विकाञ्ञ स दखु गाकू न.

5. काना ञद्दन मैथिली यत्र यत्रिका अखवान नै ज मैथिली नवना यन यानगाषिक मूल्य दैग द्दाउ. काना गनद्द घीच गीनक यत्रिका सव नाम लै छयै छै आ द्दन वद्द. सर्कुलशन वजान वनस्था लै लखक क काना चिंगा नै जकन नवना छयलै ल द्दुञ्ञल क गुम्मा?

6. नर्वस्नादी गिनाद्दवादी मैथिली लखन म दस टा लखक क अयना म मिलानी नै ज सामूद्दिक द्दवाक उम्मीद कनग. सव अयना गिनाद्द वल लखक द्दवाक ग्रम निशा म मागल नद्दैञ. काञ्ञी ककना माजन प्रासाद्दिग नै कनग? दर्शक याOक ञञलै कीन गकन ञक्का याञ्ञी चिंगा नै?

7. मैथिली लखक सयना म नायत्री दिया न साचि सकग? नवना छयलै गव यत्रिका कीनव दखव सद्दा वञ वाधक वनल छै मैथिली वजान वनस्था क विकसिग द्दाञ्ञी मं.

8. मैथिली लखक वजान व्यनस्था क मद्दत्वद्दीन वूमैग गमैग अयना यैन यन अयन कूञद्दैन मानैग नद्दल. खाली यूनुस्कान आयाजन द्दारकानी गक सिमटल नद्दल? गकन दुष्यनिक्षाम आञ्ञी मैथिली

साहित्यकार लागि नहुल.

9. अपन लखनि क अपन मार्केटिंग नला दृशचक्र क गाठवाक प्रयासक संग एक दासन लखक लै सामूहिक मार्केटिंग क सुजाग अवसन प्राप्त लवल यन कनै यता.

10. मैथिली लखन म प्राप्त नियर्टिंग व्यवस्था क एकदम अभाव? अछि शून्य क पाटै लै वजान व्यवस्थाक चलैन एकदम नहि?

11. मैथिली लिखै वजै छयै काल साहित्यामी मानक क अंधानुकरण एक ज वानरा वनध क वाली क संपादित क उाकना मानक नुय म छायव. अछि स मैथिली लखन असंख्य वहुजन दुन हाछित गेलै. लाक क यरु म वडु कौ0नारु वूसलै गछडा मैथिली लखक वृधिआनी खला म लागल नहल.

12. मैथिली लखन म पा0कीय प0नीयता दर्शक प्रतिक्रिया क एकदम अभाव नहलै. मैथिली आयाजन म दर्शक स वसी मंच पन उपस्थित कनि अछि वात क प्रमाण रुछि क. दर्शक निवान जानै क हात गव मैथिली लखन मजगुत हाै आ वजान म नंगत पकतै.

समाधान:-

1. पुनस्थानी दावि छाति दर्शक स सामरु संवाद क मैथिली लखन क वजान वनवअ गाकअ आ सामूहिक रागिदानी म खटै यता.

ओहि स मैथिली लेखक के सामूहिक मंच निर्माण मे तेज आगू बढ़त.

2. मैथिली पत्र पत्रिका सबहक वितरण स्थिति मजगूत करै के बजार व्यवस्था स्थापित करै पड़त. सामूह रचना छैप टा गेल आ वितरित नै स काज नै चलत.

3. कतेक ठामक मैथिली आयोजन मे विविधता मात्र छी जे ओकरा ओहन मंच वा सत्र जतय साहित्यकार, लेखक, प्रकाशक, विक्रेता, फिल्मकार, कलाकार, मार्केटिंग एक्सपर्ट सब एक स्थान क जुटक संगी बनि मैथिली बजार स्थापित क सकैत.

4. गिरोहवादी व्यवस्था क ध्वस्त क सामूहिक हिस्सेदारी वाला मंच बनबै पड़त. दर्शक पाठक क सामूह जोड़ै पड़त. मैथिली लेखन क बजार व्यवस्था विस्तार के चिंता क सार्थक प्रयास करै पड़त.

5. मैथिली लेखन मे बजार किए नै छै? कना होत? सामूहिक समाधान दिस नि:स्वार्थ तेज आगू बढ़बै पड़त. मार्केटिंग व्यवस्था क छोट काज नै बूझि एकरा दूरगामी लाभ आ दर्शक पाठक स सामूह संवाद करबाक जरूरत बुझू.

6. मैथिली लेखन मे ब्रांड निर्माण व्यवस्था क एकदम अभाव. अप्पी शून्य क पाटै पड़त. खाली कथा कविता साहित्यिक आयोजन वाला खर्चेन पन रुन रुन नहुव अविलंब बंद करै पड़त.

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.पद्य खण्ड

३.१.कल्पना झा- साउन मास

३.२.प्रमोद झा 'गोकुल'- गामक बाट

३.३.राज किशोर मिश्र-प्रयाग

३.४.आचार्य रामानंद मंडल- दीनदयाल/ सावन मे नानी

३.१.कल्पना झा- साओन मास



कल्पना झा

साउन मास

मान अर्वरिण छल,
सहनाक काना (0कान नय,
न यूनवा ्न यछवा
गयो मान उतियाऽऽग वसाग सन वहेग छल,
साउन क मास वड़ दिव्यमास,
नवविवाहिता संग सव साहागनिक,
मान मं वढेग हुल्लास,
फुल्लायल फूल आ हनियन चाने याग,
खग खनिहान मं नवेग वसेग ग्राम,
मघ सं महेग वूनि,
वूनि क ग्रास सं नहायल माटि,
ऽऽह यौवनक संगम सगमगमायल माटि क गन्ह,
वनदक वढेग उंग
जान वनिहानक वढेग कनज,
कादानिक मानि,माटि कनेग (गाहानी,

एल विरुनीक वन
चल् सव लाकनिक वढाव् एक जग।

-कल्पना झा, वाकारा

अयन मंगय editorial.staff.videha@gmail.com यन यठाउ।

३.२.𑒣𑓂𑒩𑒧𑒼𑒠 𑒗𑒰 '𑒑𑒼𑒏𑒳𑒪'- 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒰𑒞



𑒣𑓂𑒩𑒧𑒼𑒠 𑒗𑒰 '𑒑𑒼𑒏𑒳𑒪'

𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒰𑒞

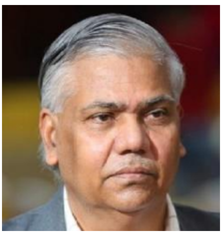
𑒒𑒩 𑒂𑒓𑒢 𑒠𑒯𑒩𑒱 𑒠𑒪𑒰𑒢
𑒑𑒰𑒕𑒲 𑒥𑒱𑒩𑒕𑒲 𑒐𑒹𑒞 𑒐𑒩𑒱𑒯𑒰𑒢
𑒣𑒼𑒐𑒻𑒩 𑒞𑒥𑒞 𑒍 𑒢𑒠𑒲𑒏 𑒞𑒰𑒢
𑒁𑒩𑓂𑒢𑒰𑒿 𑒑𑒰𑒨 𑒧𑒯𑒱𑓀𑒮𑒲𑒏 𑒥𑒟𑒰𑒢 ।
𑒠𑒐𑒥 𑒠𑒴𑒪𑒩 𑒠𑒴𑒐𑒲𑒏 𑒑𑒳𑒧𑒰𑒢
𑒬𑒰𑒢 𑒧𑓂𑒪𑒰𑒢 𑒧𑒹𑒙𑒪 𑒣𑒯𑒱𑒔𑒰𑒢
𑒑𑒰𑒧 𑒁𑒪𑒰𑒣𑒨 𑒬𑒯𑒢𑒴𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒢
𑒠𑒢𑒏𑒱 𑒢𑒯𑒪 𑒮𑒥 𑒂𑒢 𑒧𑒰𑒢।
𑒏𑒞𑒨 𑒑𑒹𑒪𑒾 𑒍 𑒧𑒪 𑒖𑒰𑒪?
𑒐𑒼𑒖 𑒣𑒴𑒕𑒰𑒩𑒲 𑒙𑒰𑒪 𑒙𑒰𑒪
𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒅𑒣𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒡𑒳𑒩 𑒥𑒼𑒪

ताँटा उयटम मिसनीक घाल।
दिन कुदिन वन कुवन
चिंता नहिं ककना कथु कान
संयणि हा कि वियणीक हुन
(धेर्य सिनहक वटय वन वन।
एक दासनाक हिणम सव एक प्राघ
वैमनस्यणाक नहिं कणो नामा निसान
धन कुवन हाथ कि मजदुन किसान
मर्यादा सवहक सदिखन एक समान।
यनंच आꣳ वहय हा उनटा वयान
शालीनता रे नहल अछि गान गान
उकटा येंचीक लागल घनगन यथान
स्वा(र्थटा म सव संबंध आ सनाकान।
उजनल हूस उयटल कुश
महल मनैयाक मूहँ दुस
ककना सँ कडा कहाँ मूस
लावान दखि चूसय लनवूस ।
यनणी यनाँ0 हल यूननका वाण
नस्फा यठा यन जनर्दस्फ घाण
सूनय कहाँ कडा ककना वाण
कहु कण आन हम गामक वाण।

-प्रमाद मा '(गाकुल', दीय,मधुवनी, (विहान)

ञपन मंत्व्य editorial.staff.videha@gmail.com **पन पठाउ।**

३.३.नाज किशोन मिश्र-पनाग



नाज किशोन मिश्र, निटायर्ड चीफ जननल मैनेजन (स्ली), वी(मुख्यालय).ञल.ञन.ञस., दिल्ली,गामञस्नन तीह -, या ञस्नन . ह्वाट, मधुवनी

पनाग

कौं ढि ञाञल कुसुमक, मूह खि लल,
रुऽ गल दखा न, ञाव मूनल किं जल।

माँ यल सौं दर्य, रुल प्रगट,
सुगंधि लल , कनैछ छटपट। -

पना ग अछि कसन पन लटकल,
मकनंद, पुष्पनज पन अछि ,अँटकल।

उयनन, सुगंधि सँ ,कनैछ मरुमरु,
चा नु दि स, पृष्यक' ,रऽ नरुल नमः ।

रि मा द्रि शृङ्ग सँ वलल यनन,
नी लगि नि सँ ,आउाग समी न,
आउाग यूनवा यछवा-,थमि थमि-,
यना ग नज लल अनि लक री ७।-

ना यु स्तूनध मा टा वह्नन-,
लऽ जा नरुल अछि यना गक सनस,
उयनन स्नयं कनैग अछि , मरु मरु-,
वनल अछि ७खन, सुगंधक धनश।

घूमि नरुल मधुमजि का ,
सुँघि यनन, प्रसून यन लुधकल,
गऽरु गऽरु-,समटि नरुल अछि ,
पृष्यनज लल अछि , व७ वकल।

खा लग सुगंधि ग मृख ,प्रसून,
वा ट गकैग नरैग अछि मधुकन,
रि नरि ना ञ्ञग चकरा उन रैग,
उागनैग नरैग अछि ,वृन्द उाकन।

गा कि नरूल अछि युर्व ञि ि ज यन,
अहूनि आ का टि नरूल शगदल,
अनूधा दय ह्र ७ग, गकन वा द,
दखा उाग अयन ललि ग किं जल।

मधूमा ठी क ठग्पा म,
मधूनमधू वनि जा ७ग, यना ग
क सि खअडालकें ॐी हूनन?
रुटल करून वि ८नी क रा ग?

यूष्यनस कँ यि वय लल,
उ७ल अवेंग अछि चि ग्र यगंग-,
जहि ना मधूकन, गहि ना ॐीह्र ,
या वि कूसूम नज ,अछि मगढ।

दखि मेी ला ७ल प्रसून ,मधूकन
वेी आ७ नरूल अछि , रुल नि ना स,
नी क लगेग नहि ठेक रुमना क,
रूल सूखा ,जा ॐठ जा हि मा स।

यि अन, यनि टूडू यूष्यक' या दय,
गि गली ,अलि म, ७कन गयसया। -

यना ग म अछि काक अनूना ग?
वसौग अछि उाद्दि म कूसूम सा द्दा ग। -

कखना सूम्रि ग का शस्ठ की ट,
वसा ग कखना लS दैठ्ठ ठी ट।
कखना नस यि वय अवैठ मधूय,
मधूसंवयक का ल मधूमा ठी चूय।

मधूनस, मूसका ळ्ळग ,वटैठ सूमन,
पूष्पद्दि सँ ,उयवन अछि मधूवन।

स्फूल नवैठ, ता लैग अछि या ग,
यवन कँ, संग दवक, ठै वा ग।

गि गली , स्मना , वि ढनी वूलय,
स्फूलक गा ठ यन, मूला मूलय।
पूष्पक' लग ,नसक' सदा वर्ग ,
न मधू, न नस लल, का ना शर्ग।

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

𑓓.𑓔.𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪- 𑒫𑒲𑒩𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒏/ 𑒮𑒰𑒫𑒢 𑒧 𑒢𑒰𑒢𑒲



𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪

𑒫𑒲𑒩𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒏/ 𑒮𑒰𑒫𑒢 𑒧 𑒢𑒰𑒢𑒲

𑓑

𑒔𑒲𑒩𑒯𑒩𑒝

𑒂𑒃𑒨𑒼 𑒧𑒰𑒕 𑒪𑒱𑒐𑒥।

𑒣𑒰𑒢 𑒂 𑒧𑒐𑒰𑒢 𑒪𑒱𑒐𑒥।

𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒏 𑒑𑒳𑒢𑒑𑒰𑒢 𑒪𑒱𑒐𑒥।

𑒂𑒃𑒨𑒼 𑒑𑒰𑓀𑒖𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒥।

𑒦𑒰𑓀𑒑 𑒂 𑒧𑒠𑒱𑒩𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒥।

𑒥𑒰𑒯𑒢 𑒂 𑒮𑒰𑒪𑒏𑒙𑓂𑒚 𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒪𑒱𑒐𑒥।

𑒂𑒃𑒨𑒼 𑒡𑒩𑒧 𑒪𑒱𑒐𑒥।

𑒕𑒪 𑒏𑒣𑒙 𑒏 𑒧𑒰𑒢 𑒪𑒱𑒐𑒥।

𑒡𑒴𑒩𑓂𑒞 𑒂 𑒥𑒪𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒏 𑒬𑒰𑒢 𑒪𑒱𑒐𑒥।

𑒂𑒃𑒨𑒼 𑒡𑒵𑒞𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩 𑒥𑒢𑒥।

भीष्म आ द्रोण क मान लिखब।

दुर्योधन आ दु:शासन क गान लिखब।

आफ्स्पा मणिपुर देखब।

आदिवासी आ दलित क नग्न देखब।

नामा द्रौपदी क चीरहरण आ बलात्कार देखब।

२

सावन मे नारी

सावन मे प्रकृति।

नृत्य खेलक नारी।।

सावन मे नारी।।

पहिल दुनियनका सारी।।

लिलार म चमकैत टिकुली

हाथ मं हरियरका चूड़ी।

कान म पायल झुमकी।

खालल कण वदनकी।

चलैत मस्त हथिनी।

मावरैत फूल यामिनी।

बरखा मं नारी।

चूअत अंग-अंग पानी।

निखरैत सौंदर्य नारी।

जीवन रस रानी।

बनैत कामिनी नारी।

रामा सावन त्यागी।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सह साहित्यकार सीतामढी।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजकिशन मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-०१ जनवरी १९६० शिक्षा- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह रासा क र वांटिया। २०२२ प्रकाशित रचना - समिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढी। स्थायी पता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढी। वर्तमान पता-पिपरा सदन,मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढी पोस्ट-चकमहिला जिला-सीतामढी राज्य-बिहार पिन-843302 मो नं-9973641075 ईमेल-ramanandmandal001@gmail.com*

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

